नेम वाणी

रचयिता

कविवर्य पं० प्रवर श्री नेमिचन्द्र जी महाराज

सम्पादक

पं० प्रवर श्रद्धेय श्री पुष्कर मुनि जी महाराज

देवेन्द्र मुनि शास्त्री, साहित्यरत्न

प्रकाशक

श्री तारक-गुरु-ग्रन्थालय पदराडा (उदयपुर)

* पुस्तक :
नेम वाणी

* लेखक
कविवर्य पं० प्रवर श्री नेमिचन्द्र जी महाराज

* सम्पादक :
पं० प्रवर श्रद्धेय श्री पुष्कर मुनि जी महाराज
देवेन्द्र मुनि शास्त्री, साहित्यरत्न

* अर्थ सहयोगी
श्री सुन्दर बाई जीवराज जी कुवाड़
मु० पो० भांवरी, जिला–पाली (मारवाड़)

* प्रकाशक
श्री तारक गुरु ग्रन्थालय, पदराडा, जिला–उदयपुर (राजस्थान)

* मूल्य : २.५० पैसे

* मुद्रक :
श्री विष्णु प्रिन्टिङ्ग प्रेस,
राजा की मण्डी, आगरा–२

समर्पण

परम श्रद्धेय सद्गुरुवर्य

महास्थविर स्वर्गीय श्री ताराचन्द्र जी महाराज

को

सादर समर्पण

विनयावनत

—पुष्कर मुनि

प्रकाशक की ओर से

●

अपने प्रेमी पाठकों के कर कमलों में नेमवाणी पुस्तक समर्पित करते हुए महती प्रसन्नता है। कविवर्य नेमिचन्द्र जी म० स्थानकवासी समाज के एक प्रतिभासम्पन्न संत कवि थे। उनका कविता साहित्य बहुत ही विस्तृत रहा है; पर अत्यन्त खेद है कि मुनि श्री अपना साहित्य स्वयं लिखते नहीं थे, जिसके कारण उनका बहुत सा कविता साहित्य आज अनुपलब्ध है।

भावुक भक्तों की ओर से उनके पद्य-साहित्य की मांग निरन्तर आ रही थी, अतः उनकी तीव्र उत्कंठा को देखकर हमने श्रमण संघ के गंभीर तत्त्वचिन्तक पण्डित प्रवर श्रद्धेय सद्गुरुवर्य श्री पुष्कर मुनि जी म. से निवेदन किया, उन्होंने हमारी प्रार्थना को सन्मान देकर महास्थविर श्रद्धेय श्री तारा चन्द्र जी म. के द्वारा संग्रहित, और सतीवृन्द व श्रावक समुदाय के पास इतस्ततः बिखरा हुआ नेम पद्य-साहित्य संकलित व सम्पादित किया, तदर्थ हम महाराज श्री के अत्यन्त आभारी हैं।

पुस्तक पर श्रद्धेय मुनि श्री जी के सुशिष्य कलम कलाधर देवेन्द्र मुनि, शास्त्री साहित्यरत्न ने महत्त्वपूर्ण भूमिका व परिशिष्ट लिखकर पुस्तक की श्री वृद्धि की है, अतः हम मुनि श्री के उपकार को भी विस्मृत नहीं हो सकते।

प्रकाशक की ओर से

●

अपने प्रेमी पाठकों के कर कमलों में 'नेमवाणी' पुस्तक समर्पित करते हुए महती प्रसन्नता है। कविवर्य नेमिचन्द्र जी म० स्थानकवासी समाज के एक प्रतिभासम्पन्न संत कवि थे। उनका कविता साहित्य बहुत ही विस्तृत रहा है, पर अत्यन्त खेद है कि मुनि श्री अपना साहित्य स्वयं लिखते नहीं थे, जिसके कारण उनका बहुत सा कविता साहित्य आज अनुपलब्ध है।

भावुक भक्तों की ओर से उनके पद्य-साहित्य की मांग निरन्तर आ रही थी, अतः उनकी तीव्र उत्कंठा को देखकर हमने श्रमण संघ के गंभीर तत्त्वचिन्तक पण्डित प्रवर श्रद्धेय सद्गुरुवर्य श्री पुष्कर मुनि जी म. से निवेदन किया, उन्होंने हमारी प्रार्थना को सम्मान देकर महास्थविर श्रद्धेय श्री तारा चन्द्र जी म के द्वारा संग्रहित, और सतीवृन्द व श्रावक समुदाय के पास इतस्ततः बिखरा हुआ नेम पद्य-साहित्य संकलित व सम्पादित किया, तदर्थ हम महाराज श्री के अत्यन्त आभारी हैं।

पुस्तक पर श्रद्धेय मुनि श्री जी के सुशिष्य कलम कलाधर देवेन्द्र मुनि, शास्त्री साहित्यरत्न ने महत्त्वपूर्ण भूमिका व परिशिष्ट लिखकर पुस्तक की श्री वृद्धि की है, अतः हम मुनि श्री के उपकार को भी विस्मृत नहीं हो सकते।

साथ ही पुस्तक को मुद्रण कला की दृष्टि से,सर्वाधिक सुन्दर बनाने में सन्माननीय न्यायमूर्ति श्री इन्द्रनाथ जी सा. मोदी ने एवं श्रीचन्द्र जी सुराना 'सरस' ने बहुत ही श्रम किया, अतः उनके प्रति हम हार्दिक आभार प्रदर्शित करते हैं।

पुस्तक के प्रकाशन हेतु धर्मानुरागिणी श्री सुन्दर बाई, धर्म-पत्नी श्री जीवराज जी कुवाड, मु० भांवरी, पाली (राजस्थान) व बगडुन्दा (मेवाड़) स्थानक वासी जैन श्रावक संघ ने क्रमशः १००१) व ७००) रुपये प्रदान किये हैं, वह उनकी उदारभावना तथा साहित्यिक अभिरुचि का स्पष्ट प्रतीक है।

शान्तिलाल जैन
मंत्री—श्री तारक गुरु ग्रन्थालय
पदराडा, उदयपुर (राजस्थान)
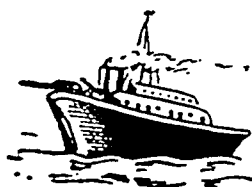
सम्पादकीय

कविवर्य पण्डित प्रवर परम श्रद्धेय श्री नेमिचन्द्र जी महाराज एक विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न सन्त रत्न थे। वे आशु कवि थे, प्रखर प्रवक्ता थे, आगम-साहित्य, धर्म और दर्शन के ज्ञाता थे, सरस-सरल व लोक-प्रिय काव्य के निर्माता थे।

लम्बा कद, श्याम वर्ण, विशाल भव्य-भाल, तेजस्वी नेत्र, प्रसन्न वदन और श्वेत परिधान से ढके हुए रूप को देखकर दर्शक प्रथम दर्शन में ही प्रभावित हो जाता था। वह ज्यों-ज्यों अधिकाधिक मुनि श्री के सम्पर्क में आता त्यों-त्यों उसे सहज सरलता, निष्कपटता, स्नेही स्वभाव, उदात्त चिन्तन व आत्मीयता की तीव्र अनुभूति होने लगती।

मुनि श्री का जन्म विक्रम सं० १९२५ के आश्विन शुक्ला चतुर्दशी को उदयपुर राज्य के वगडुन्दा मेवाड़ में हुआ था। आपके पिता का नाम देवीलाल जी लोढा और माता का नाम कमला देवी था।

बचपन से ही उनका लगाव भगवत् प्रेमियों व श्रमण-श्रमणियों से रहा, या तो प्रकृति के उन्मुक्त क्रोड में खेलना उन्हें पसन्द था या सन्तों की वाणी का सुधापान करना उन्हें प्रिय था।

मरुधर की पुण्यभूमि में स्थानकवासी जैन धर्म का प्रथम प्रचार करने वाले जैनाचार्य श्री अमरसिंह जी महाराज के षष्टम पट्टधर पूज्य श्री पुनमचन्द्र जी महाराज ग्रामानुग्राम विहार करते हुए प्रकृति की सुरम्यस्थली व वीर भूमि वगडुन्दा पधारे। पूज्य श्री के त्याग, वैराग्य से छलछलाते हुए पावन प्रवचन को सुनकर बालक नेमिचन्द्र के मन में वैराग्य का पयोधि उछालें मारने लगा। माता-पिता व परिजन से

हृदय की भावना कही, परन्तु पुत्र प्रेम के कारण उनकी आँखों से अश्रु छलक पड़े। गद्गद् कंठ से बोले—पुत्र! तुम हमारे कुलदीपक हो, कुल के आधार हो, हमें छोड़कर तुम क्यों संयम लेना चाहते हो! अनेक प्रलोभन दिखलाये, नाना प्रकार के अनुकूल और प्रतिकूल परीषह दिये, किंतु उनका वैराग्य का रंग धुंधला नहीं पड़ा। अंत में सहर्ष माता-पिता ने अनुमति दी और विक्रम सम्वत् १९४० में फाल्गुन शुक्ला ६ को बगडुन्दे में आचार्य प्रवर के पास दीक्षा ग्रहण की।

आप असाधारण मेधा के धनी थे। अपने विद्यार्थी जीवन में इकतीस हजार पद्यों को कंठस्थ कर विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया था। आचारांग, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, विपाक सूत्र आदि अनेक शास्त्र कुछ ही समय में कंठस्थ कर लिये थे और शताधिक स्तोक भी। अठाणु बोल का बासठिया को एक मुहूर्त में कंठस्थ कर लिया था।

आप आशु कवि थे। चलते-फिरते, वार्तालाप में या प्रवचन में जब कभी इच्छा होती शीघ्र ही कविता बना लेते थे। समदडी (मारवाड़) में एक बार आप विराजे हुए थे। पोष महीना था, सर्दी बहुत ही तेज थी। रात्रि में सोने के लिए बहुत सँकडा कमरा मिला। ६ साधु उसमें सोये, असावधानी से रजोहरण की दण्डी पर पैर लग गया और वह टूट गई, उसी क्षण आपने निम्न दोहा कहा—

ओरी मिल गई सांकडी, साधु सूता खट।
नेमचन्द री डांडी भांगी, बटाक देतां ही बट्ट ॥

आपकी आशु कविता के अनेक प्रसंग मुनि श्री के लघु गुरु भ्राता और मेरे गुरुदेव महास्थविर श्री ताराचन्द्र जी महाराज सुनाया करते थे।

आपने रामायण, महाभारत, गणधरचरित्र, रुक्मणीमंगल, भगवान् ऋषभदेव आदि अनेक खण्ड काव्य और महाकाव्य विभिन्न

छन्दों में बनाये, परन्तु कवि स्वयं उन्हें नहीं लिखता था जिससे आज वे अनुपलब्ध हैं, क्या ही अच्छा होता यदि वे स्वयं लिखते या अन्य से लिखवाते, तो वह बहुमूल्य साहित्य-सामग्री नष्ट नही होती।

आप प्रत्युत्पन्न मेधावी थे, जटिल से जटिल प्रश्नों का समाधान भी शीघ्रातिशीघ्र कर देते थे। आपके समाधान आगम व तर्क युक्त होते थे, यही कारण है कि गोगुन्दा, पंचभद्रा पारलू आदि अनेक स्थलों पर दया-दान के विरोधी आपसे शास्त्रार्थ आदि में परास्त होते रहे थे।

एक बार आचार्य प्रवर श्री पुनमचन्द्र जी महाराज गोगुन्दा विराज रहे थे, उस समय एक अन्य जैन सम्प्रदाय के आचार्य भी आये हुए थे, रास्ते में दोनों का मिलाप हो गया। तब उस आचार्य के शिष्य ने आचार्य श्री पुनमचन्द्र जी महाराज के लिए पूछा— 'थांने भेख पेहरयां ने कितराक बरस हुआ है" तब नेमिचन्द्र जी महाराज ने उनके पूज्य के लिए पूछा—"थांन हांग पेहरयाँ ने कितराक वरस हुआ है" यह सुनते ही वह साधु चौंक पड़ा और बोला 'यों कांई बोलो हो' तब आपने कहा—जैसा आपने हमारे आचार्य के लिए शब्दों का प्रयोग किया वैसा हमने भी किया है, आपको भाषा समिति का परिज्ञान कराने के लिए। साधु लज्जित हो गया, और भविष्य में इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग न करने के लिए कहा।

आप श्री के बड़े गुरूभ्राता श्री ज्येष्ठमल जी महाराज एक अध्यात्मयोगी सन्त थे, रात्रिभर खड़े रहकर ध्यानयोग की साधना किया करते थे जिससे उनकी वाचा सिद्ध हो गई थी और वे पंचम आरे के केवली के रूप में प्रसिद्ध थे। उनके प्रभाव से प्रभावित होकर आप भी ध्यान योग की साधना किया करते थे। ध्यानयोग की साधना से आपका आत्म-तेज इतना अधिक बढ़ गया था कि भयप्रद स्थान पर भी आप पूर्ण निर्भय होकर साधना करते थे।

एक बार आप श्री निम्बाहेडा (मेवाड़) में चातुर्मास को पधारे। वहाँ पर साहडों की ६ मंजिल की हवेली थी, वह खाली थी, महाराज

श्री ने पूछा—'यह हवेली खाली क्यों है ? इसमें रहते क्यों नही हैं ? लोगों ने वताया कि इसमें भूत है—महाराज श्री ने कहा तो बहुत ही अच्छा है, हम इसी मकान में चातुर्मास करेंगे, लोगों ने बहुत ही इन्कारी की, पर आप श्री की निर्भयता ने अन्त में विजय प्राप्त की और चार मास तक अत्यधिक आनन्द के साथ वहाँ पर विराजे, किसी को भी तनिक मात्र भी कष्ट नहीं हुआ। भ्रम का भूत भग गया।

इसी प्रकार कंबोल (मेवाड़) में मनरूपजी लक्ष्मीलालजी सोलंकी का मकान जो भयप्रद माना जाता था वहाँ पर भी चातुर्मास कर उसे भयमुक्त किया।

आपकी प्रवचन शैली अत्यधिक चित्ताकर्षक थी, आगम के गम्भीर रहस्यों को जव आप लोक भाषा में प्रस्तुत करते तव जनता झूम उठती थी। मेघ गंभीर गर्जना को सुनकर चकित हो जाती थी। दो-दो मील तअ आपकी रात्रि प्रवचन की आवाज पहुँचती थी। जब श्री कृष्ण का वर्णन करते तव का दृश्य तो अपूर्व होता था।

आपको धर्म प्रचार की दृष्टि से गाँव ही अधिक प्रिय थे। आपने अपने जीवन काल में अधिक वर्षावास गाँवों में किये थे। उन्हीं महा-पुरुप के धर्म प्रचार के कारण मेवाड़ का पर्वतीय प्रान्त गोगुन्दा, झाडोल, एवं कोटडा आदि तहसीलों के गाँवों में भी धर्म की ज्योति जगमगा रही है।

आपश्री के गुरुभ्राता थे—श्रीनवलमलजी म० श्री जेठमलजी म० श्री दयालचन्दजी म० श्री पन्नालाल जी म० श्री महास्थविर ताराचन्द जी म० और नो शिष्य थे-श्री प्यारचन्द जी म० श्री भेरूलाल जी म० श्री दौलतराम जी म० श्री हंसराज जी म० आदि।

आपश्री का विहार स्थल मेवाड़, मारवाड, मालवा, ढूंढार प्रभृति क्षेत्रों में रहा।

विक्रम सं. १९८५ का चातुर्मास आपका 'छीपा का आकोला' (मेवाड) में था। शरीर में व्याधि होने पर संलेखना पूर्वक संथारा कर कार्तिक शुक्ला पंचमी को स्वर्गवास पधारे।

नेमवाणी पुस्तक के संकलन और सम्पादन की भी एक मधुर कहानी है। जब मैं जैनइतिहास की अन्वेषणा की दृष्टि से खाण्डप, जोधपुर और पदराडा प्रभृति भण्डारों का पर्यवेक्षण कर रहा था, तब मुझे परम श्रद्धेय सद्गुरुदेव महास्थविर स्वर्गीय श्री ताराचन्द जी म० के हाथ के लिखे हुए कुछ पन्ने मिले और साथ ही कुछ साध्वियों के हाथ लिखे हुए पन्ने भी मिले जिनमें श्री नेमिचन्द्र जी म० का पद्य-साहित्य लिखा हुआ था। वह सामग्री काफी अस्तव्यस्त और बिखरी हुई थी, मेरी हार्दिक इच्छा हुई कि श्री नेमिचन्द्र जी म० का संपूर्ण कविता-साहित्य एकत्रित किया जाय, मैंने सारा साहित्य भण्डारों से एकत्रित किया और साथ ही विदुषी महासती स्वर्गीया सोहनकुंवर जी म० विदुषी महासती श्री सज्जन कुंवर जी म० और विदुषी महासती श्री शीलकुंवर जी महाराज आदि सतीजन के पास भी लिखित व मौखिक जो सामग्री थी उसे प्राप्त की। जैसा भी हो सका, सामग्री को एकस्थान पर संकलित करने का प्रयास किया, संकलन की श्रेष्ठता व ज्येष्ठता का मूल्यांकन मुझे नहीं करना है, यह कार्य तो प्रबुद्ध पाठकों का है, मुझे तो परम आह्लाद है कि मैंने अपना कार्य प्रमाणिकता के साथ किया है, उसमें मुझे सफलता मिली है।

साधना सदन
नानापेठ, पुना
ज्येष्ठ सुदी १०, सं० २०२५

—पुष्कर मुनि

नेमवाणी : एक मूल्यांकन

●

कवि विश्वात्मा का प्रतिनिधि है। वह अपूर्ण मानवता के मध्य में स्थित होकर सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का आदर्श प्रस्तुत करता है।

कवि एक सुदक्ष पर्वतारोही है, जो जीवन के उच्चतम शिखर पर आरूढ़ होकर जीवन की गति-प्रगति का विहंगावलोकन करता रहता है और देता रहता है स्वस्थ दिशा-निर्देशन ।

कवि एक कुशल नाविक की भांति समय के अथाह सागर में मानवता की पुण्य-पोत को खेता हुआ 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का जयघोष करता हुआ चलता है।

कवि भावना और भाषा का पुरोहित है। उसकी अनुभूतियाँ तीव्र होती हैं, अभिव्यक्तियाँ और भी तीव्र !

कवि पारदर्शी होता है। जीवन और जगत के आरपार देखने की अद्भुत क्षमता उसमें होती है।

कवि कमनीय कल्पनालोक में विचरण करता है, पर उसकी कल्पना में उन्मत्त मानव की अर्थहीन बकवास नहीं होती, वह जीवन के मर्म को उघाड़कर रखता है, मन की गूढ़तम वास्तविकताओं को स्पर्श करता हुआ जाता है।

कवि कर्म सिर्फ कर्म नहीं, धर्म भी है। उसकी वाणी, संस्कृति और सभ्यता की वाणी है। मानव-चेतना को प्रबुद्ध करना ही कवि कर्म की

फलश्रुति है और इस फलश्रुति को निष्पन्न होती पायेंगे आप प्रस्तुत कृति में।

कविवर्य पण्डित प्रवर श्रद्धेय मुनि श्री नेमिचन्द्र जी म. एक युग-कवि थे। उनका उदय हमारे साहित्याकाश में शारदीय चन्द्रमा की तरह हुआ। उन्होंने अपने निर्मल व्यक्तित्व और कृतित्व की शारदीय-स्निग्ध ज्योत्स्ना से साहित्य संसार को आलोकित किया—तथा दिग्दिगन्त में शुभ्र शीतल प्रभाव को विकीर्ण करते रहे। वे एक ऐसे विरले रस-सिद्ध कवियों में से थे जिन्होंने एक ही साथ अज्ञ और विज्ञ, साक्षर निरक्षर सभी को समान रूप से प्रभावित किया। उनकी रचनाओं में जहाँ पर आत्म-जागरण की स्वर लहरी झनझना रही है, वहाँ पर मानवता का नाद भी मुखरित है। जन-जन के मन में अध्यात्मवाद के नाम पर निराशा का संचार करना कवि को इष्ट नहीं है, किन्तु वह आशा और उल्लास से कर्मरिपु को परास्त करने की प्रवल-प्रेरणा देता है। पराजितों को विजय के लिए उत्प्रेरित करता है।

मुनि श्री की प्रस्तुत कृति का पारायण करने पर प्रबुद्ध पाठक को ऐसा अनुभव होने लगेगा कि वह एक ऐसे विद्युज्ज्योतित उच्च अट्टालिका के वन्द कमरे में वैठा हुआ है, दम घुट रहा है कि सहसा उसका द्वार खुल गया है और पुष्पोद्यान का शीतल मन्द सुगंधित समीर का झोंका उसमें आ रहा है, जिससे उसका दिल और दिमाग तरोताजा वन रहा है। कभी उसे गुलाव की महक का अनुभव होगा और कभी चम्पा की सुगन्ध का। कभी केतकी और केवड़ा की सौरभ का परिज्ञान होगा और कभी जाही-जूही की मादक गन्ध का।

किसी भी कृति को वुद्धि के परीक्षण प्रस्तर पर कसन के पूर्व उस युग का परिज्ञान भी अत्यावश्यक है कि किस युग में कृति का निर्माण हुआ है। प्रस्तुत कृति का निर्माण काल विक्रम सम्वत् १६४० से १६७५ के मध्य का रहा है। उस युग में निर्मित रचनाओं के साथ प्रस्तुत

कृति की तुलना करने पर स्पष्ट परिज्ञात होगा कि मुनि श्री के पद्यों में नवीनता है, मंजुलता है और साथ ही नया शब्द विन्यास भी। मुख्यतः राजस्थानी भाषा का प्रयोग करने पर भी यत्र-तत्र विशुद्ध हिन्दी व उर्दू के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। सन्त कवि होने के नाते भाषा के गज से कविता को नापने की अपेक्षा भाव के गज से नापना ही अधिक उययुक्त है।

मुनि श्री की उपलब्ध प्रायः सभी रचनाओं को सम्पादन-कला-मर्मज्ञ परम श्रद्धेय सद्गुरुवर्य श्री पुष्कर मुनि जी महाराज ने दो खण्डों में विभक्त की हैं। प्रथम खण्ड में विविध विषयों पर रचित पद हैं और द्वितीय खण्ड में चरित्र हैं।

प्रथम खण्ड में जो गीतिकाएं गई हैं उनमें कितनी ही गीतिकाएँ स्तुति परक हैं। कवि का भावुक-भक्त हृदय प्रभु के गुणों का उत्कीर्त्तन करता हुआ अघाता नहीं है, वह स्वयं तो झूम-झूम कर प्रभु के गुणों को गा ही रहा है पर अन्य भक्तों को भी प्रेरणा दे रहा है कि तुम भी प्रभु के गुणों को गाओ—

नवपद को भवियरग ध्यान घरो,
यो पनरिया यंत्र तो शुद्ध भरो....

कवि सन्त हैं, संसार की मोहमाया में भूले-भटके प्राणियों कों पथप्रदर्शन करना उनका कार्य है। वह जागृति का सन्देश देता है—कि क्यों सोये पड़े हो! उठो! जागो! और अपने कर्त्तव्य को पहचानो! कवि के शब्दों में ही देखिए—जागृति का सन्देश :—

कुरग जाणे काल का दिन की
या दिन की, तन की धन की रे....
एक दिन में देव निपजाई
या द्वारापुरी कंचन की रे....

अभिमान का काला नाग जिसे डस जाता है वह स्वरूप को भूल जाता है और पर रूप में रमण करने लगता है, कवि उसे फटकारता हुआ कह रहा है—

मिजाजी ढोला, टेढ़ा क्यों चालो चकिया मान में :
मदिरा का झोला,
जैसे तू आयो रे तोफान में ॥
टेढ़ी पगड़ी बंट के जकडी
ढके कान एक आंख।
पटा बंक सा बिच्छु डङ्क सा
रहा दर्पण में मुख झांक ॥

आगमिक-तात्त्विक बातों को भी कवि ने अत्यधिक सरल भाषा में संगीत के रूप में प्रस्तुत किया है।

भाव नौकरी, क्षमा माता शीतला, वैराग्योत्पत्ति के कारण, भरत-पच्चीसी, प्रभृति रचनाएं भी आगम के रहस्यों को अभिव्यंजित करती हैं।

कवि मानवता का पुजारी है। मानवता के विरोधियों पर उसकी वाणी अवश्य ही अंगार बनकर बरसी है। निह्नव भावना, सप्तढालिया शीर्षक रचना मुनि श्री की एक आलोचनात्मक कृति है। अनाचार की धुरी को तोड़ने के लिए और युग की तह में छिपी हुई बुराइयों को नष्ट करने के लिए उनका दिल क्रान्ति से उद्वेलित हो उठा है। वे विद्रोह के स्वर में बोले हैं, उनकी कमजोरियों पर तीखे बाण कसे हैं, और साथ ही अहिंसा की गम्भीर मीमांसा प्रस्तुत की हैं।

मैं एक बात प्रबुद्ध पाठकों से नम्र निवेदन करना चाहूँगा कि प्रस्तुत कृति को पढ़कर भड़कें नही, जोश और रोप में होश को खोये नहीं, किन्तु शान्त मस्तिष्क से इसका अध्ययन करें और साथ ही उस युग का

अध्ययन करें जिस वाद-विवाद के युग में तत्वबोध के लिए इसक
निर्माण हुआ था।

आज का युग संगठन का युग है, चारों ओर संगठन की स्व
लहरी मुखरित है, एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय के सन्निकट आ रह
है। ऐसे समय इस कृति को प्रकाश में न लाई जाय, ऐसा परम श्रद्धे
सद्गुरुदेव का विचार था, परन्तु जैन समाज के एक वरिष्ठ विचार
सन्त का यह सुझाव मिला कि इस प्रकार की आलोचनात्मक कृतिय
को प्रकाश में न लाई जायगी तो बहुत से ऐतिहासिक सत्य-तथ्
अन्धकाराच्छन्न हो जायेंगे। उनके सुझाव को सम्मान देकर ही इसे
पुस्तक में स्थान दिया गया है, इतिहास के प्रेमी इसमें सत्य तथ्य की
अन्वेषणा करें।

चरित्र-खण्ड में जैन इतिहास की अनेक प्रेरणाप्रद कथाएं हैं।
मरुधरधरा में सर्वप्रथम स्थानकवासी जैन धर्म का प्रचार करने वाले
आचार्य प्रवर श्री अमरसिंह जी महाराज का भी संक्षिप्त चरित्र है।

सम्पादन करते समय जितनी रचनाएं मुनि श्री को उपलब्ध हो
सकी थीं उनको पुस्तक में स्थान दिया गया है, उसके बाद भी अनेक
रचनाएं उपलब्ध हुई हैं, जो पुस्तक में स्थान प्राप्त नहीं कर सकी हैं।

श्रद्धेय सद्गुरुवर्य ने इस संकलन को तैयार करने में बहुत ही
श्रम किया है, अनेकों भण्डारों को निहारा है, अनेक साधु-सतियों व
श्रावकों से सामग्री उपलब्ध की। इस प्रकार एक अज्ञात जैन सन्त
कवि को प्रकाश में लाया है। मैं श्रद्धेय गुरुदेव श्री का अभिनन्दन
करता हूँ कि जिन्होंने सरस्वती के सुन्दर सदन में ऐसा अनमोल उपहार
अर्पित किया है।

व० स्थानकवासी जैन स्थानक
दादर, बम्बई–२८
८–१–६८

— देवेन्द्र मुनि

नेम वाणी

गणधर गौतम

तर्ज : ख्याल

गणपति दून्दाला थानें मनाऊँ गौतम देवता।
द्वादशांगी सूंडाला नरपति सुरपति थांने सेवता ॥टेर॥

महादेव मोटा महावीरजी, धर्म तात ठहराया।
गवरी जबरी अम्मा तुमची, जिन वाणी सुत जाया।
जिन वाणी सुत जाया कि–जिण से जागिया।
मोह निद्रा से ऊठ भूठ, सब त्यागिया ॥गणपति० ॥१

प्रथम संघेण संठाण विराजे, सात हाथ तनु सोहे।
फून्दफून्दाला रूपरूपाला, सुर नर रा मन मोहे।
सुर नर रा मन मोहे के, जगमग दीपता।
पाखण्डी सुर नर जिण से, कोई नहीं जीपता ॥गणपति० ॥२

ग्यारा गणपति चवदे सहस्र मुनि, सबमें शिरोमणि आप।
श्रीमुख भगवइ भाषिया सरे, दिन दिन चढत प्रताप।
दिन दिन चढत प्रताप के, लब्धि भण्डार हो।
अष्ट सिद्धि नव निधि, बुद्धि के दातार हो ॥गणपति० ॥३

मंगलाचरण प्रथम विनायक, मैं सिमर्यो गण ईश।
सुख सम्पत्ति आनन्द वर्तावे, शान्ति करो जगदीश।
शान्ति करो जगदीश के, मैं शरणे आवियो।
रिख नेमिचन्द ने तो, गजानन ऐसो गावियो ।।गणपति० ।।४

अमरसिंघाडे पूज्य पुनम गुरु, मैं भेटचा बड भाग।
उगणींसे सतसठे आषाढू, नागोरचा के बाग।
नागोरचा के बाग, भीलाडे आविया।
दरिखाने धारिवाडों के, चौमासा ठाविया ।।गणपति० ।।५[1]

---

१. भगवती सूत्र शतक. १, उद्देशक १ के आधार से।
(ख) त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित्र पर्व १० सर्ग ५ के आधार से।

शान्तिनाथ

तर्ज : सेवो श्री रिष्टनेम । ज्यां घर वर्ते कुशलजी क्षेम

शान्ति शान्ति करे । जो एक चित्तसे प्रभु ने सिमरे ।
ज्यांरा विघन हरे । सोलमाँ जिनजी रो ध्यान धरे ।।टेर।।

मेघरथ राजा हुवा परभव माय ।
पारे वाने साता दीधी जिन राय ।।शा०।।१

संजमाले प्रभु करणी कीध ।
सुखे पधारचा प्रभु स्वार्थ सिध।।२

त्यांथी चवि हत्थिनापुर आय ।
विश्वसेन राजा अचलादेवी माय ।।३

आगे हुंतो कुरु देश मझार ।
मृगी मार सुंदुःखी हुवा नर नार ।।४

मृगी आवे ने लोग पट मर जाय ।
अनेक मरचां री गिणति न थाय ।।५

यंत्र मंत्र राजा करे रे उपाय ।
देव धोक्या तो ही दुःख नहीं जाय ।।६

दवा न लागे राजा थयो रे उदास ।
इतरे महाराणी रे आयो तीजोजी मास ।।७

डोलो उपनो ने राणी करे रे विचार ।
साता वर्तावूं हूँ तो सगले संसार ॥८

राजा पूछ्यो राणी कहीं सब बात ।
जाण्यों पुण्यवन्त पुत्र साख्यात ॥९

परीक्षा करण राजा कलवाणो कीध ।
पाया साता हुई बात परसिद्ध ॥१०

लोक आवे जद गुटकी ले जाय ।
पावे जरे सुख साता जी थाय ॥११

इम करतां हुवा सवा नव मास ।
जगन्नाथ जन्मिया हुवो रे प्रकाश ॥१२

महोत्सव कियो चोसट इन्द्रज आय ।
प्रभु को स्नान जल लियो सुरराय ॥१३

छाँटा नाख्या देव गाम गाम जाय ।
साता हुई सारा देश रे माय ॥१४

लोक हरख्या सब देवे आशीश ।
भलो जन्मियो शान्तिकरण जगदीश ॥१५

सब लोक री साख राजा कहे एम ।
इण पुत्र सु' हुवा म्हारे कुशल ने क्षेम ॥१६

गुण निष्पन्न नाम दियो सब साथ ।
शान्ति वर्ताई जिणसु' दियो शान्तिनाथ ॥१७

वालपणा में माता लाड लडाय ।
रतना रे पालणे झूले जिनराय ॥१८

जोवन में परणिया राजकुमार ।
एक लाख राणियाँ बाणु हजार ॥१९

कुँवर हुवा ज्याँरे डेढ करोड ।
संजय लियो प्रभु सगलां ने छोड ॥२०

षट् पदवी पाई आउखो वर्षज लाख ।
मुगति पधारिया ज्यांरी सूत्र में साख ॥२१

डोला तणो यहाँ भाष्यो अधिकार ।
सज्झाय बधन नहीं कियो विस्तार ॥२२

तिण सुं डोला रो स्तवन दीधो जी नाम ।
गावे जिको पावे सुख आराम ॥२३

पूज्यजी पुनमचंदजी रे प्रशाद ।
रिख नेमिचंद किया प्रभुजी ने याद ॥२४

समत उगणोसे साठे सुखदाय ।
चौमासो कियो शहर जालोर रे माय ॥२५

नित्य ऊठ स्तवन गिणे जो प्रभात ।
आनन्द मंगल ज्यांरे सुख संगात ॥२६[1]

---

१. (क) त्रिषष्ठिशलाका पुरुष चरित्र; आचार्य हेमचन्द्र के आधार से ।
(ख) शान्तिनाथ चरित्र के आधार से ।

पनरिया यंत्र में नवपद-स्तुति

पनरिया यंत्र

९	१	६
३	५	७
४	८	२

राग : नाम जपो श्री जिन रुडो

नवपद को भवियण ध्यान धरो ,
यो पनरियो यंत्र तो शुद्ध भरो ।।टेर।।

शासनपति अरु सद्गुरु ध्यावूं, पनरियो यंत्र नव पद गावूं ।
जिनवाणी अक्खर दो सखरो । नवपद को भवियण… ।।१

चारित्र अष्टम पद परखो, पहले पद अरिहंत निरखो ।
छठ्ठे पद ज्ञान सदा सिमरो । नवपद को भवियण… ।।२

आचारज तीजे पद सोहे, पंचमे पद साधु मन मोहे ।
सातमें दर्शन शुद्ध करो । नवपद को भवियण… ।।३

चौथे पद नमो उवज्झाया, नवमें पद करो तप मन च्हाया।
दूजे पद सिद्ध वेग वरो। नवपद को भवियण··· ॥४

इण पर जाप जपे जग में, घर बैठा भूप पडे पग में।
परदेश भटकताँ काँई फिरो। नवकार को भवियण··· ।५

आ दुश्मन दूर से पाय पड़े, वलि भूत प्रेत तो नाहिं अड़े।
तो विषम स्थान सु काँई डरो। नवपद को भवियण·· ॥७

रोग शोग आदि संकट चूरे, वलि सर्पादिक विष जाय दूरे।
लक्ष्मी बढे वलि विघन हरो। नवपद को भवियण... ॥८

यो अष्टक नेम मुनि ने कह्यो, जो प्रात पढे ज्याँरो कष्ट गयो।
श्री पूज्य पुनम परशाद तरो। नवपद को भवियण··· ॥९

चैत्र आसोज सुद सातम ने, नव आयम्बिल पूरे पुनम ने।
साढे चार वर्ष लग तप करो। नवपद को भवियण··· ॥१०

नव आयम्बिल ओली शुद्ध कियाँ, श्रीपाल भूप का कोढ गया।
सब जाप जपो इण नव पद रो। नवपद को भवियण··· ॥११[1]

---

१. श्रीपाल चरित्र के आधार से

पनरिया यंत्र में पंचपद-स्तुति

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

राग : पूर्ववत्

लेवो पनरिया यंत्र पंच पद शरणा ।
यह पच्चीस कोठा इण परभरणा ॥टेर

अरिहन्त सिद्ध ने आयरिया, उवज्झाय साधु सब तिरिया ।
पहली ओली इण विध करणा । लेवो पनरिया० ॥१

आचार्य वलि है उवज्झाया, साधु अरिहन्त सिद्ध पद पाया ।
यह दूजी ओली में चित्त धरणा । लेवो पनरिया० ॥२

साधु अरिहन्त सिद्ध ध्यावो, आचार्य उपाध्याय रा गुण गावो ।
तीजी ओली में यही वरणा । लेवो पनरिया० ॥३

सिद्ध आचारज भजे तो नफो, उपाध्याय साधु अरिहन्त जपो ।
चौथी ओली रा करो निरणा । लेवो पनरिया० ॥४

उपाध्याय साधु अरिहन्ता, नमो सिद्ध आचार्य गुणवन्ता ।
यह पंचमी ओली तो सिमरणा । लेवो पनरिया० ॥५

इण यंत्र उपर गिणे नवकारो, पूरण एक सो अठवारो ।
ज्यारा दुःख तो सारा दूर हरणा । लेवो पनरिया० ॥६

चोट मुट्ठ दुट्ठ नहीं लागे, वलि वैरी निन्दक दूरा भागे ।
अनड आय भेटे चरणा । लेवो पनरिया० ॥७

यह ध्यान धरे ज्यारे पूठे, सरस्वती ज्ञान लक्ष्मी टूटे ।
फिर इह भव पर भव दो ही तिरणा । लेवो पनरिया० ॥८

मुनि नेम पुनम परशाद भणे, इण यंत्र उपर नवकार गुणे ।
यह मंत्र बड़ा मंगल करणा । लेवो पनरिया० ॥९

अरिहन्त उज्ज्वल वलि सिद्ध राता, आचार्य पीला है धर्मदाता ।
उपाध्याय कह्या नीले वरणा । लेवो पनरिया० ॥१०

साधु ने श्याम वरण भाखे, इण बात रा ग्रन्थ केई साखे ।
पंच वर्ण का ध्यान धरणा, लेवो पनरिया० ॥११[1]

---

१. श्रीपाल चरित्र के आधार से

पैंसटिया यंत्र में जिन-स्तुति

१	१८	२१	२	२३
१९	१६	९	१४	७
२०	११	१३	१५	६
२२	१२	१७	१०	४
३	८	५	२४	२५

राग : सवैया

ऋषभ ने अर्हनाथ, नमि रु अजित जिन।
पार्श्व मल्ली शान्ति प्रभु, जग साताकारी है ।।
सुविधि अनन्त प्रभु, सुपार्श्व मुनि सुव्रत।
श्रेयांस विमल विभु, धर्म धर्म धारी है ।।
पद्मप्रभुरिष्ट नेमि, वासुपूज्य कुन्थुस्वामी।
शीतल अभिनन्दन, मुक्ति के दातारी है ।।
शंभव है चन्द्रप्रभ, सुमति श्री वर्धमान।
पच्चीसवाँ गौतमजी, गुण के भण्डारी है ।।

सवैयो सवायो कीनो, नेमिचन्द्र रच दीनो।
पैंसटिया यंत्र यांहि, चौबीसी तो सारी है ॥१[1]

१. चतुर्विंशति स्तव० (ख) भगवती० श० २, उ० ८

चौवीस जिन का वर्ण-वर्णन

राग : चौपाई की

पद्म प्रभु वासु पूज्य दोय।
राते वर्णे शोभे सोय ॥१
चन्द्रप्रभु ने सुविधि नाथ।
उज्जल वर्णे जिन विख्यात ॥२
मल्लीनाथ ने पार्श्वनाथ।
नीले वर्णे जोडूं हाथ ॥३
मुनि सुव्रत ने नेमिनाथ।
अंजन वर्णे दो साख्यात ॥४
सोले कंचन वर्णां गात।
चौवीस जिन प्रणमूं प्रभात ॥५
नेम भणे पुनम परशाद।
उदियापुर जिन कीना याद ॥६[1]

---

१. भगवती शतक० २, उ० ८

अष्टोत्तरशत गुण वर्णन

राग : पूर्ववत्

बारे गुण अरिहन्ता रा जाण ।
सिद्ध रा गुण तो आठ बखाण ॥१

आचारज रा गुण छत्तीस ।
उपाध्याय रा गुण पच्चीस ॥२

साधु गुण सत्तावीस धारा ।
प्रणमूं मैं तो वारम्वार ॥३

अष्टोत्तर शत गुण तो गणिया ।
माला रा हो इतरा ही मणिया ॥४

नेम भणे पुनम परताप ।
म्हारे पंच परमेष्टी आप ॥५

सीमन्धर-स्वामी के गुण

राग : सुख कारण भवियण

जय सीमन्धर-स्वामी, शिव सुख रा दातार ।
पुक्खलावती विजय, पूर्व विदेह मझार ॥१

पुंडरिगिणी नगरी, श्रेयांस नाम भूपार ।
ज्यांरे सत्य की राणी, स्वप्न लिया दसचार ॥२

कुन्थु अर जिन अन्तर, सीमन्धर जी जाया ।
बालकवय मूकी, यौवन वय में आया ॥३

मात तात प्रसन्न हो, रुक्मणी ने परणावे ।
भौतिक सुख भोगी, संजम लेन उमावे ॥४

मुनि सुव्रत नमि अन्तर, दीक्षा लीनी आप ।
केवल वली पाम्या, घातिक कर्म ने काप ॥५

चौरासी लख पूर्व, आयुष्य जिन नो जाण ।
वृषभ वर लंछन, शोभा अधिक वखाण ॥६

गणधर चोरासी, मुनिवर तो सो क्रोड ।
वली तीन भवन में, कुण करे ज्यांरी होड ॥७

दश लाख केवली, प्रभुजी रो परिवार ।
लोकालोक रा, जाणे सभी विचार ॥८

उदय पेढाल जिनवारे, पावे पद निर्वाण ।
पूज्य अमर सिंघाड़े, पूज्य पुनम गुरु जाण ॥९

उगणीसे पचासे, कात्तिक मास मझार ।
शहर उदियापुर में, भणे नेम अणगार ॥१०

ऋषभदेव को उपालम्भ

तर्ज : लाल केसिया की

केशर वरणा-आयो-आयो थांरे दरबार रे वाला,
हाथ जोड़ी करूँ विनति रे लो।
केशर वरणा-जाण्यो जाण्यो थारो स्वरूप रे वाला,
सद्‌गुरु जगायो मोह निन्द थी रे लो ।।टेर।।

केशर वरणा थारे म्हारे घणा भवाँ री प्रीत रे बाला,
बालपणा में आपां भेला खेलता रे लो।
केशर वरणा कदीयक हुवा तात ने मात रे बाला,
कदीयक मंत्री बरा बागाँ टेलता रे लो ।।१

केशर वरणा कदीयक हुवा मामा ने भाणेज रे बाला,
कदीयक नानी मा लाड लडावता रे लो।
केशर वरणा कदीयक सासु सुसर देवर जेठ रे वाला,
कदीयक साला साढु लाडु खावता रे लो ।।२

केशर वरणा सर्व सगपन तो किया अनंति वार रे वाला,
प्रीतडली वन्धाणी ताणी न टूटती रे लो।

केशर वरणा घणा किधा ऐश आराम रे वाला,
बिच्छडता आंसुडा री धारा छूटती रे लो ॥३

केशर वरणा एक घडी री पाले जग में प्रीत रे वाला,
थारे ने म्हारे भवभव री दोसती रे लो।
केशर वरणा समर्थ धारे तो सारे सेवक काज रे वाला,
नहीं रे बिगाडे जरा रोशती रे लो ॥४

केशर वरणा नेडो तांतो दीधो थे तो तोड रे वाला,
याद आवे ज्युं खटके कालजे रे लो।
केशर वरणा ओलम्बडे मत खीजे म्हारा नाथ रे वाला,
महर करी ने सामो नालजे रे लो ॥५

केशर वरणा बिना मिल्या गया मुझ ने छोड रे वाला,
मुगति में जाता नहीं पल्लो झालतो रे लो।
केशर वरणा आडो फिर नहीं देतो अन्तराय रे वाला,
भव थिति पकती तो संग चालतो रे लो ॥६

केशर वरणा खैर करी म्हारे दूजो न आवे दाय रे वाला,
हुवो न्यारो तो ही प्यारो लागे तू धणी रे लो।
केशर वरणा इम छीटकाई थै तो निकल्या रे वाला,
हिवडा सुं निकलो तो जाणु तो भणी रे लो ॥७

केशर वरणा मैं पण अब नहीं छोडूं थारो लार रे वाला,
तजिया रे घर मिलवा थारे कारणे रे लो।

केशर वरणा छोड्या छोड्या सर्व परिवार रे वाला,
धायो रे उमायो थारे बारणे रे लो ॥८

केशर वरणा आई आई अमावश री रात रे वाला,
केवल नहीं रे पंचमकाल में रे लो।
केशर वरणा दिन उगा तो मिलशु तुझ ने आयरे वाला,
अब नहीं पडशां जग जंजाल में रे लो ॥९

केशर वरणा मार्ग बताओ पूज्य पुनम महाराज रे वाला,
आय खडो रे माणक चौक में रे लो।
केशर वरणा नेमिचन्द नहीं मांगे धन माल रे वाला,
सगलो ही भर पायो मेलो मोक्ख में लो ॥१०

राजमती का उत्तर

तर्ज : तंदूरे के भजन की

कैसे मुरझाई, देखत वर कारो ए, कैसे० ॥टेर॥

कारो कारो मत कर सहियर, कारो मोहनगारो ए।
इन्द्रों से भी अधिको दीपे,
लक्षण सोहे तन अठ एक हजारो ए। कैसे० ॥१

एक गयो तो जाणदे राजुल, जग में लख भरतारो ए।
धीरज धरिये चिन्ता न करिये,
और परणांसा गढपति सरदारो ए। कैसे० ॥२

भोली सहियर भेद न जाणे, जादव कुल सिनगारो ए।
क्रोडाँ तारा मिल जोत प्रकाशे,
एक न तुले कोई चन्द रो उजियारो ए। कैसे० ॥३

संग सात से भई सहेलियाँ, लीधो संजम भारो ए।
रिख नेमिचन्द कहे गई गुफा में,
प्रतिबोध्यो रहनेम अनगारो ए। कैसे० ॥४

मुनि सुव्रत स्वामी

राग : हो नाथजी

हो नाथजी शरण तुम्हारे आवियो,
मन भावियो, चित्त चाहवियो ॥

मुनि सुव्रतजी स्वामी, मैं तो आयो मेरे काम,
सदा रहूँ तेरे धाम, मोरा नाथजी ॥टेर॥

हो नाथजी, दौड़त दौड़त धामियो,
मोक्ष पामियो, नीठ गामियो ।
पोमावइ नो अवतार, सुमति नृप नो कुमार,
म्हारा प्राण रा आधार, मोरा नाथजी ॥१

हो नाथजी, द्वार खड़ो अरजी करूँ,
पलो पातरूँ, खोलो भरूं ।
गुनाह करो बक्सीस, नहीं करूं मैं पापिस,
हुकम चढावूंगो शीश मोरा नाथजी ॥२

हो नाथजी नाम से ग्रह संकट टरे,
शनि दशा हरे, सम्पत करे ।

शरण सेवक है खास, दुष्ट कर्म जाय नाश,

देवे शिवपुर वास मोरा नाथजी ॥३

हो नाथजी, नेमिचन्द शरणे थायरे,

तूं धणी म्हायरे, मेरी चाह हरे।

प्रभुजी रखो मेरी लाज, पूज्य पुनम महाराज,

पन्ना जैसा संजम साज मोरा नाथजी ॥४

पार्श्वनाथ-स्तुति

राग : आशावरी

नाथ कैसे नागिनी नाग बचायो ।
म्हांने योही अचम्भो आयो ।। टेर ।।

तापस नियाणो करने मर्यो, कमठासुर पद पायो ।
पार्श्व प्रभु पण संजम लीनो, वन खण्ड ध्यान लगायो ।।१

वैर चितारी कमठासुर आयो, नवघन जल वरसायो ।
प्रभु नासा तांई नदियां आई, रोम न एक चलायो ।।२

प्रगट भई धरेन्द्र पद्मावती, सप्त फण छत्र धरायो ।
कमठ आयो अपराध खमायो, नाटक देव रचायो ।।३

केवल ले प्रभु मोक्ष सिधाया, शरणे नेमिचन्द आयो ।
तो सम मुझको करदो स्वामी, तो सगलो ही भर पायो ।।४

गुण स्थानों की मार्गणा

राग : अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी

इण पर जीवडो रे गुण ठाणे फिरे ॥ टेर ॥

प्रथम गुण स्थाने रे मारग चार कह्या,
तीन चार पंच सातो रे।
गुण ठाणे दूजे रे मारग एक छे,
पडतां पैले मिथ्यातो रे ॥१

गुण ठाणे तीजे रे रस्ता चार छे,
पड़े तो पेले आवे रे।
चढे तो चौथे के वलि पांचमें,
सातवें उत्कृष्ट जावे रे ॥२

गुण ठाणे चौथे रे पन्थ पांच छे,
प्रथम रु दूजे तीजे रे।
चढे तो पंचमें के वलि सातमें,
पंच पंचम रा सुण लीजे रे ॥३

श्रावक पड्यां थी मिथ्यात्वी हुवे,
के दूजे तीजे के चौथे रे।
चढे तो जावे रे सीधो सातमें,
जो भाव रहे शुद्ध पोते रे ॥४

खट् में खट् दरवाजा दाखिया,
पड़े तो पेले के पांचे रे।
चढे तो जावे रे अप्पमय सातमें,
भावना आगे खांचे रे ॥५

सात में तीन रे चढे तो आठ में,
पड़े तो चौथे के छट्ठे रे।
आठ में चढे तो नवमें जाण जो,
चार सात वलि घट्टे रे ॥६

नव में तीन रे चढे तो दायको,
पड़े तो चौथे के आठे रे।
चार मार्गणा रे दशमा नो कही,
कर्म बांधे केई काटे रे ॥७

दो निस्सरणी रे चढवा नी सही,
उपशम क्षयोपशम श्रेणो रे।
पड़े तो नवमे के चौथे आवसी,
वे सत्य श्रद्धे जिन वेणो रे ॥८

काल करे जो रे गुण ठाणे ग्यारवें,
तो अनुत्तर विमाने मेले रे ।
निश्चय पडवो रे चढवो है नहीं,
पड़े तो खट् दश पेहले ॥९

पड़े न बारवें जावे तेरहवें,
तेरे सुं चवदमें जावे रे ।
चवदमें गुण ठाणे रस्तो छे नहीं,
सिधो सिद्ध पुर सिद्धावे ॥१०

उन्नीसे तिहोत्तर माह वदी अष्टमी,
पूज्य पुनम परशादो रे ।
दूधांरे वाडे रे नेम पन्ना मुनि,
करीया मार्गणा यादो रे ॥११

भाव नौकरी

दोहा

शासनपति प्रणमी करी, सद् गुरु के प्रसाद ।
भाव नौकरी मैं रचूं, चतुरा लागे स्वाद ॥१

हलकारो समदृष्टि है, श्रावक सेणो कणवार ।
सुगुरु मुसुद्दी आकरा, कामदार सरकार ॥२

गणच्छेदक हाकिम बड़ा, प्रोहित उपाध्याय ।
गणधरजी दिवान है, राजा श्री जिनराय ॥३

पंचेन्द्री जोवन पणें, चेतन करे विचार ।
करूं नौकरी जिन तणी, जिम उतरूं भव पार ॥४

हलकारा सुं मिल्यो प्रथम, सेहणो दियो वताय ।
कणवारियो कामदार ने, चेतन दियो मिलाय ॥५

राग : ख्याल की

चेतन कहे कर जोड़ ने सरे, सुणो मेरी अरदास ।
कामदार जिनवर तणा सरे, आप तणो विश्वास रे ॥१

सत्गुरु मुसुद्दी अब तो लगादो जिनकी नोकरी ।
मुझको प्रति बोधी, खर्ची बंधाइदो जावण मोक्षरी ॥ टेर ॥

काल अनन्ता हो गया सरे, कर्जा बढा अपार ।
खर्चा को लेखो नहीं सरे, नफा न दीसे लगार रे ॥सत्०॥२

अति मेंगाई घर में तंगाई, अर्ज करूँ तुम साथ ।
दरबार सु कुण मिलण देवे, बात मुसुद्दी हाथ ॥सत्०॥३

कामदार सत् गुरुजी बोल्या, तू नादानी बाल ।
उमेदवारी में रहो तुम चेतन, परखां थांरी चाल रे ॥४

सुण चेतन तेरी पीछे करायदा तनख्वाह आकरी ।
तुम मानो मेरी करजो तन मन से सुधी चाकरी ॥ टेर ॥

हुकम सुणी मुसुद्दी केरो, चेतन भयो खुशाल ।
सुणे बखाण सामायिक पाटी, सीखे बोलने चाल रे ॥सुण०॥५

जब हलकारो थापियो सरे, लिधो है समकित सार ।
विशेष लगन से श्रावक कर के, थाप्यो सेणो कणवार रे ॥सु०॥६

कामदार जाण्यो चेतन ने, कांइक तरक्की पाई ।
पांच दस को महिनो कीनो, करोइक मुहूर्त्त समाई रे ॥सु०॥७

तंगाई मिटती नहीं देखी तब, रोजगार बढावे ।
तीस को महिनो कर दीनो एक, मुहुर्त्त नित्य का ठावे रे ॥सु०॥८

अहोनिश मुहूर्त्त का है जिसमें, व्रत का एक कमाया ।
उगणीस मुहूर्त्त अव्रत केरा, खर्च में काल गमाया रे ॥सु०॥९

खर्च गुणतिस को पैदा एक की, काम किसी विध चाले ।
कर्म लेणायत हुवा आकरा, देणो किस विध पाले रे ।।सु०।।१०

यों तो पार पड़े नहीं मेरे, अब और करो उपाय ।
कहे मुसुद्दी संजम ले लो, सारो खर्च मिट जाय रे ।।सु०।।११

नवो खर्च संजम सुं रुकसी, जो देणो पेला को बाकी ।
सो तप करनें सभी चुका दो, तो रे जावे तुम नाकी रे ।।सु०।।१२

कहे चेतन मैं वाही कर सुं, नहीं लोपूं तुमची कार ।
खर्च मिटा दो कर्ज चुका कर, जिमतिम करदो पार ।।सु०।।१३

बोले गुरुजी सुण रे चेतन, काम संजम को भारी ।
मेण दांत लोह चणा चाबणा, सीखो नीति हमारी रे ।।सु०।।१४

कहे चेतन रीति सब जाणूं, हुक्म करो जिम चालूं ।
घणो घबराणो मार्ग आणो, आज्ञा जिनेन्द्र की पालूं रे ।।१५

हुलसाणो म्हैं तो अब तो मुझ मिलसी पदवी मोट की ।
हुवो सफलज आणो आशा लग रही है शिवपुर कोट की ।। टेर ।।

कामदार हाकिम ने पूछे, उणने प्रधान बताया ।
वो दरबार को मालूम किनी, उणने हुकम लगाया रे ।।१६

अहो उत्तम प्राणी अब तो सुधरेगी तेरी आतमा ।
परणो शिवराणी होसी पदवी धर तू परमातमा ।। टेर ।।

रोम रोम हुलस्यो सुण चेतन, लिनो संजम भार ।
गुरु भक्ति करणी शुद्ध करता, भरियो ज्ञान भण्डार रे ।।हु०।।१७

अनेक शास्त्रों के रहस्य को जाणी, कामदार पद पायो ।
प्रसिद्ध जस फैल्यो मुलकों में, शिष्य परिवार बढायो रे ।।हु०।।१८

अब आई हाकिमी गणावच्छेदक री, हुवा सिंघाडे में करता ।
धीर गंभीर ज्ञान के दाता, उपाध्याय पद धरता रे ।।हुल०।।१९

चार संघ मिल ने जब थापें, आचारज के पाट ।
भए पूज्य प्रधान की पदवी, खूब लगाया ठाठ रे ।।हुल०।।२०

वीस स्थानक सेवें जद चेतन, पहुँचे देव विमान ।
चव तीर्थंकर होवे जिनकी, तीन लोक में आण रे ।।हुल०।।२१

सब से मोटी पदवी यह तो, खुब जुडे दरबार ।
इण रीतें दरजो चढ चेतन, हुवो सिद्ध श्रीकार रे ।।हुल०।।२२

द्रव्य नौकरी करी अनन्ती, गरज सरी न लगार ।
भाव नौकरी जो करे तो, करदे बेड़ा पार रे ।।हुल०।।२३

ये भाव नौकरी गुरु कृपा से, रिख नेमिचन्द किनी ।
पूज्य पुनम महाराज मया कर, यह पदवी मुझ दिनी रे ।।हुल०।।२४

उगणीसे छासठ चौमासो, शहर जयपुर में ठाया ।
पूज्य अमरसिंघजी के सिंघाड़े, आनन्द रंग वर्षाया ।।हुल०।।२५

क्षमा माता शीतला

राग : ख्याल

म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता या पूजूं शीतला ।। टेर ।।

तो सम शीतल नहीं कोई जग में, सब जग वल्लभकारी ।
अरिहन्त तुझने आदरी स तूं, सदा सुहागण सिंणगारी है ।।
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता पूजूं शीतला ।।१

थारे माथा में नेम महमद मुकट है, धीरज रखड़ी सोहे ।
सुमन बोर थारे मोत्या जड़ियो, सुरनर ना मन मोहे है ।।
म्हारो भाव भवानी क्षम्या माता पूजूं शीतला ।।२

श्रुत दर्शन कुंडल दो कानें, नियम की नथडी भटके ।
नीलवट टीको है तपस्या को, विजली ज्यूं तन चमके है ।।
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता पूजूं शीतला ।।३

किरिया काजल सारचो है माता, सुबुद्धि बिंदली भालो ।
ब्रह्मचर्य तिमण्यो हीरा जडचो, थारे गले पानडी वालो है ।।
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता पूजूं शीतला ।।४

चुडो है चित्त उजलो स माता, बुध बाजुबन्ध भारी ।
ज्ञान गुजरी सोवन जडी थारे, चूडी की छवि न्यारी ।।
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता पूजूं शीतला ।।५

व्रत विंटी हथपान विराजे, नवतत्त्व नवसर हार।
नववाड नेउर नें कड़ियाँ, पाय झाँझर झणकार है ॥
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता ए पूजूं शीतला ॥६

पंच महाव्रत को कांचवो स थारे, जड़ी को रचो है फेर।
शील दिखणी को चीर जगामग, तिगुण घाघरा रो घेर है ॥
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता ए पूजूं शीतला ॥७

सम्यक्त्व रंग की मेंहदी है राची, थारा रूप तणो नहीं पार।
मद्दव रूप खर को असवारी, खूब किया सिणगार है ॥
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता ए पूजूं शीतला ॥८

दान[१] शीयल[२] तप[३] भावना[४] सरे, देव[५] गुरू[६] ने धर्म[७]।
शील सातम ये सातों पूजियां, तूटे आठों ही कर्म है ॥
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता ए पूजूं शीतला ॥९

सत्य का चावल[१] लाभ लापसी[२], दान आका[३] गुण घाट[४]।
उपशम जल[५] सुकृत सोपारी[६], श्रीफल[७] दया दही[८] आठ है ॥
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता ए पूजूं शीतला ॥१०

आयम्बिल ओल्यो[९] करवो ये नव नेवज, सुमति सखियाँ पूजे।
तीन तत्त्व त्रिशूल हाथ में, शिर दुश्मन का धूजे है ॥
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता ए पूजूं शीतला ॥११

सत्तरे संजम वाजा वाजे, स्तवन गीत तंदूर।
चार तीर्थ थारे आवे जातरू, वणी सभा भर पूर है ॥
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता ए पूजूं शीतला ॥१२

माथा रो मुकुट मंड सांकडो स रे, जरा न चोवट जटे।
ध्यान ध्वजा तेरे फरे शिखर पर, तीन लोक थारे पट्टे है ॥
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता ए पूजूं शीतला ॥१३

भव्य जीव बालुडां री ये माता, साता दे भरपूर।
नेमिचन्द थारे चरणे लागो, दुःख सब करदे दूर है ॥
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता ए पूजूं शीतला ॥१४

संवत उगणीसे साल त्रेपने, शील सातम दिन याद।
गांव भटेवड गाई दरोली, पूज्य पुनम प्रसाद है ॥
म्हारी भाव भवानी क्षम्या माता ए पूजूं शीतला ॥१५

मुक्ति का मेला

राग : ख्याल

तुम चलो मुगत में, मेलो भरायो, श्री जिनराज को ।।टेर।।

उस मेला में आविया सरे, बड़े बड़े महाराज ।
चक्री बलदेवा मांडलिक राजा, वे सारे आतम काज जी ।।
तुम चलो मुगत में मेलो भरायो श्री जिनराज को ।।१

साधु साध्वी श्रावक श्राविका, उस मेला में ठाठ ।
केई गया केई जावसी सरे, केई त्यारी केई वाट जी ।।
तुम चलो मुगत में मेलो भरायो श्री जिनराज को ।।२

ज्ञान का वागा जगमगे सरे, समकित भूषण धार ।
केवल दर्शन देखता सरे, मेला का सिणगार जी ।।
तुम चलो मुगत में मेलो भरायो श्री जिनराज को ।।३

तीन से इगतालीस राजु में सरे, बड़ी देखण की हलक ।
तीन लोक के उपर बैठे, देख रहे सब खलक जी ।।
तुम चलो मुगत में मेलो भरायो श्री जिनराज को ।।४

असंख्याता द्वीप समुद्र, देव लोक बड भारी ।
नदियाँ पर्वत बाग बगीचा, देखे रचना सारी जी ।।
तुम चलो मुगत में मेलो भरायो श्री जिनराज को ।।५

उस मेला में सुख शास्वता, जावे सो नही आवे ।
अणगिणति का भेला हुवा, जोत में जोत समावे जी ।।
तुम चलो मुगत में मेलो भरायो श्री जिनराज को ।।६

पूज्य पुनम बताविथो सरे, उस मेला को गेलो ।
नेम करे है अर्ज गुरु अब, मुझको झटपट मेलो जी ।।
तुम चलो मुगत में मेलो भरायो श्री जिनराज को ।।७

बाइस सम्प्रदाय

राग : ख्याल

इण पंथ में आ रे, बाइस समुदा रो मार्ग दीपतो ।
इण जैन धर्म में, बाइस समुदा रो मार्ग दीपतो ॥टेर॥

बाइस परिसा जीतता सरे, बाइस समुदाय बाजे ।
बाइस पूज्य हुवा गुणधारी, जांको जस बहु गाजेजी ॥इण०॥१

बाइस शिला पर ध्यानज धरता, बाइस वे मुनिराज ।
आवे शहर में लोक यों कहता, बाइ समुदा गया बाजजी ॥इण०॥२

पांच समिति तीन गुप्ति आराधे, पांचों महाव्रत लेरा ।
नव ब्रह्म ये बाइसे ही साधे, करण मुगत में डेराजी ॥इण०॥ ३

बाइसे ही रजवाडा बाजे, जीत वैरी कुं दीपे ।
ज्यूं बाइस ये धर्मराज है, पाखण्डियां ने जीपेजी ॥इण०॥४

ज्ञान दर्शन चारित्र तप ये, चारों सेना ले अथाग ।
घुरे चर्चा का जीत नगारा, पाखण्डी जावे भागजी ॥इण०॥५

संवत उगणीसे स ल पचावने, सणवाड वचरत आया ।
बाइ समुदाय को धर्म दीपतो, जाण चोमासा ठायाजी ॥इण०॥६

[संतोष

सतरंगी पचरंगी पनरा, सोला नव पंच आठ।
संवत्सरी की एकावन सो समायां, नित्य सतवारी का ठाठजो ॥इण७

नव हजार पौषा गुण्या सरे, पुणा तीन सो खंद।
सवा लाख सामायिक टांणे, सुणतां चित्त आणन्दजी ॥इण०॥८

उगणीसे पंचावन काती, सुद पुनम सुखकन्द।
पूज्य पुनम महाराज प्रशादे, कहे रिख नेमिचन्दजी ॥इण०॥९

चौमासा को विहार करी ने, बांके भेरूं आया।
त्याग रात मोटा आरम्भ का, कर गया सगला भायाजी ॥इण.॥१०

अण छाण्यो जल नहीं वापरणो, और घणो उपकार।
बाइसमुदाय की कही लावणी सुण हरख्या नरनारजी ॥इण०॥११

वैराग्योत्पत्ति के कारण

तर्ज : सेवो श्री रिष्ट नेम०

सुणो सुणो नर नार, वैराग उपजे जीव ने दश परकार।
ज्यारो घणो अधिकार, शास्त्र में ज्यारो है बहु विस्तार ।।टेर।।

पहले बोले साधुजी रो दर्शण होय।
मृगापुत्र नी परे लीजोजी जोय ।।सुणो०।।१

दूजे बोले सूत्र सुण्यां उपजे वैराग।
अर्जुन माली नी-परे खुल जावे भाग ।।सुणो०।।२

तीजे बोले जाति-स्मरण उपनोजी आय।
मेघ मुनि नी परे तज देवे काय ।।सुणो०।।३

चौथे बोले गुरां जी रो सुण्यां उपदेश।
पांच पाडण्व नी परे तज देवे क्लेश ।।सुणो०।।४

पांचमे बोले किणरे उपनो जी रोग।
अनाथी मुनि नीपरे ले लेवे जोग ।।सुणो०।।५

छट्ठे बोले उपसर्ग उपनो जी आय।
धमड जी रा शिष्य ज्यूं संथारो देवे ठाय ।।सुणो०।।६

सातवें बोले वस्तु रो मिले संजोग।
भरत चक्री नीपरे तज देवे भोग ॥सुणो०॥७

आठवें बोले किणरे जो पड्यो रे विजोग।
सागर चक्री नी परे तज देवे शोग ॥सुणो०॥८

नववें बोले जागे जो धर्म री रात।
उदाइ राजा ज्युं होवे खट्काय नाथ ॥सुणो०॥९

दशवें बोले मशाणा ने बलताजी देख।
बलभद्र नी परे चेते विशेख ॥सुणो०॥१०

ये दश जोग सु उपजे वैराग।
अन्तस में रुचि होवे देवे घर त्याग ॥सुणो०॥११

गुरु मिलिया पूज्य जी पुनमचन्द।
रिख नेमिचन्द केवे हुवो रे आनन्द ॥सुणो०॥१२

संवत् उगणीसे तरेसट की साल।
सणवाड शहर आया सेखेजी काल ॥सुणो०॥१३

माह सुद सातम ने अदितजी वार।
सणवाड सु कियो माण खण्ड विहार ।सुणो०[1]॥१४

---

१. ठाणांग – १. ठाणा के आधार से।

दोहा

महावीर स्वामी नमूं, प्रणमूं सत्गुरु पाय।
भरत पच्चीसी मैं कहूँ, ते सुणजो चित्त लाय ॥१

तिण काले ने तिण समय, मिथिला नगरी तीर।
माणिभद्र यक्ष बाग हैं, जठे पधारचा वीर ॥२

बैठी बारे परिखदा, देशना दे भगवान।
गोतम जम्बू द्वीप नो, पूछे प्रश्न प्रधान ॥३

वीर कहे जम्बू द्वीप यह, थाली तणे आकार।
लाम्बपणे चउडा पणें, लाख योजन विस्तार ॥४

जम्बू द्वीप नाम क्यों दियो, जम्बू वृक्ष तिण ठाम।
जम्बू वन जम्बू फला, जम्बू अनादी नाम ॥५

जिण में क्षेत्र सात पण, भरत को कियो परिमाण।
बारे आरा री पूछा करी, काल चक्र लग जाण ॥६

भरत में खाडा खोचरा, घणी जंगी ने झाड।
छह खण्ड करी बेचियो, गंगा सिन्धु वेताड ॥७

राग : कपूर होवे अति उजलो रे, वलि सुगन्ध अपार।

बलि गौतम पूछा करेजी, भरत क्षेत्र स्यु स्वाम।
भरत राजा यहाँ उपजेजी, भरत शास्वतो नाम ॥१

भरतेश्वर तेरे तेला करे एम।
छह खण्ड सारु साधवा जी, राज करण के प्रेम ॥भरते०॥टेर॥

दक्षिण भरत मध्य खण्ड वीचेजी, नगरी वनिता सार।
पक्का बारे योजन लम्बीजी, नव जोजन विस्तार।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥२

जिण में राज करे भलोजी, भरतेश्वर महाराय।
चक्र रत्न आय उपनोजी, आयुध शाला के माय।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥३

बधाई सुण महोछव कियोजी, चक्र चल्यो है आकाश।
सहस्र यक्षों सु अग्नि कुणमेंजी, जातो करे प्रकाश।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥४

भरत लारे कटक हुवोजी, चक्र देखावत नाम।
दण्ड रत्न सडक करेजी, योजन योजन मुकाम।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥५

गंगा नदी सु पश्चिम दिशेजी, तीर्थ मागध जाव।
बारे नव जोजन लगेजी, कीधो है कटक पडाव।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥६

आयुध शाला में तेलो करीजी, बैठा है रथ रे माय।
भिजे रथ धूरि पींजणी जी, ज्यां लगे जल में जाय।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥७

चार जात रा देव नेजो, नमी करे सन्मान।
मागध देव ने साधवाजी, बारे जोजन मुके बाण।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥८

वाण देखीने देव कोपियोजी, उठ्यो है तामस खाय।
नामो वांचो ने मन संकियोजी, यह तो भरत महाराय।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥९

आभूषण लेईने आवियोजा, प्रणमें भरत रा पाय।
आण मनाई सन्मान देयनेजो, देव आयो जिण दिस जाय।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥१०

कीधो है तेला रो पारणोजी, सुखे रहे महलों माय।
आठ दिनां रो मोछव कियोजी, प्रथम तेलो इम थाय।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥११

इण ही ज रीत नैऋत कुंण मेंजी, तीर्थ साध्यो वरदाम।
वायव कूंग प्रभासनोजो, तीन तीर्थ तेला तीनुं ठाम।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥१२

उत्तर नदी सिन्धु देवीनोजो, चोथो तेलो इम होय।
पांचमो देव वैताडनोजी, तिखुणो खण्ड साध्यो जोय।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥१३

छट्ठो तिमिस्र गुफानो करीजी, दण्डसु खोल्या है किवांड ।
ऊगुण पचास मांडला लेखनेजी, छंडिया राजासु जीत्या राड ।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥१४

सिन्धु पश्चिम खण्ड साधियोजी, देव साध्यो चूलहेमवन्त ।
सातमें तेले बाण मु कियोजी, बहत्तर जोजन परियन्त ।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥१५

ऋषभकूट नामो लिख्योजी, पाछा आया बैताड के पास ।
नमि विनमि रो तेलो आठमोजी, श्रीदेवी सूंपी तास ।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥१६

नवमो तेलो गंगादेवी रो कियोजी, कुण इसाण री बेल ।
गंगा पूर्व खण्ड साधियोजी, सेनापति ने दियो मेल ।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥१७

खण्ड प्रभा का खोल्या बारणाजी, दशमा तेला के माय ।
उगम निगम जल उतरीजी, दक्षिण भरत तिहां आय ।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥१८

गंगातट तेलो इग्यारमोजी, साध्या नव ही निधान ।
गंगा म्लेच्छ खण्ड साधियोजी, सुसेण सेनापति जान ।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥१९

पाछा आया तेलो बारमोजी, कीधो बनिता रे बार ।
नवनिधान रहे बारणेजी, वलि सेना चार प्रकार ॥
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥२०

दूजो कटक भारत साथ में जी, आया वनिता रे माय।
वर्षा रुपा सोना रतना तणी जी, देववर्षाता जाय।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥२१

चोसट सहस्त्र अन्तेपुरी जी, दो दो वारंगणा लार।
प्रधान पुरोहित री डीकरी जी, सब एक लाख ने बाणु हजार।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥२२

साठ हजार वरसो लगे जी, साधं लिया खटखण्ड।
तेरमो तेलो कियो राज नो जी, आण वर्ताई अखण्ड।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥२३

जम्बूद्वीप पन्नंति सूत्र सु जो, संक्षेप कियो अधिकार।
संवत उगणीसे चोपने जी, माह सुद वीज बुधवार।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥२४

पूज्य जी पुनम प्रशाद सु जो, भरत पच्चीसी गाय।
रिख नेमि चन्द इम भणे जो, शहर बम्बोरा रे माय।
भरतेश्वर तेरे तेला करे एम ॥२५

"कलश"

सात सित्तर लाख पूर्व, भरत कुंवर पद रया।
एक सहस्त्र वर्ष माण्डलिक राजा, पीछे चक्र वर्ती थया ॥१

सहस्त्र वर्ष उणा खट् लाख पूर्व, राज खटखण्ड में कियो।
अन्तर्मुहूर्त्त छद्मस्थ रही ने, आरिसे भवन केवल लियो ॥२

दश सहस्त्र नृप प्रति बोध देई ने, विचरत अष्टापद आविया।
एक लाख पूर्व दीक्षा पाली, मास संथारे शिव पाविया ॥३

सर्व चौरासी लाख पूर्व, भरत आयुष्य पालियो।
उगी उगी ने उगिया वे, जिन मार्ग ने उजजवालियो ॥४

सुण वच्छ गोयम वीर जम्पे, भरत इम कहिवाय जी।
आगम जम्बूद्वीप पूछा, ढाल में कही किम जाय जी ॥५

संतानिया पूज्य अमर सिंघ ना, गुरु मेरा पुनम चन्द जी।
सुगुरु नामें सुख पामें, वर्ते परमानन्द जो ॥६

सूत्रानुसारे यह गुण गाया, ओछो अधिकों जो कयो।
केवली साखे नेम भाखे, मिच्छामि दुक्कडं मैं दियो ॥७

---

१. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के आधार से।

औपदेशिकपद

राग मोहनगारोरे

सुण कनरसियारे २, जिनराज वचन हिरदे नहीं वसियारे ।
सुण कनरसिया रे २ थारे सूत्र वचन दिल में ना जचिया रे ।।टेर
देखण ख्याल तमाशा अश्की, जावे कमरां कसिया रे ।
अवकी आया मांहि करे मातरो, आगा घसिया रे ।
सुण करनसिया रे २, जिनराज वचन हिरदे नहीं वसिया रे ।।१
नाचे तायफा गावे ढोलणिया, तानां कर कर हसिया रे ।
वो ढवे कहे और ही गावो मेरा, प्राण त्रसिया रे ।
सुण कनरसिया रे २, जिनराज वचन हिरदे नहीं वसिया रे ।।२
होली गावे लाल केशिया, जाम उघाडा भुसिया रे ।
गीत गाल्यां व्याव री सुणा जाणे, स्वादज चसिया रे ।
सुण कनरसिया रे २ जिनराज वचन हिरदे नहीं वसिया रे ।।३
केई उंघाणां सूत्र सुणो जाणे, सियाले घृत ठसिया रे ।
केई जागे कहे स्वाद न आयो, आय ने फसियारे ।
सुण कनरसिया रे २, जिनराज वचन हिरदे नहीं वसिया रे ।।४
गावे रागिणी तो आछा भणिया, आज आई वड़ी खुशिया रे ।
वोल सीखण रो कहे तो जाणे, मन्दिर ढसिया रे ।
सुण कनरसिया रे २, जिनराज वचन हिरदे नहीं वसिया रे ।।५

पूज्य अमरसिंघजी प्रतापी, हुवा ज्ञान रा रसिया रे।
पूज्य पुनम उपगार किया म्हारे, हिवड़े वसिया रे।
सुण कनरसिया रे २, जिनराज वचन हिरदे नहीं वसिया रे ॥६

उगणी से सतसठ चौमासे, आय भीलाडे हुलसिया रे।
रिख नेमिचन्द देत शिखापण, दांत ज घसिया रे।
सुण कनरसिया रे २, जिनराज वचन हिरदे नहीं वसिया रे ॥७

औपदेशिक स्तवन

राग : कुण जाणे पराया मन को

कुण जाणे काल का दिन की।
या दिन की तन की धन की रे ।।टेर।।

एक दिन में देव निपजाई।
या द्वारापुरी कंचन की रे ।।कुण०।।१

हरि देखत माया विलाणो।
हवा देखी कसूंबी वन की रे ।।कुण०।।२

स्वर्ण लंक देख गर्वाणो।
कहाँ गई ऋद्धि रावण की रे ।।कुण०।।३

गरबे मति देख काया काची।
या जैसे शीशी दरपन की रे ।।कुण०।।४

एक पल में काया पलटाणी।
या चक्रवर्ती सणन्त की रे ।।कुण०।।५

इम अनेक हुवा जग माहिं।
हूँ कहूँ वात किण किण की रे ।।कुण०।।६

ज्यारे गढ में नोपत घुरती।
ज्यारे नहीं रही आशपुरी अन्न की रे ।।कुण०।।७

ज्यारे घर में कुटुम्ब नहीं माता ।

ज्यारे रे वे मुषा और मन की रे ॥कुण०॥८

कई वर्षों का बांधे मनसोबा ॥

पिण खबर नहीं एक छिन की रे ॥कुण०॥९

सुकृत कर लाहो लीजे ।

खप कीजे मुक्ति मिलण की रे ॥कुण०॥१०

करे रिख नेमिचन्द महिमा ।

यह पूज्य पुनम दर्शण की रे ॥कुण०॥११

थावरच्चा कुंवर

राग : तावड़ा धोमो सो तपजे

सासुजी थाको बजर हियो पाको हो ।
सासुजी थाको बजर हिया पाको ।
कुंवरां तो संजम दीनो म्हांने किम राखो ।।टेर।।

थावरच्चा कुंवर मन चिन्तवे जी कांई,
कामण परण्या बत्तीस ।
कमी नहीं किणी बात री सरे,
पूरी मन जगीस ।।सासु०।।१

रतन जडत घर आंगणाजी कांई,
और कहीं नहीं चाह ।
इण सुखों रो पार नहीं पायो,
हिवड़े हर्ष उमाह ।।सासु०।।२

छिन दिन सुख माहे रेवता जी कांई,
एक दिवस रे माय ।
ज्येष्ठ वैशाखा रा तावड़ा जी कांई,
कुंवर देख्या मुनि राय ।।सासु०।।३

मुनि देखी भव स्मरण हुवो जी कांई,
मन वसियो वैराग ।

नव से भव तो देखियाँ सरे,
आयो मुनि पर राग । सासु०॥४

जीव अनंति वार में जी कांई,
गोता खाया भरपूर ।
पूछे माताजी ने संजम लेसुं,
दुःख करसुं सब दूर ॥सासु०॥५

मुनिवर चरण भेटिया जी कांई,
शीश दियो है नमाय ।
हाथ जोड़ ने करे विनति,
लुल लुल लागे पाय ॥सासु०॥६

आय माताजी ने भेटिया जी कांई,
सुण अम्मा मोरी बात ।
काल सु बलियो को नहीं सरे,
कुण जाणे परभात ॥सासु०॥७

सुण अम्मा घरणी ढल्या जी कांई,
मत काढो या बात ।
एकाएक मुझ नानडो जी कांई,
किम काढूं दिन रात ॥सासु०॥८

उत्तर पडुत्तर हुवा घणा जी कांई,
या थई पेली ढाल ।
रिख नेमिचन्द कहे सांभलो जी कांई,
कुंवर लीनो संजम भार ॥सासु०॥९

दौलत मुनि की कम्बल

राग : तुम तो आच्छे लागो जी

देखो चोर ले गयो जी,
भली विचारी कांवली ने पाछी देगो जी ।।टेर।।

शासनपति फरमावियो रे, उत्तराध्येन मझार ।
अचेल परीसो जीतसी सरे, ते साचा अणगार ।।देखो०।।१

सांझ पडिया पडिक्कमणो कीधो, हुई थोडी सी वेला ।
स्वमति ने परमति ये, भाया होगया भेला ।।देखो०।।२

दिने पलेई कांवली ने, मेली एकण कांने ।
अंधारे टंटोरा करता, पड गई उणरे पाने ।।देखो०।।३

कपडा सु तो वांधने जी, पलेवण में डपटी ।
ऐसो जावतो कीधो तोई, उण तो लीधी झपटी ।।देखो०।।४

झीणी झीणी कांवली ने, नरम रेशम सरखी ।
गांठ रो तो दाम न लागो, उण तो सीधी परखी ।।देखो०।।५

साधु वैठा वखाण वांचे, चोर जाणी पोल ।
धोली धोली कांवली या, लीधी गांठडो खोल ।।देखो।।६

चोर जाणियो कांवली या, रहे साधा रे जैसी ।
हूं पिण सियालो सोरो काढूं, याने फेर कोई देसी ।।देखो०।।७

कृष्णजी रो वखांण बांचे, हुंकारो दे हरे हरे ।
चोर हुँकारो साचो कीनो, कांबल मेली घरे ।।देखो०।।८

सुवण वेला कांबली ने, श्रठी उठी ने जोई ।
दौलत मुनि कहे म्हाराजा, कांबल लेग्यो कोई । देखो०।।९

ऊपर लो तो बतको लाधो, कांबल तो नहीं सूज्झे ।
दौलत मुनि ठंड में जी, उभा थर थर धूजे ।।देखो०।।१०

संवर वाला भाया सुण ने, पूछे सब ने जाय ।
कांई पतो नहीं लाग्यो जद, बैठा सब पछताय ।।देखो०।।११

भाया कहे साधां री कांबल, लेगो कुण श्रबूजी ।
ले गयो तो ले गयो भाई, म्हांने मिलसी दूजी ।।देखो०।।१२

साधु कहे झगडो मति जद, सूता समता राखी ।
श्राधी रात रा कांबली वा, धर उपर ला नाखी ।।देखो०।।१३

भाग फाटा रा जोवण लागा, श्रागता मत होवो ।
साधु थे एक वार तो, घर ऊपर तो जोवो ।।देखो०।।१४

जाय बारणे ऊंचो झांक्यो, कांवल श्रा कूण श्राणी ।
लांबा वांस रा खूंठचा सेती, लीनी उण ने ताणी ।।देखो०।।१५

ब्राह्मणां री खेर वाडो, मुलक झालावाड ।
वीकानेर री कांवली रा, नेम लडाया लाड ।।देखो०।।१६

संमत उगणीसे गुणसीतरे, मिगसर मास रे माई ।
श्रग्यारस मून री कांवल ऊंन री, उणीज राते गाई ।।देखो०।।१७

हंस मुनि की कम्बल

राग : उग्रसेण री लली रे

सतगुरु सीख देवे वारम्बार।
चेलाजी धारे ज्यारो हुवे खेवो पार ॥कां०॥१

कांवल जूनी सही रे, कांवल जाडी सही।
रह्या रो न हर्ख गया रो शोक नहीं ॥टेर॥

चौथी समिति ठाणायंग में, कही भगवन्त।
उपकरण पलेई ने, मेलो नी एकन्त ॥कां०॥२

हंस मुनि ने घणी, देवे गुरु सीख।
हस्यांन हस्यांन करे म्हांने, पडे नहीं ठीक ॥कां०॥३

पेहलांही तो गुरु थांने वरजिया जोय।
एक तो खेस फेर, कांवल क्यु दोय ॥कां०॥४

देवो साधु सन्तों ने थे मेट देवो बोझ।
वांनी वांनी चोइनोवेती, आपने कांई सोज ॥कां०॥५

कोई दाण ले जासी थे, मेलो नी अवेर।
थांन थांन ले जासी तो, म्हांने मिलसी फेर ॥कां०॥६

या वो बात वणां ने राखी दीनी डेल ।
ले जावण वाला रो, मिल गयो मेल ॥कां०॥७
इण पर साध रे वे, जो डींगडोल ।
चीज जावे लोकों माहि, दीस जावे भोल ॥कां०॥८
आगे गुरु कह्यो चेला, पलेवो नी भोम ।
वठे कांई ऊंठ बैठा, केवे कर जोम ॥कां०॥९
गुरु रो वचन जणां, राखण खेर खूंट ।
चेला ने डरायो देवाँ, राते करी ऊंट ॥कां०॥१०
इण पर सीख न, गनारे गुरु बोल ।
वैसे हीज आण बीती, देखो दिल खोल ॥कां०॥११
हंस मुनि में एडी, बीती है आय ।
अवे गुरु केणो करजो, जिम सुख थाय ॥कां०॥१२
खेस दियो गुरुजी, सिराणें रे काज ।
वो तो देखी रह गयो, विनो फलियो आज ॥कां०॥१३
उगणीसे सित्तार, वैशाख सुद ।
वारस ने वार थावर, गुरु दिनो बुद्ध ॥कां०॥१४
कममोल कांबल रो, और कम धन ।
रिख नेमिचन्द जोडी, उणहीजु दिन ॥कां०॥१५

मिजाजी ढोला •

राग : तरकारी लेलो मालन आई रे

मिजाजी ढोला टेढा क्यों चालो चकिया मान में।
दिरा का झोला जैसे तू आयो रे तोफान में ॥टेर॥

ढी पगड़ी बंट दे जकड़ी, ढके कान एक आंख।
टा वंक सा विच्छु डंक सा, रहा दर्पण में मुख झांक ॥१

दड़ी पाचली गगन काचली, डाढी ऊंची चढावे।
ाने हम तकड़ा अरु बाजार संकड़ा, मन में मरड न मावे रे ॥२

ीची धौती काना मोती, कोट गोडा तक आणे।
ोटा साफा खो दिया आपा, ऊँच नीच नहीं जाणे रे ॥३

ट्टी हाथ में दोस्त साथ में, बाग बगीचां जावे।
हली रा भँवरा डर नहीं जमरा, भांगां घोट पिलावे रे ॥४

रहेज अकडो ज्यु अमर वकडो, दे मूंछ्या वल घाले।
छ्या पड़े चोडो जाणे देशी घोड़ो, चाल विलायती चाले रे ॥५

ंच वुलावे रंग चलावे, आडो टांग फसावे।
दड़ी झेलतो गेर खेलतो, फाग ने राग सुहावे रे ॥६

या वो बात वणां ने राखी दीनी डेल ।
ले जावण वाला रो, मिल गयो मेल ॥कां०॥७

इण पर साध रे वे, जो डींगडोल ।
चीज जावें लोकों माहि, दीस जावे भोल ॥कां०॥८

आगे गुरु कह्यो चेला, पलेवो नी भोम ।
वठे कांई ऊंठ बैठा, केवे कर जोम ॥कां०॥९

गुरु रो वचन जणां, राखण खेर खूंट ।
चेला ने डरायो देवाँ, राते करी ऊंट ॥कां०॥१०

इण पर सीख न, गनारे गुरु बोल ।
वैसे हीज आण बीती, देखो दिल खोल ॥कां०॥११

हंस मुनि में एडी, बीती है आय ।
अबे गुरु केणो करजो, जिम सुख थाय ॥कां०॥१२

खेस दियो गुरुजी, सिराणें रे काज ।
वो तो देखौ रह गयो, विनो फलियो आज ॥कां०॥१३

उगणोसे सित्तार, वैशाख सुद ।
वारस ने वार थावर, गुरु दिनो बुद्ध ॥कां०॥१४

कममोल कांबल रो, और कम धन ।
रिख नेमिचन्द जोडी, उणहीजु दिन ॥कां०॥१५

छप्पन ।

मिजाजी ढोला

राग : तरकारी लेलो मालन आई रे

मिजाजी ढोला टेढा क्यों चालो चकिया मान में ।
मदिरा का झोला जैसे तू आयो रे तोफान में ।।टेर।।

टेढी पगड़ी बंट दे जकड़ी, ढके कान एक आंख ।
पटा बंक सा बिच्छु डंक सा, रहा दर्पण में मुख झांक ।।१

गदड़ी पाचली गगन काचली, डाढी ऊंची चढावे ।
जाने हम तकड़ा अरु बाजार संकड़ा, मन में मरड न मावे रे ।।२

नीची धौती काना मोती, कोट गोडा तक आणे ।
मोटा साफा खो दिया आपा, ऊँच नीच नहीं जाणे रे ।।३

चट्टी हाथ में दोस्त माथ में, बाग बगीचां जावे ।
सहली रा भँवरा डर नहीं जमरा, भांगां घोट पिलावे रे ।।४

रहेज अकडो ज्यु अमर बकडो, दे मूंछा बल घाले ।
पूछ्या पड़े चोडो जाणे देशी घोड़ो, चाल विलायती चाले रे ।।५

पंच बुलावे रंग चलावे, आडी टांग फसावे ।
दड़ी झेलतो गेर खेलतो, फाग ने राग सुहावे रे ।।६

डाकी ने पडतो जल में तिरतो, करतो फेल फितूर ।
साबू लगातो रज झटकातो, रहतो फटिक सनूर ।।७

काच झांकतो नजर नाखतो, बाँकी गर्दन वाले ।
जाने सागे वांदरो बिना श्यान रो, आडो टेढो नाले रे ।।८

गादी तकिया मद में चकिया, दो कौडी को पाजी ।
रण्डी नचावे गेस जलावे, प्यारी आतिशबाजी रे ।।९

पान सुपारी मुख में बीड़ी, फक् फक् धुआं निकाले ।
बूंट पहर ने घड़ी टेर ने, अकड़ मकड़ में चाले रे ।।१०

कहाँ तक बंदा रहसी जिन्दा, करले दो दिन नेकी ।
फटिया बाका बेट्या माखा, निकल जाय सब शेखी ।।११

जोवन के मटके परघर भटके, जाणे जमीं से उचो छटके ।
भोग रस गटके लागो खटके, धर्म नेड़ो नहीं अटके ।।१२

वृद्धपणो झटके आयो सटके, जब चाबडियाँ लटकें ।
कुटूंब सब तटके तब दिल खटके, मुआ पाछे जम लाता पटके ।।१३

इम जाणी सुकृत कर प्राणी, सुर वासी पद पावें ।
पूज्य पुनम को गुरु को नम के, ऋषि नेमचन्द गावे रे ।।१४

संवत् उन्नीसे साल चिमोत्तार, गांव ऊंटाला आया ।
धर्म सवाया ठाठ लगाया, तब चौमासा ठाया रे ।।१५

खर्ची विना तू क्या खायेगा

राग : धर्म करो रे म्हारा बेलियाँ

'तूं तो जावे ने यह भी जायगा ।
खर्ची बिना तू क्या रे खायगा' ॥टेर॥

सद्गुरु सीख हिया बीच धारो रे,
यह तो अवसर कब आयगा ॥तूं०॥१

जन्म भयो जब जायो कहलायो,
भव्य भवन रो नाम जायगा ॥२

जो रे जावेगा सो रेवेगा कैसे रे,
अगला मुकाम फिर ठायगा ॥३

पांच कोश जाता खर्ची रे बांधे,
फिर फिर सोचे तु क्या क्या चायगा ॥४

परभव नहीं कोशा री गिणती,
ऐसा विचार कभी लायगा ॥५

केई बड़े रे गये हाथ को घीसते,
वैसे तो तूंही यहाँ से जायगा ॥६

नानी रो घर तो आगे नहीं छे रे,
किया जैसा फल पायगा ॥७

जम जबाब पूछेगा तुझने रे,
त्यारे तूं काँई रे बतायगा ॥८

सीख मानेगा तो सुधरेली तेरी,
नहीं तो यही घोड़ा ने यही पायगा ॥९

कर करणी तू भवसिन्धु तरणी,
ज्योति में ज्योति समायगा ॥१०

पूज्य पुनम थी नेमीचंद गावे,
ऐसे ही आगे मुनि गायगा ॥११

राग : पूर्ववत्

कठे खोया थे दिन रात रे।
वठे जम पूछेला सारी बात रे।।टेर।।

मानव भव पायो एल गमायो,
खर्ची नहीं बांधी तिल मात रे।।१

बालपणो सब खेल में खोयो रे,
तरुण में मोह्यो तिरिया साथ रे।।२

पाड्या धाडा ने मारचा गपोड़ा,
करी घणी थे उतपात रे।।३

सम्वर में कमर दुखती है थारी,
होली में खेल्यो गेरिया साथ रे।।४

बुढापे में धर्म कर सक्यो ना ही रे,
उमर बीताई इण भांत रे।।५

नर्क गयो बांध कुटुम्ब कारण कर्म,
आडा न आया सेण गिन्यात रे।।६

अकृत किया वैसा वठे भुगतावे रे,
जम बतावे सारी ख्यात रे ॥७

भाले सुं भेदे और खड्ग सुं छेदे रे,
छाती पर मारे थारे लात रे ॥८

तातो तातो तो सीसो पिलावे रे,
लेरावे आग थम्बे बाथ रे ॥९

धर्म बिना थारी निष्फल रजनी रे,
उत्तराध्येन भाष्यो जगनाथ रे ॥१०

जम धोका सुं टलना चाहवो रे,
तो कर लेनी सतूगुरु साथ रे ॥११

नेम ने गाया सुख वर्ताया रे,
पूज्य पुनम रा सिर पे हाथ रे ॥१२

आदर्श पूज्य

राग : चिड़ा थनें चावरिया भावे

पूज्य जी गुण आपरा भारी, पूज्य जी गुण आपरा भारी ।
श्री पुनमचन्दजी महाराज, आप तो बाल ब्रह्मचारी ॥टेर॥

मारवाड़ जालौर शहर में, शोभे सुखकारी ।
ओसवाल राय गांधी उंमजी, फूलादे नारी ॥पूज्य०॥१

रत्न कूंख में आय उपना, पुण्यवन्त अवतारी ।
चहरो देखतां आया स्वर्ग सुं, सूरत मोहन गारी ॥पूज्य०॥२

ज्ञान मुनि रो उपदेश सुनी कहे, लेसुं संजम भारी ।
इग्यारा वर्ष का हुआ कुंवरजी, ऐसी दिल धारी ॥पूज्य०॥३

बहिन सेती मन शोभो करने, पक्की विचारी ।
घरे आय ने मांगे कुंवरजी, आज्ञा पितारी ॥पूज्य०॥४

विलखा होय पिता इम बोले, परणो इक नारी ।
कुंवर कहे मैं एक न मानूं, लाखाँ पर कारी ॥पूज्य०॥५

भांत भांत पिता समझाया, नहीं हुआ आरी ।
कागद लिख पिता यों बोले, आज्ञा छे म्हारी ॥पूज्य०॥६

काका रो बेटो हुंतो सरे, करे काम कोटवाली।
भाई दीक्षा री बात सांभली, बहुत लगी खारी ॥पूज्य०॥७
हाथ पकड़ ने रोक्या घर में, राख्या पहरेदारी।
छाने निकल ने गया बहिन पे, बात कही सारी ॥पूज्य०॥८
भाई तणो डर जाण जोधपुर, चाल्या होय त्यारी।
ज्ञानमुनि ने जाय भेटिया, हूँस छे दीक्षारी ॥पूज्य०॥९
ओच्छब कर दीक्षा लेवण चाल्या, देखे नर नारी।
महल चढ्या केई कोट कांगरे, नयणां जल धारी ॥पूज्य०॥१०
देव कुंवर सम दीपता सरे, देखो सुरत यांरी।
बालक वय में संजम लेव, धन करणी ज्यांरी ॥पूज्य०॥११
जितरे जालौर सु कागद आयो, लिखी बात सारी।
जोधपुर में बहन ज रेहती बेटी भुआरी ॥पूज्य०॥१२
बहनोइजी तो गया राज में, अर्जी अवधारी।
राजाजी तो भेज्या आदमी, चाल्या तत्कारी ॥पूज्य०॥१३
दीक्षा लेवण की हुई छे त्यारी, आया हलकारी।
घोड़े को लगाम पकड़ ने, लीधा उतारी ॥पूज्य०॥१४
नर नारी तो रह्या जोवता, लाया तिणवारी।
मुनिवर तो पाछा आया शहर में घर गया घरवारी ॥पूज्य०॥१५
भुआ री बेटी कहे सुनो हो भाई, या काँई विचारी।
कमी नहीं किण वात री सरे, महर छे राजारी ॥पूज्य०॥१६
कुंवर कहे करो लाखों ही वातां, नहीं मानूं थारी।
रोक्या मास तक छाने हवेली, निकल्या होय बारी ॥पूज्य०॥१७

कुंवर पाछा जालंधर आया, सहु कही विस्तारी।
बहन कहे मैं संजम लेशूं, बात न रे वारी ॥पूज्य०॥१८

भाई कहे मैं खिण नहीं रेहशूं, तब हुआ लारी।
बहन भाई दीक्षा लेवण चाल्या, कर महोच्छव भारी ॥पूज्य०॥१९

दरवाजे आय आडा फिरिया, भाई ने कोटवाली।
हाथ पकड़ ने पाछा लाया, कर कोकी काली ॥पूज्य०॥२०

बहन तुलछाजी तो संजम लीधो, भाई रह्या पच्छाडी।
घर जावण रा त्याग ज कीना, कर छाती गाढी ॥पूज्य०॥२१

कोटवाल सुण चमक्यो चित्त में, अब न लगे कारी।
हुक्म दियो कोटवाल कुंवरजी, हुवा हुंशियारी ॥पूज्य०॥२२

एक जति मिल्यो कहे कुंवर थारो, रूप घणो भारी।
गादी बिठाऊँ श्रीपूज्य री सरे, मानो बात म्हारी ॥पूज्य०॥२३

या गादी तो अठे दीपावे, आगे दुःखकारी।
कुंवर न डगिया उत्तर दीनो, जति गयो हारी ॥पूज्य०॥२४

भवराणी में महोच्छव कर ने, मिलिया नर नारी।
'लाय सूंपिया' 'ज्ञानमुनि' ने, पड़े आंसू धारी ॥पूज्य०॥२५

एकाएक मुझ नानडो सरे, कोर कालजारी।
रोता पिता कहे सूंप्यां आप ने, राखो हितकारी ॥पूज्य०॥२६

जन्म कुंवर रो संवत् अठारे, साल बाणुवारी।
मिगसर सुध नवमी रे दिवसे, शनिचर वारी ॥पूज्य०॥२७

इग्यारा वर्ष रा कीधी कुंवरजी, बात जो दीक्षा री ।
तीन वर्ष जाभेरा रोक्या, उमर वर्ष चवदारी ॥पूज्य०॥२८

संवत् उगणीसे वर्ष छका के, माह सुद नम भारी ।
मंगलवार बडशाखां हेठे, लिया व्रत धारी ॥पूज्य०॥२९

दुखमी आरे ऐसी ऋद्धि छोडी, निकल्या जसधारी ।
धन जननी री कूंख उजाली, जावूं बलिहारी ॥पूज्य०॥३०

हुवा पण्डित सुजान शिरोमणि, सूत्तर भण्डारी ।
ज्ञान गुरु रो पाट दीपायो, पूज्य पदवी धारी ॥पूज्य०॥३१

पूनम पुण्य का पोरसा सरे, रूप सम्पदा भारी ।
मुख विराजे सरस्वती आप रे, कण्ठ कला न्यारी ॥पूज्य०॥३२

पूनमचंद पूनमचन्द सरीखा, लगे सूरत प्यारी ।
बहु चेलां कर दीपता सरे, खुली ज्ञान क्यारी ॥पूज्य०॥३३

केहणी रेहणी एक सरीखी, मुनि शुद्ध आचारी ।
हितकारी सीख देवे चेलां ने, पूज्य क्षमा धारी ॥पूज्य०॥३४

गाँव गाँव रा दर्शन को आवे, पाखण्ड गया हारी ।
ऐडी सूरत तो नजरे नहीं आवे, केवे नर नारी ॥पूज्य०॥३५

संवत् उगणीसे साल पचासे, वसंत पंचमी माह री ।
ऋषि नेमिचन्द कहे चेलो पूज्य को, जोडी थावर वारी ॥पूज्य०॥३६

खेमलो से आया गाँव मेड़ते, देश ज मेवारी ।
गाँव डबोक उदयपुर मेरे, वीच में डेवारी ॥पूज्य०॥३७

गुडली पूज्य छत्तीसी गाई, हर्ष्या नर नारी ।
अधिको ओछो मिच्छामि दुक्कडं, लीजो सुधारी ॥पूज्य०॥३८

कलश

विचरत पूज्य जालोर पधारे, नर नारी हुवा हुलास जी ।
उगणीसे बावन साल कीनो, जन्मभूमि चौमास जी ॥ १

संवच्छरी को बखाण वांच्यो, वेदना हुवाँ अनशन कियो ।
भादवा सुद में वार बुध में, पूनम-पूनम को दिन लियो ॥ २

निर्वाण महोच्छव माहि ने एक, क्षेत्र में अचरज थयो ।
मोंडी चिता में बल गई पण, तुरो अखण्डित रह गयो ॥ ३

त्रिरंग तुरा रो देख श्रावक, करी लेवण री आश जी ।
सब लोग देखत पंच रंग होई, तुरो उड्यो आकाश जी ॥ ४

सर्व आयुष्य वर्ष साठ, संजम बयालीस पालियो ।
अमर छट्ठे पाट जग में, जैन मत उजवालियो ॥ ५

टिप्पण

आचार्य प्रवर श्रद्धेय पण्डित श्री पूनमचन्द्रजी म० एक प्रतिभा-सम्पन्न आचार्य थे । उनका जीवन सूर्य की तरह तेजस्वी, चन्द्र की तरह सौम्य, हिमालय की तरह उन्नत और समुद्र की तरह विराट् था । उनके जीवन के सुनहले संस्मरणों में मे एक संस्मरण यहाँ प्रस्तुत है ।

जैन धर्म और जैन संस्कृति में पण्डित - मरण का अत्यधिक महत्त्व है। प्रतिपल - प्रतिक्षण साधक की यही प्रशस्त भावना रहती है कि वह दिन कब होगा जब मैं पण्डित - मरण को प्राप्त करूंगा। वीर सेनानी की तरह मुस्कराते हुए, आचार्य प्रवर ने एकादश दिनों का अनशन कर समाधिपूर्वक स्वर्ग की राह ली।

सहस्राधिक भावुक भक्त जय - विजय के गगनभेदी नारों को बुलन्द करते हुए उनकी मृत देह को लेकर श्मशान पहुँचे। चिता जलाई गई, देखते ही देखते दिव्य देह सहित मांडी जल गई। किन्तु तुर्रा अग्नि स्नान करने पर भी प्रह्लाद की तरह जला नहीं। श्रद्धालु - श्रावक वीर हनुमान की तरह उसे लेने के लिए लपके किन्तु वह इन्द्र धनुष की तरह रंग-बिरंगा बनता हुआ पक्षी की तरह अनन्त गगन में उड़कर विलीन हो गया। अद्भुत आश्चर्य से सभी विस्मित थे।

वहाँ से वे श्रावकगण स्नान के लिए जल कुण्ड पर गये। वहाँ का जल केशर की तरह रंगीन, गुलाब जल की तरह सुगन्धित और गंगा की तरह निर्मल था जिसे देखकर भी सभी चकित हो गये। और उनके हृत्तंत्री के सुकुमार तार झन-झना उठे—आश्चर्य! महान् आश्चर्य!! धन्य है पूज्य श्री को जिन्होंने स्वर्ग पधार कर भी नास्तिकों को आस्तिक बनाये।

[जालोर के प्रत्यक्ष-द्रष्टा श्रावकों के कथन के आधार से]

सवैया

रण तारण ज्हाज, आतमा का सारे काज।
ा है मुगति राज, शुद्ध सो आचारी है॥
्तीस गुणखाण, पूज्य जी पूनम जाण।
्यां मिले निर्वाण, पूज्य क्षमा धारी है॥
न का व्यापार नित, मिथ्या मत टाल देत।
जम का रत्न लेत, हीरा का व्यापारी है॥
हे ऋषि नेमिचन्द, निर्ग्रन्थ गुरुवन्द।
क सेंस आठ वार, वन्दना हमारी है॥१॥

निन्हव भावना सप्तढालियो

दोहा

चौवीसी जिनवर नमूं, प्रणमूं सद्गुरु पाय।
चिरत कहूँ निन्हवाँ तणो, ते सुणजो चित्त लाय ॥ १

सांग धरे कई जगत में, ख्याल कीतण्यां जोय।
गोपी कन्हैया वे वणे, ते गुण कहां सु होय ॥ २

ज्यू सांग धार मुनिवर तणो, भांडे दया ने दान।
अवगुण दया माता तणा, सुण्यां जाय नहीं कान ॥ ३

मुझ ने दया जगावियो, ऊठ ऊठ दे जाब।
अवगुण गा रह्यो म्हायरा, जिण निन्हव ने दाब ॥ ४

अवगुण दया माता तणो, सह्यो गयो नहीं मोय।
जिण री जोडूं भावना, निन्हव चूपका होय ॥ ५

राग—रे प्राणी कर्म समो नहीं कोय

शासन नायक वीर जिनेश्वर, मार्ग शुद्ध वतायो।
जिन मार्ग उथाप्यो छंडेला, जाणे इन्द्रजाल रचायो रे ॥१

कुमति थारे भावना कठासुं रे आई, एडी आगे किणी नहीं भाई रे।
थारे संजम में लाय लगाई रे।कु.। थे या काँई मांडी ठगाई रे ॥कु०

द्रव्य तो साधु रो सांग ज धरियो, दोषिलो आहार ज लावे।
गृहस्थी घर आरम्भ निपजाई,पछे निह्नव ने भावना भावे रे ।।कु.२

भावना सुण ने मन हो गयो राजी,जाणे आज माल हाथ आवे।
झटपट पातरा झोली में घाली, लारे ही दोड्या जावे रे ।।कु.३

तेडिया घर प्राहूणा लावे, तेडिया निन्हव जावे।
आहार रे माहीं दोष लगावे, थारे जिभ्यावश नहीं थावे रे ।।कु.४

श्राद्ध वाला को वंश बुलावे, काग उडंता रे आवे।
कागला री परे जिण घर ताको, वणी घर भावना भावे रे। कु.५

किणी घर लापसी किणी घर सीरो,जिणरे लाग रह्या छे खीरा।
थोडी सी वेला पछे भावना भावूं,जितरे स्वामी रहिजो धीरा रे ।।६

ऊन ओगा री फलिया ले जावे, बगत काची जो देखे।
हेठो बैठी ने बंटण लागो, धरणो दीधो किणी लेखे रे ।।कु.७

गृहस्थी प्राहुणा ने घरे ले आयो,चावल उतरणा रह्या बाकी।
जितरे प्रामणा ने बारे बैठावे, या ही निन्हव टेक राखी रे ।।कु.८

प्राहुणा निन्हव वाट जोवे री, दोनों ही बैठ हथाई।
प्राहुणा पाछे थाने पेला धपावे, या थां करी अधिकाई रे ।।कु.९

रांडी मुंडी कोई एकली बाई, घर खूलो मेल्यो नहीं जावे।
दूजी कना सुं नेहत्थो देरावे, सामली बाई भावना भावे रे ।।कु.१०

इतरी सुणी झट चाल्या जावो, थे कहो तेडिया नहीं जावां।
भेंस बांटा उपर उलटे ज्युं जावो,थारा कांई २ दोष बतावां रे ।।११

प्रामणा तेडावा वालो घर में न होवे, तो दूजा कनांसुं तेडावे।
प्रामणा री चालतो सागे राखी,तेड्यो जातो शर्म न आवे रे।।कु.१२
और घरों में गोचरी कम जावो, जावो तो टुकडो करावो।
आपरा पन्थ में गोचरी जावो, भर भर पातरा लावो रे।।कु.१३
दूजा ने देखावा टुकडोक बेहरो, या तो कपटरी वातो।
पन्थ रा घर ताजा देखो जठे, खाली करावो पातो रे।।कु.१४
लूखी घाट ने लूखी थूली, सुक्का सोगरा लूखी रोटी।
थोड़ोसो टूकड़ो दे खप नहीं म्हारे,कुण होवे निकमो खोटी रे।।कु.१५
दूध पेडा ने कलाकंद जलेबी, घेवर बर्फी ने लाडू।
ताजा देखी ने मन लागो ए बाई, ठेरजा पातरा काढूं रे।।कु.१६
पाली री तो पाव मिठाई, निन्हव कहे नित खाणी।
कंदोई री हाठ सूं उभा तोलावे,थां री भावना री हुई धूल धाणी रे
।। कु.१७

गृहस्थी मिठा रो लेखो करावे, दाम तो जमा करावे।
कपटी केवे मैं तो मोल न लेवां, तो उभा किम तोलावे रे।।कु.१८
वीन्द तो शंकतो छाने तोलावे, निन्दव तो छोडेरे लेवे।
नित्यप्रति ताजामाल जोखावो, थारे चोथो व्रतकिम रेवे रे
।।कु.१९
सरस आहार नित्य साधु न करे, उत्तराध्येन संभालो।
सातमीं वाड तो शील री भागी, वलि बोले ज्यों मतवालो रे
।।कु.२०
रीता हाथां री वाया भावना भावे, दर्शन रे मिस आवे।
खील्या तो पूरा भर्‌या मेवा सूं,घूंघट में गटकावे रे।।कु.२१

आज तो सामो म्हारा मन मां आई, दाखां ने पिस्ता लाई ।
जीवते धणी पूरो काम न पडतो, मूआँ पछे भावड क्यूं आई रे ॥२२

गूंद वदाम ने चटक काजुकलिया, अर्ज करूं कर जोड़ो।
निन्हव ठिकाणे भावना भावे, स्वामी कर्म हमारा तोडो रे ॥कु.२३

थोडो खावा रो मिस करी ने, घणो वेरायतो देवे।
निन्हव पिण हाथ मांडी ने, आपरा मुकाम मां लेवे रे ॥कु.२४

वीन्द बीन्दणी वाँटी खावे तजाणो, जणी पर मांडो लूंटा लूंटो ।
नवो जोवन आयो साहासो भोगवे, कर्म हियो दोनुं फूटो रे ॥कु.२५

विधवा तो वीन्दणी ज्यूं बण बैठी, अणी मिस खाणी आवे ।
निन्हव वणियो वीन्द तणी परे, नित्य नवा बनोला खावे रे ।२६

वीन्द वनोले एडी वस्तु न जीमे, जेडी ताजी तू भावना खावे ।
पछे बायां में तू बैठे उघाडो, शर्म जरा नहीं लावे रे ॥कु.॥२७

दोहा

अंगोपांग ने निरखतां, पडे शील में भंग ।
स्थिर मन पिण रहवे नहीं, देख उघाड़ो अंग ॥१॥

एक काचलो में लिखे, सांगली[1] सांगला साथ ।
बाया रो तो केणो किसो, हलका ज्यांरा हाथ ॥२॥

---

१. सांगली=भेषधारिणी और सांगला=भेषधारी को कहते हैं ।

[तीयोतर

ढाल दूसरी

राग : साधु थे सूत्र भणी शूं कीधो

बायाँ सुं पडचो घणेरो राखे, सटपट केई बणावे ।
जोवणां सु पडचो नहीं राखे तो, एडी भावना कुण भावे ।।१

निन्हव एडी भावना थापशूं कीधो, गृहस्थी घर मां डेरो दीधो ।नि.
थे तो मोह मदिरा रो प्यालो पीधो, थे मारग नरक रो लीधो ।।
निन्हव एडी भावना थाप शूं कोधो ।।टेर।।

विधवा बाई तो खूणे बैठी, बखाण जाय सुणावो ।
बाजोट ढाली ने बे' हरङगो, मगता रे अंतराय पडावो ।।नि.।।

मगता रे तो अन्तराय लागी, आप तो बण रह्यो पुष्ट ।
दशवैकालिक सूत्र में देखो, हुवो संजम सुँ भ्रष्ट ।।नि ।।

जरा रोगी ने तपसी साधु, जिण रो लेखो लेणो ।
तीन कारण बिन गृहस्थी घर बैठे,इण भ्रष्टचां ने कांई केणो ।नि.।

कपटी अन्तर घर रो नाम बतावे, अन्तर में बैठे खूणावाली ।
नागो ने भूंगो दोई सरीखा मिलिया, कुण करे थारी रखवाली ।।

गृहस्थी घर बैठा दोष उपजे, शील री वाड तो भागे ।
बैठो उघाड़ो ने दूंद दूंवाडो, थारे देवियाँ बैठी मूंडा आगे ।।

खूणावाली ने तो जाय सुणावो, वैश्या रा भडवा ज्यों गावो ।।
खूणावाली तो गाम में घणी लाधे, करसा रे घरे क्यूं नी जावो ।।७

करसा रे घर कूण पातरा पूरे, ताजा माल हाथे नहीं आवे ।
एडी भावना पण वे भाय न जाणे, मतलब बिन कुण जावे ।।८

धर्म जाणो तो सघला ने जाय सुणावो, दुखिया घणा जगमाई ।
यो स्वार्थ थारो पेट भरण रो, प्रत्यक्ष मांडी ठगाई ।।९

सूंकिलो मंत्री तो राज बिगाड़े, ये कुगुरु धर्म डूबोवे ।
गृहस्थी सुं पडचो राखे पापिडा, घर घर रोवणो रोवे ।।१०

शोग में पामणा रोता आवे, ज्यांने ताजा माल जिमावे ।
शोग में निन्हव गाय सुणावे तो, व्याने ही ताजा वेहरावे ।।११

पामणा निन्हव एक सरीखा, वे रोवे ने ये गावे ।
जगत् व्यवहार पामणा राखे, निन्हव पेट भरावे ।।१२

सांगली महासतियाँ नाम धरावे, सेजाब पटली पाडी ।
वृहत्कल्प में पटली वर्जी थारे, डोयला ज्यूं बांय उघाड़ी ।।१३

दब दब चाले ने सांग लजावे, गृहस्थी घर बैठी गावे ।
जाणे के वैश्या रा ताहिफा बैठा, रागां काढ रिंजावे ।।१४

वैश्या तो गावे दाम री गर्जी, सांगली पेट रे काजो ।
वैश्या जूं फाटो मूंडो कर बैठी, खोई जगत् री लाजो ।।१५

पहली तो उपमा वैश्या री दीधी, दूजी मगती री लागे ।
मगती पण घर घर में गावे, उभी बारणां रे आगे ।।१६

मगती तो बारणे उभी गावे, जिण ने टुकड़ो पूरो नहीं नाखे ।
सांगली बैठी आगी धसने, जिण री खातर घणी राखे ।।१७

बापड़ी भगति मेहनत उठावे, तोही पेट पूरो नहीं थावे ।
या बैठी गावे ने फांद बधावे, भावना ताजी चहावे ॥१८

सांगली भगति दोही एक सरीखी, घर घर जाय ने कूके ।
इतरो फरक वा माहे वा बहारे, ताजो घर देखी गावा ढूके ॥१६

सांगला सांगलो मिलकर दोही, ठग ठग जग माँही खावे ।
भोला गृहस्थो भेद न जाणे, डूबा लारे डूब्या जावे ॥२०

इम घर घर मांहि गाय सुणातां, प्रीत लगाई गृह सागे ।
कुंडा पन्थ ज्यूं भूंडो चलायो, ते विधी सुणजो आगे ॥२१

दोहा

ताजो क्षेत्र देख ने, परिचय बांधे पूर ।
पछे विहार निन्हव करे, पूरो न उगे सूर ॥१॥

पेले दिन हुई चेतावणी, बाया सूंखड़ी त्यार ।
भातो बांध लारे लियो, लग्यो कुगुरु सुँ प्यार ॥२॥

ढाल तीसरी

राग : सूतर पर समता रंग भर वर्षे

निन्हव विहार में लारे पोचावा,
रीता हाथां री बाया जावे ।
कटोरदान पूरा मिठा सु भरिया,
मार्ग में भावना भावे ॥१

मिथ्यात्वी भावना ने संग ले चाल्यो,
घणा जीवों रे घोचो थे घाल्यो ।
थे तो नकटा रा पन्थ ज्यूं झाल्यो,
अब नहीं रे वे किणरो पाल्यो ॥टेर॥

काचा पाणी रा घड़ा माथे लिधा,
थोड़ी सी नाखी वानी ।
थाके जठे विसरामो लेवे,
थारे बाया बैठे एक कानी ॥मि०॥२

कटोरदान खोल्यो मिठाई देखी,
निन्हव पातरा मांडे ।
सघला री ताजी ताजी भावना लिधी,
खाय क्यों सांग ने भांडे ॥मि०॥३

[सिवराय

काचा पाणी सरीखो निन्हव,
पाणी ले गट गट पीवे।
लांबा विहार थलिया रा करणा,
गृहस्थी नहीं राखे तो किम जीवे ॥४

भूखा होवे जठे माल परूसे,
तिरखा व्हें पाणी घाले।
कुण उपाडी ने दोरो हुवे थारे,
सीधा वेठ्या लारे चाले ॥५

दो कोश सिवाय आहार न ले जाणो,
मरजादा बांधी जिणंदो।
निन्हव रे सेजे गृहस्थी उपाडे,
मिट गयो कल्प रो फंदो ॥६

गृहस्थ्यां ने पिण वश कर राख्या,
झूठ बोली ने खोवे मालो।
मैं तो म्हारे खावा सारु ले जावां,
या देखी है कपटियों री चालो ॥७

दूजे काम जो गाम जावे तो,
ताजा माल कम लेवे।
यो तो प्रत्यक्ष साधां रे कारण,
डूवे दोषिला किम देवे ॥८

मारवाड़ गृहस्थी गाम सिधावे,
काची रसोई रोट्या ले जावे।

निन्हव पोचावा जावे जठे तलमा,
पुड्या ने माल वणावे ॥९
पूज्य लारे पिण लश्कर रेवे,
आहार पाणी री पड़े अबकाई ।
गृहस्थ्यां रो खटलो लारे राखो थारे,
बण जावे सब जोगवाई ॥१०
चार सो पांच सो कोशा रे ताहीं,
सेवा रा बंधा करावे ।
जो सेवा में गृहस्थी नहीं रेवे तो,
थांरो पेट कुण भरावे ॥११
भाव नहीं होवे तो ही थारे केणां सुं,
वीस कोशां रो बंधो मांग्यो ।
जिण ने चालिस कोश को बंधो करावो,
पेलो महाव्रत भांग्यो ॥१२
एक भाग्यो ज्यांरे पांचों ही भाग्या,
वांछी जीवों री घातो ।
पेट रो अरथी ने जीभ्या रो गर्द्धी,
थे मांड्यो नरक रो खातो ॥१३
गृहस्थी रे लारे विहार न करणो,
प्रायश्चित नशीथ रे मांही ।
गृहस्थी रो साज प्रत्यक्ष वंच्यो,
भ्रष्ट हुवो के नांही ॥१४

गाडा परुण केई लारे चाले,
कई कोशा तांई जावे।
मार्ग में हरि लट गिंडोला,
जोवां ने घणा ही हणावे ॥१५

अनेक ठोड उतरे जिण ठामें,
ठाम ठाम रसोई निपजावे।
सांग धारयां ने शरम न आवे,
भर भर पातरा लावे ॥१६

गाम गाम रा गृहस्थी भेला होवे,
न्यारी न्यारी गोठा करावे।
सघली सरभरा त्यारी करी ने पछे,
निन्हव ने भावना भावे ॥१७

पांच जणां रो आरम्भ होवे तो,
दूणो डोडो माल बणावे।
आधा कर्मी लेवे अधर्मी,
मर ने दुर्गति जावे ॥१८

पर ने तो उपदेश बतावे,
दोषिलो आहार वेरावे।
गर्भ के माही काटी ने काढे,
एसा तू फेल मचावे ॥१६

आप परुपणी तिखो वतावे,
पण दोषिलो आहार ज खावे।

हाथी रा दाँत देखावारा न्यारा,
खावा रा न्यारा रखावे ॥२०

अगनि में जितरो लकडो नाखे,
तितरो तो बलतो जावे।
निन्हव ने दोषिलो जितरो वेरावे,
तितरो ही खप जावे ॥२१

सहस्र गृहान्तर आधाकर्मी,
साधु जो लेणो चावे।
मच्छ ज्यों अनन्ती वार वो मरसी,
सुयगडांग दरसावे ॥२२

एडी बाता जो सूत्र में आवे थे,
सुण ने काना हेठे काढो।
अणी भव वांरे लालच लागो,
पर भव पाडसी डाढो ॥२३

कन्दोइयां री दुकानां थारे लारे रेवे,
आप रा पन्थ रो देखो मोको।
दूसरा क्षेत्र में शंक ज राखे,
मन में रेवे थारे धोको ॥२४

चार पांच साधु गामड्यां में जावे,
आहार पाणी री अडचन रेवै।
थारे पूज्य वोन्द गृहस्थी जान्या लारे,
जद कुण परिसह सेवे ॥२५

सिंघा रो तो टोलो न लाधे,
निशंक फिरे वन माहिं।
होवे गाडर टोलो ग्वाल न रेवे तो,
सिंघां आगे टीके नाही ॥३१

सिंघ समान उत्तम मुनि जाणो,
जांको डर थाने आवे।
तिण सुं चेलाँ री लेवे तू हाजरी,
वलि नित्य नवा लेख लिखावे ॥३२

चोर होवे जांरी राज लेवे हाजरी,
साहुकारां ने कुण बोलावे।
चोर मेणा जिम थे चेला ने जाण्यां,
नित हाजरी ले पेठ उठावे ॥३३

अनन्त जिन हुआ कह्या सूत्र में,
नहीं बताई या रीतो।
चेला विचारा थारी वेठ करे नित्य,
ज्याने उलटा करे फजितो ॥३४

चेला ही पिण ऐसा मिलिया,
जैसा मूढ गिमार।
खावा उपर चित्त दियो ज्यांने,
न तजे पूज्य री लार ॥३५

जाभो तो खावा ने मिल जावे,
ने ताजो पावे नीर।
गृहस्थी रे घर रे वाने मिलतो,
सुख माहि रहे शरीर ॥३६

ढाल चौथी

राग–पनजी मूंढे बोल

निन्हव आहार की कही भावना,
अब जल री सुणजो बातों रे।
काचा पाणी रा माटा में बानि नाख,
जीवों री करे घातों रे ॥१

सिर मत धूणजो रे सिर मत धूणजो रे,
पाखण्डी भावना पाणी री सुणजो रे ॥टेर

पाको पाणी कही भावे भावना,
तूम्बा भर भर लेवे रे।
कुगुरु भर नदी में डूबावे,
थारे लारे क्यों वे वे रे ॥सिर०॥२

गामों में कुभारों री आवे पुकारो,
सब ठाम कर दिया खालो रे।
गृहस्थी दाम दे उणां ने दबावे,
निन्दा न जावे चालो रे ॥ सिर०॥३

मारवाड रा कई गामों में,
पाणी रो घणो है तासो रे।
मोटा ठाम पाणी भर मूंदी,
राखे कई मासो रे ॥सिर०॥४

काम पड़े जद मूंदण खोले,
वो ही पाणी निन्हव लेवे वे।
द्रव्ये तो भेख भाव रा गृहस्थी,
दो ही पख सेवे रे ॥सिर०॥५

यो पाणी कहो किम फरसाणो,
तो निन्हव यो बोले रे।
मूंदण खेरो पडचो पाणी में,
फरसाणो इण तोले रे ॥सिर०॥६

एडी प्ररुपणा करने डूबे,
बोगाँ ने बहकावे रे।
पोली मुठी भरी जाण बालुडो,
दौड़ी आवे रे ॥सिर०॥७

मुठी खोल्या भ्रम निकले,
तो ही न समझे बालो रे।
प्रत्यक्ष लेवे काचो पानी,
चतुर निहालो रे ॥सिर०॥८

खेरो पडिया किम फरसावे,
माटो भरियो पाणी रे।

निन्हवां रा भरमाया बोगा,
खरा अज्ञानी रे ।।सिर०।।९

धोवे तो वो धोवण वाजे,
तपाया ऊनो पाणी रे ।
इक्कीस जात रा पाणी में,
नहीं वानि जाणी रे ।।सिर०।।१०

पाणी वानि रो पाणी वानि रो,
इण काढ्यो छन्डेला ने मिठो लागे रे ।टेर।

आगे हुआ कई साधु श्रावक,
नहीं बताई या रीतोरे ।
काचो पाणी पिवो हुवे दोही ।
भव फजोतो रे ।।पाणी।।११

धोवण कडवो चरको लागे,
निन्हव ने नहीं भावे रे ।
स्वादीलो यो गट-गट पाणी,
उतर जावे रे ।।पाणी।।१२
कुवा निवाण रो पाणी गंधावे,
दुनिया नाख दे वानी रे ।
दुगन्ध सुगन्ध होजाय निन्हव रे,
मन में मानी रे ।।पाणी।।१३

निन्हव जाणे पाको पाणी,
स्वच्छ काच सो होवे रे ।

संजम री नहीं चाव इणां ने,
स्वाद ने रोवे रे ।।पाणी।।१४

महादेव[1] बावडी रो पाणी पूछे,
भारी तो नहीं भावे रे।
मीठो मीठो पाणी भर भर,
तूम्बा लावे रे ।।पाणी।।१५

के निर्दोषी ले दोषिलो,
कैसो थारो चालो रे।
त्याग करो वानि पाणी रो,
मिट जा ढालो रे ।।पाणी।।१६

खन्धवाला रा नाम सु वेरो,
कतरो उगरे पाणी रे।
भर भर तुम्बा लावो बतावो,
हिये हाथ आणी रे ।।पाणी।।१७

आका घर में खंध हो जावे,
जो करो सर्व पंडेरो रे।
कुवा में वानि नाख शहर में,
फिरो डडेरो रे ।।पाणी।।१८

एडा खन्ध तो सोरा ही करणा,
जरा जोर नहीं आवे रे।

---

१. गोगून्दा (मेवाड़) में यह वापिका है।

निन्हव भक्तों रा पोबारा,

पासा ढल जावे रे ।।पाणी।।१६

ठिकरी तपा घडा में नाखे,

ले निन्हव होई आंधो रे।

मां दा ने मारयो पाणी पावे,

यो संजम रो मांदो रे ।।पाणी।।२०

तीन ऊकाले ऊनो पाणी,

जो साधु ने लेणो रे।

कितराक जीव फरसे ठीकरी सुं,

तो फिर क्यूं देणो रे ।।पाणी।।२१

थोडो सो गारा रो नांखे ढेकलो,

अचित्त कही ने वेहरो रे।

देवण लेवण वाला दोयों रो,

नरक में डेरो रे ।।पाणी।।२२

ढेकला सुं जो जीव फरस जा,

तालाब रो पाणी रे।

घणा ढेकल्यां डोलो तो ही,

नहीं लो छाणी रे।।पाणी।।२३

वटे चोपो ढांढो पीवे मल,

मुत्रादिक फरसे रे।

अणी करता है दोष थोडो मना,

कोई नहीं करसे रे ।।पाणी।।२४

वो पाणी तो दीसे सूघलो,
निन्हव ने नहीं गमतो रे।
ठीकरी ढगल्यां रा पाणी खातिर,
घर घर भमतो रे ॥पाणी॥२५

प्रत्यक्ष काचा पाणी पिवे ज्यांने,
साधु मूढ ठेरावे रे।
थां करता गृहस्थी आच्छा यों,
ठग नहीं खावे रे ॥पाणी॥२६

दोषिलो पाणी थापे मूरख,
पेट भरण रे सारो रे।
पाणी जीवों रा वैर बांध करे,
पाप रो भारो रे ॥पाणी॥२७

दोहा

पेट भरण रे कारणे, भलो भूंडो गिणे न कोय।
व्हाला रा गटका करे, सूत्र गिनाता जोय ॥१
मांस भख्यो बेटी तणो, उण तो करुणा आण।
निन्हव तो निर्दय पणे, हणे प्राणी का प्राण ॥२[1]

---

१. ज्ञाता सूत्र श्रु. १ अ. १८

ढाल पांचवीं

राग–म्हलगो रेहनो

ओर अनेक दोष सेवतां, कई कई के संभलावूं।
दुपच्चक्खाण करावे गृहस्थी ने, संक्षेप बात बतावूं ।।१

भावना काढी भूंडी, ये मिल मिल मूंड्यां ने मूंडी। भा०
दीखे कपट री कुंडी, कटे न सकरे खोटी हूंडी।
मिले नरक जानें ऊंडी ।।टेर।।

गाम गाम साधां ने चौमासे मेले, ठाम ठाम करावे पच्चक्खाणो।
पूज्य दर्शन बिन हरि नहीं खाणो, शील पाल रात न खाणो ।।
भावना० ।।२

खोटा पच्चक्खाण सूत्र में भाख्या, जिन रो वचन उल्यांग्यो।
आपरी महिमा वधावण काजे, दया रो रुखडो भांग्यो ।।
भावना० ।।३

थारे केण सु गृहस्थी केई कोशा जावे, थे हुवा हिंसा रा कामी।
आपरो पेट भरण रे कारण, घणा जीवों रा हुवा हरामी।
भावना० ।।४

गृहस्थी सोगन री संकडाई में आया, भाव नहीं होवे तोही जावे।
कितरे वेगा व्रत बाहर निकलां, पूज्य रा दर्शन थावे ॥
भावना० ॥५

पूज्य मिल्या छूरियाँ चालण लागी, कंदमूलादिक खावे।
कुशील सेवे ने रात रा जीमे, पूज्य रे सिर चढावे ॥
भावना० ॥६

यो दृष्टान्त चाल्यो सूत्र में, रजपूत[1] घर पोष्यो बकरो।
जमाई नहीं मिले जितरे नहीं मारूं, माल खवाई कीनो तकडो ॥
भावना० ॥७

जतरे पामणा जमाई नहीं आवे, तितरे बकरो सुख पावे।
जमाई मिलिया ने बकरा गलिया, परभव में पोचावे ॥
भावना० ॥८

बकरा नि-परे कंदमूल जाणो, रजपूत नि-परे गृहस्थी।
जमाई पामणा ज्यों पूज्य मिलिया, जद याद आवे यांने मस्ती ॥
भावना० ॥९

बकरो तो जमाई नहीं चाहवे, कन्दमूल नहीं चाहवे पूजो।
अणी पूज्य जमा रा दर्शण हुवा, भक्षण करेला अबूजो ॥
भावना० ॥१०

जितरे पूज्य रा दर्शण नहीं हुआ, घणा जीवों ने रेती सातो।
पापी मिलिया ने सोगन खुलिया, पछे जीवों री करे घातो ॥
भावना० ॥११

---

१. उत्तराध्ययन अ. ७ देखें।

बकरा ज्यूं हरिजीव धूजण लागा, थारा दर्शण कीधा पडे धोको।
पूज्य जम देख्या ने हुवो जीवों रो जमरो, यो नहीं मिले तो ही चोको ॥भावना० ॥१

साधु मिल्यां जीवों ने सुख उपजे, यो तो उलटो लागो फन्दो।
देख्यो मूंडो सामे हुवो है भूंडो, थने पूज्य केवा के जमजंदो ॥ भावना० ॥१

कपटी कहे गृहस्थी रो साहज न वंचणो, तो दर्शण ने किम वंचो।
प्रत्यक्ष साहज वंचो आरम्भ में, गृहस्थी बुलाया लारे खंचो ॥ भावना० ॥१

उत्तराध्येन अध्येन पेंतीस में, गृहस्थी री वंदणा नहीं वंछणी।[1]
थे दर्शण रा तो बंधा करावो, फेर क्यूं करो कुत्ता भसणी ॥ भावना० ॥१

साज निवंचो तो बंधा क्यूं करावो, पातरा भर क्यूं लावो।
थे गोठ में वेरण रा त्याग करो तो, मेट दे गृहस्थी आवो जावो ॥ भावना० ॥१

ऋषभदेवजी सु आज री पीढी, असंख्याता कोडा कोडी थावे।
जिणसुं अणंत गुणा एक रसोई में, जीव घमसान हो जावे ॥ भावना० ॥१७

---

१. अच्चणं रयणं चेव,
वंदणं पूयणं तहा
इड्ढीसक्कारसम्माणं
मणसा वि न पत्थए
—उत्तरा, १८।३५

छई आरा रा करे मिनख इकट्ठा, इणसुं पिण जीव अणंतारे ।
छ काया ने जमिकन्द हणीणे, थे खावो सर्व जणां रे ॥
भावना० ॥१८

एक रसोई में इतरा हणाणा, तो गाम गाम गोठ खडी छे ।
जणी आरम्भ में थांने बुलावे, थारी भावना में धूल पडी छे ॥
भावना० ॥१९

घणा जीवों रो हुवो घमसाणो, ने भावना भाई ने हर्खाणो ।
जीव मरचा ज्यारी पीडा न जाणे, थे खावो कर ने रसाणो ॥
भावना० ॥२०

अनन्त चौबीसी आगेई हुई, एडी भावना कणी नहीं भाई ।
पेट भरण री भावना या तो, थारे इज पांती आई ॥
भावना० ॥२१

बारे भावना तो सूत्र में चाली, तेरमीं तेरे काडी ।
एक जिभ्या रस रो गृद्धि होय ने, दया री जड ने वाडी ॥
भावना० ॥२२

गृहस्थी बन्ध करे तो आडम्बर न दीने, पाखंडी लोक पूजन्ता ।
मिठी गोठ कर भावना भावे, थे गृहस्थी रे लारे बुजन्ता ॥
भावना० ॥२३

दोहा

रजपूत गोठ खारी करे, इण पूज्य रे मिठी गोठ ।
माल पांने पडतां थरकां, कहो कुण देखे खोट ॥१
इण मिस आडम्बर घणो, दीसे लोक मझार ।
गृहस्थी साथ रेवे नहीं तो, कुण पूछेला सार ॥२

ढाल छठी ॥ ०

राग—नगरो खूब बणो छे जी ।

पेट भरण पूज्य वणियो ठालो, खाया लोका रा मालो ।
दुष्ट पुष्ट वधायो गालो, आगे नर कां होसी हवालो ॥१

भावना विकल तणी छे जी, निगुरां रो कुण धणी छे जी ।
ज्यारी बात घणी छे जी, थोड़ी तो मैं भी सुणी छे जी ॥टेर॥

पाछला पुण्य सुं थुं रे पूजावे, खावे लोकों रो आछो आछो ।
उंधी प्ररुपणा मर होसी पोठ्यो, भार उपाडी देसी पाछो ॥
भावना० ॥२

बड़ा ऊंट ज्यूं पूज्य आगे चाल्यो, लारे कतार परिवारो ।
थारे लारे चारों तीर्थ डूबा, अणी बड़ा ऊंठ री लारो ॥
भावना० ॥३

पूज्य सूझतो आहार गवेषे तो, दूजा साधु ने रेवे ज्ञानो ।
थोतो धान ने आंधा उंदरा, गुरु जैसा जजमानो ॥
भावना० ॥४

फूटी तो नाव ने आंधो नावड्यो, कुकर उतरे पारो।
आंधां नावड्या ज्युं पूज्य वणियो, लारे ले डूबो परिवारो॥
भावना० ॥५

जीव दया में पाप ज केवे, बैठो इण फूटी नावो।
आंधो होय गृहस्थी ने केवे, म्हारा पेट री भावना भावो॥
भावना० ॥६

भोला गृहस्थी तो भेद न जाणे, थांने देई ने राजी होवे।
माल खोवे फूटी नाव न जोवे, थारे लारे अणां ने क्यूं डूबोवे॥
भावना० ॥७

भावना एडी थे टालने काढी, कोई केवे तो दीसे भूंडो।
थारा पन्थ में जो कोई भलियो, वो कुंडा पन्थियों रो कुंडो॥
भावना० ॥८

व्यभिचारिणी पर पुरुषों सु खावे, गर्भ रह्या दीसे न रूडी।
माथे धणी रो नाम हुवे तो, चूडी भेली खट जावे चूडी॥
भावना० ॥९

धणी रे नाम सु खावे छिन्नारण, पर पुरुषों सु सागे।
ज्यूं भावना नाम सु खावे निन्हव, और उपमा नहीं लागे॥
भावना० ॥१०

जती लोक खमासण केवे, भमर भट्टारक बोले।
निन्हव तीजी भावना काढी, ये तीनों सम तोले॥
भावना० ॥११

खमासण होवे जटे जति बोलावे, भमर भट्टारक आवे।
भावना तीजी जटे निन्हव जावे, ताजा भोजन लावे॥
भावना० ॥१२

भट्टारक जति श्री पूज्य रेतो, आराम एसो नहीं पावे।
बाहर भित्तर एक सरीखा, ठग विद्या नहीं दरसावे॥
भावना० ॥१३

गहणो पितल रो मोल पितल रो, लेता नहीं ठगावे।
ऊपर सोना को भोल हुवे तो, लेणहारो डूब जावे॥
भावना० ॥१४

पीतल ज्युं थांपे गुण गृहस्थिया रा, भेख सोना रो झोलो।
देखी ने डूब जावे गृहस्थी, जो कोई होवे भोलो॥
भावना० ॥१५

दूध धोलो पण गाय आकरो, अन्तर घणो पिछाणो।
आक दूध सुं निन्हव अधिका, ज़हर हलाहल जाणो॥
भावना० ॥१६

कपटी सिंघ ज्युं बणिया मुनिवर, बन्दर ने गटकावे।
जिनको चाल ने तिकी प्ररूपणी, पेट कतरणी वावे॥
भावना० ॥१७

ऊंट रो मिंगणो खांड में पडियो, उपर चासणी लागी।
माय खातर जिम थारी वातो, एडी चाल थारी नागी॥
भावना० ॥१८

काली साँप हडक्यो कुत्तो काटे तो, इण भव में दुःख पावे ।
निन्हव हडक्या री लाल लागी तो, भव भव वेंडो गेलो थावे ॥
भावना० ॥१६

निन्हव सरदारों रो भूत लागां पछे, दान देता जीव न चाले ।
थां करतां वे भला जति सन्यासी, एडा घोचा तो नहीं घाले ॥
भावना० ॥२०

जति भट्टारक में यो गुण है, दान दया तो नहीं निषेधे ।
निन्हव कुलाडो ले लारे पडिया, दान दया ने छेदे ॥
भावना० ॥२१

सात निन्हव पिण आगे हुवा, दान दया न उथापी ।
आठमों निन्हव सिद्ध पाहुडिया में, निकल्यो मोटो पापी ॥
भावना० ॥२२

निन्हव रो शिरोमणि यो तो, हुवो कपट रो कूंडो ।
दान दया उथापी जिण सुं, गयो नरक में ऊंडो ॥
भावना० ॥२३

इम सुणी ने इण निन्हव री थे, संगत कोई मति कीजो ।
थोडी ओलखाण और बतावूं, भव्य जीवाँ सुण लीजो ॥
भावना० ॥२४

दोहा

पोते खावण रे कारणे, ऊंधी दीवी प्ररूप ।
दूजा ने देणो नहीं, अंध पड्यो मोह कूप ॥१॥
जाणे दया रा खाना मध्ये, दे शुद्ध धर्म बताय ।
तो मेरो अधिको किसूं, रहेसी जग रे माय ॥२॥

ढाल सातवीं

राग—अरो लंकागढ में आई रे असवारो राजा राम को

आप रा खाणां में धर्म बतावो, दूजा रा खाणा में पाप।
घणा जीवों रे गले छींकी दीनी, भव भव पावोला संताप रे ॥१

अवनीत के थंबा, लायो कठासु ऐसी भावना।
मने आवे अचंभा, नरक जावण री दीसे चावना।
हाथ कर कर लंबा, खर भूंखे रे जैसे गावना।
ये हीज कर भंबा, खोटी परूपणी आच्छा खावना ॥टेर॥

खाणां जाणां में धर्म बतावो, तो क्यु करे बेला तेला।
वार वार खावे वार वार जावे, घणो धर्म होवेला ॥
अव० ॥२

धर्म काम तो ज्यादा करणो, जिण ने बखाणे गुरु देवो।
दो वार खातो चार वार खावे, व्हांने घन क्यु निकेवो रे ॥
अव० ॥३

थारा खाणां में धर्म बतावो जद, गृहस्थी खूब वेरावे।
दोषिलो देतो नहीं डरपे, एकन्त थांने घपावे रे ॥
अव० ॥४

तमाखू पीवण कोई मांगे वासदी, धर्म होसी घणो थांने ।
वो गृहस्थी दे धर्म नाम सुं, पाप केवे कुण मांने रे ।।
अव० ।।५

थांरे खाणा में धर्म कही मांगो, मांगे रांक भिखारी ।
रांक बापडो बोले खुलासे, थांरा कपट री गत न्यारी रे ।।
अव० ।।६

दूजा ने दीधा पाप न बोले, सम धर्म कही लेवे ।
थूं तो रांक थकी पिण भूंडो, छींकी दूजा रे देवे रे ।।
अव० ।।७

लापी लाडू खाणी दया बतावे तो, भावना कही धूल धाणी ।
दया निषेधे ज्यूं भावना निषेधे तो, कुण देवे अन्न पाणी रे ।।
अव० ।।८

निन्हव दया कठा सुं लावे, पोते कसर पड जावे ।
दया रा खाणां में धर्म बतावे तो, थारा पातरा कुण भरावे रे ।।
अव० ।।९

कह्यो मान मिथ्यात्वी, दया परूपी मूढ सीख रे ।
थे बिना भण्या थी, भावना थापी ने मांगी भीख रे ।
थने आवे क्यांथी, नहीं रह्यो गुरु रे नजीक रे ।
पिण जाब पूछ्या थी, आगे पडेला थने ठीक रे ।।टेर।।

गुरु गिर वा गुणवन्त मिल्या था, तिण ने तूं छिटकाया ।
निगुरां ने मारग नहीं लाधो जद, पड्यो भर्म की माया रे ।।
कह्यो० ।।१०

श्रावक खाणां में पाप बतायो, मूल थी दया उत्थापी।
पेट भावना खोटी थापी, डूब गया थे पापी रे॥
कह्यो० ॥११

भावना निषेधे तो थारे मेल न आवे, पेट रो पूरो न थावे।
दया निषेधी दूजा जीवों ने, दुःख देवणो चावे रे॥
कह्यो० ॥१२

दया पलावूं तो निन्हव जाणें, श्रावक माहो माहि खावे।
अणी वात रो लागो झूरणो, म्हारे पांति नहीं आवे रे॥
कह्यो० ॥१३

जिण सुं दया थनें लागी खारी, भावना लागी व्हाली।
खूब दृढाय ने भोला जीवों रे, घट में दीधी घाली रे॥
कह्यो० ॥१४

गाडी फस गई अब नहीं निकसे, पेट भर राजी होवे।
लाडू खावण थारी भावना, अब दया ने क्युं रोवे रे॥
कह्यो० ॥१५

दयारी निन्दा काने सुण ने, लिया निन्हव ने रोक।
या जोड सुणी ने रे गया चूपका, भावना दया री सोक रे॥
कह्यो० ॥१६

सोक आया सु दवे सोकडली, दूध ऊफाणो दवे पाणी।
भावना सु दवे दया री निन्दा, ज्युं लगे वन्दुक निशाणी रे॥
कह्यो० ॥१७

ताव रो पालण कुटक कीरायतो, निन्द रो पालण छींक ।
दया निन्दा रो पालण भावना, अब दया दया मत भींक रे ॥
कह्यो० ॥१८

रोग पीडाणो रोगी रे चाहवे, वैद पे ओखद करावे ।
ज्युं दया रोग लागो निन्हव ऐ, इण भावना सुं मिट जावे रे ॥
कह्यो० ॥१९

दुखे जटे भट ठाढो देवावे, जद होवे आराम ।
दया निन्दा री पीडा निन्हव रे, भावना रो लागे डांम रे ॥
कह्यो० ॥२०

किण रे डाकण लागी भूतणी, कहे मंत्रवादी ने काडो ।
ज्युं दया निन्दारी डाकण लागी, भावना रो दीधो भाडो रे ॥
कह्यो० ॥२१

सांमे टेगडो भुसतो आवे, आडी कर दे ताटी ।
ज्युं निन्हव दया ने भुसवा लागो, भावना री दी मुंडे बाटी रे ॥
कह्यो० ॥२२

दया निन्दा री ढालां कही थे, जिण ऊपर में जोडी ।
कडवी लागे तो लेहूं खमाई, दया निन्दा दो छोडी रे ॥
कह्यो० ॥२३

मिथ्यात्व फल मती लागो इणमें, केई सुणी केई दीठी ।
ओगणगारो धेख पामेला, गुण वाला ने मिट्ठी रे ॥
कह्यो० ॥२४

[एक सौएक

हितकारी सिखावण दीधी, जो दिल माहि धारो।
सुणिया रो परमाण करो तो, दोषिली भावना टारो रे॥
कह्यो० ॥२५

दया धरम रो कियो उजालो, सतरे सडसट साल।
मारवाड में प्रथम पधारिया, अमर पूज्य दयाल रे॥
कह्यो० ॥२६

जिण सिंघाडा माहिं दीपता, पूज्यवर पुनमचंद।
रिख नेमिचन्द जोडी जुगत सु, सात ढालां सम्बन्ध रे॥
कह्यो० ॥२७

संवत् उगणीसे साठ के वर्षे, शहर पचपदरा माई।
पूज्य पुनम प्रशाद चौमासे, रिख नेमिचंद गाई रे॥
कह्यो० ॥२८

सात ढाल्यो सम्पूर्ण कीधो, निन्हव भावना केरो।
भरी सभा में गाय सुणावे तो, उठ जावे निन्हव डेरो रे॥
कह्यो० ॥२९

दया निन्दा री ढाल सुं दूणी, भावना री जोडी गाथा।
निन्हव री संगत मत ना करजो, सदा मिले सुख साता रे।
कह्यो० ॥३०

॥ इति निन्हव भावना रो सत्त ढालियो सम्पूर्ण ॥

---

१ सप्त ढालिया—यह एक आलोचनात्मक कृति है। सत्य तथ्य की अभिव्यक्ति कटु अवश्य है जो उस युग-स्मृति को ताजा करती है। हम इसे प्रस्तुत पुस्तक में देना नहीं चाहते थे पर ऐतिहासिक तथ्य को सुरक्षित रखने की दृष्टि से ही यहां पर दी गयी है। प्रबुद्ध पाठक ऐतिहासिक दृष्टि से इसे पढ़ें, उन्हें सत्य तथ्य के स्पष्ट दर्शन होंगे।
—सम्पादक

पक्खी की चौवीसी

दोहा

अरिहन्त सिद्धाचार्य को, उपाध्याय अनगार।
नमन करी पक्खी तणी, कहूँ चौवीसी सुखकार ॥१॥

राग—शूरा हो रणा मांहो झूं झिया

आदि नमूं अरिहन्त ने जी, ऋषभ वृषभ समान।
पक्खी रा खमतखामणा जी ॥टेर॥
अजित शम्भवजी ने वन्दना जी,
प्रणमूं अभिनन्दन भगवान ॥१
आज पनरे दिनों सुं दिन आवियो जी,
म्हारे करणो धर्म रो त्योहार।
व्रत रूपियो भोजन करो जी,
क्षमा को करो सिणगार ॥२
पनरे दिनों में बोल्या चालिया जी,
या किण सु किधी कपट जाल।
किण सुं तो कडवा बोलिया जी,
किण ने देवाई गई गाल ॥३

लुली लुली ने लटका करे जी,
शुद्ध भावां सुं लेवो खमाय।
शल्य कोई राखो मति जी,
शुद्ध करलो] मन वच काय ॥४

किण सुं ही वैर राखो मति जी,
थांरे जीवणो कितरोक काल।
सब सुं ही मित्रता राखजो जी,
जिण सुं दीपेला धर्म रसाल ॥५

सुमति पदम प्रभु ने नमूं जी,
प्रभु भव सागर देवो तार।
सुपार्श्व जिनवर सातमां जी,
चन्दा प्रभुजी रो म्हारे आधार ॥६

सुणो आगे कीधा खमत् खामणा जी,
वीतभय पाटण केरो राय।
सोवन गुलिका दासी तसु जी,
रूप में इन्द्राणी अनुयाय ॥७

चन्द प्रद्योतन तसु ले गयो जी,
नगर उज्जैणी रे माय।
दस राजा ले उदायी चढ्यो जी,
संग्राम कीधो तिहां आय ॥८

चन्द प्रद्योतन ने वांधियो जी,
उण ने साथ में चाल्यो राय।

मार्ग में पजुसण लागिया जी,
संवच्छरी दिन गयो आय ॥९

रसोइदार ने इम के दियो जी,
पच्छे उदायी पौषध दियो ठाय ।
चन्द ने रसोइदार पूछियो जी,
जब चमक्यो चित्त रे माय ॥१०

उदायी जीमें तो मैं पण जीमसुं जी,
रखे जेर नाखी देवेला मार ।
मरवारे डर सुं भूखो रह्यो जी,
सेजे उदायी खमावे तिण वार ॥११

चन्दो कहे करूं न खमतखामणा जी,
म्हारा मन रा पूर्ण करो कोड ।
सोवन गुलिका परणाय दो जी,
जद खमावूं मैं भी कर जोड ॥१२

दूजे दिन पौषध पालने जी,
सोवन गुलिका ने दीनो परणाय ।
सोवनपट्ट बन्धाय ने जी,
पच्छे दियो रे उदायी खमाय ॥१३

राजा उदायी मन में जाणियो जी,
सोवन गुलिका मिली अनन्ती वार ।
पण समकित मिलणी दोहिली जी,
बिन खमाया डूबे काली धार ॥१४

जिण चीज रे कारण झगडो हुवो जी,
देखो वाहीज दोनी है सूंप।
पण अहंकार दिल नहीं राखियो जी,
हो सोला देश रो भूप ॥१५

आगे एडा मोटा झगडा हुंता जी,
देखो वे पण लेता खमाय।
इण पर थे पण खमावजो जी,
ज्यों आत्मा - निर्मल थाय ॥१६

पुष्पदन्त नाम सुहावणो जी,
सुविधि सुबुद्धि रा दातार।
शीतल श्रेयांस प्रभु भला जी,
वासुपूज्य देवो म्हाने तार ॥१७

सुणो आगे न किया खमत्खामणा जी,
देखो नी अभिच्च कुमार।
राजा उदायी तो संजम लियो जी,
भाणेज ने दियो राज भार ॥१८

अभिच्चकुमार रीशावियो जी,
गयो चम्पा कौणिक रे पास।
उदायी मुनि केवल पाय ने जी,
कीनो है शिवपुर वास ॥१९

पडिक्कमणो अभिच्चकुवर करे जी,
रह्यो मन में वेर संभाल

कहे सगला सिद्धों ने हुजो वंदना जी,

एक उदायी दिनो टाल ॥२०

एक टल्या तो अनन्ता टल्या जीं,

अनन्त उदायी गया मोक्ष।

चौरासी लाख खमावता जी,

पण एक सुं राखे मन रीश ॥२१

देखो सिद्धों सुं वैर राखी रह्यो जी,

भारी कर्मा ऐसा जीव होय।

शल राखी ने नीचे गयो जी,

लीजो भगवती सूत्र में जोय ॥२२

विमल निर्मल बुद्धि दीजिये जी,

अनन्त अनन्त गुणधार।

धर्म नमूं शान्ति सोलमाँ जी,

प्रभु शान्ति शान्ति करतार ॥२३

केई कपट सुं करे खमतखामणा जी,

सुणो दृष्टान्त एक नर नार।

सासु रे जमाई आया पामणा जी,

फिकी थूली रांधी तिण वार ॥२४

घीलोडी री नाली में कपासियो जी,

सासु घाल्यो है घृत रेवा काज।

विधि सुं गादी विच्छाय ने जी,

सासु परूसी थूली धर लाज ॥२५

सासु घीलोडी जमाई पे राखने जी,
गुड लेवा ने गई ओरा माय।
जमाई कपासियो शली सुं काढियो जी,
सासु परूसियो गुड तब आय ॥२६

सासु परूसता घृत सब आवियो जी,
जातो आधो लेवूं मैंभी बेंचाय।
जमाई थांरे म्हारे काम किसो पडे जी,
आज भेला जीमा चित्त लाय ॥२७

सासु घृत खावण ने कारणे जी,
भेली बैठन रो कियो है विचार।
म्हारे होली दीवाली आया नहीं जी,
नहीं आया हो तीज तेवार ॥२८

खोबा पाड ने घृत खेंचियो जी,
जमाई जाणी बात विचार।
जब अलिया गलिया सब कर दिया जी,
जमाई थूली ने फिणी तिणवार ॥२६

सासु कहे जमाई जी कांई करो जी,
जमाई कहे भेला करां तेवार।
इण में शंका कोई जाणो मती जी,
आँपाणे साखी श्री करतार ॥३०

इण में झूठ होवे तो प्यालो प्रभु तणो जी,
पीऊँ इम कही गयो गटकाय।

सासु तो रह गई जोवती जी,
ठग्ग उपरलो ठग्ग मिलियो आय ॥३१

द्रव्य दृष्टान्त यह तो जाणजो जी,
भाव दृष्टान्त लीजो जोय।
कपट झपट मन राख ने जी,
ऊपर से खमाया कांई होय ॥३२

कुन्थु वैरी ने कीधा कुन्थुवाँ जी,
अर्हनाथ नमूं जग भाण।
मल्लो बन्दू उगणीसमां जी,
मुनि सुव्रत दो निर्वाण ॥३३

एक कुंभार शाला में उतरिया साधु जी,
छोटो चेलो है ज्यारे लार।
गुरु जी गया है गोचरी जी,
चेलो खेल करे तिणवार ॥३४

कुंभार ठाम घडे मेले तावडे जी,
चेलो कांकरा फेके धर जोश।
ठाम फोडी कहे मिच्छामि दुक्कडं जी,
तब कुभारियां ने आय गयो रोश ॥३५

कुंभार कांकरो कान में मसलियो जी,
तब चेलो रोवे असमान।
चेलो रोवे कहे मिच्छामि दुक्कडं जी,
दोनों रे नहीं अन्तर्ज्ञान ॥३६

ज्यों खमावा रा भेद जाणे नहीं जी,
कर अपराध खमावे फिर जाय ।
जिण बात रा किया खमत्खामणा जी,
वह तो चिन्तवे नहीं मन माय ॥३७

यो तो कुंभार वालो मिच्छामि दुक्कडं जी,
जिण रे दोधां सिद्ध नहीं थाय ।
ज्ञान सहित करो खमत्खामणा जी,
जिणसुं सिधा शिवपुर जाय ॥३८

नमि नमूं इकवीसमां जी,
रिष्ठनेमि बाल ब्रह्मचार ।
पार्श्वनाथ प्रणमूं सदा जी,
महावीर शासन सिनगार ॥३९

सुणो आगे किधा खमत्खामणा जी,
शंख पोक्खली धर ने राग ।
श्री वीर जिनेन्द्र समोसरिया जी,
इण सावत्थी नगरी रे बाग ॥४०

श्रावक सब वन्दन गया जी,
वाणी सुण पाच्छा आया तिणवार ।
शंख कहे मार्ग में चालता जी,
म्हारे मन में यो है विचार ॥४१

आज पक्खी दिन जीमां एकठा जी,
पच्छे पौषध कर जागां धर्म रात ।

तहत्त कियो सगला सुणी जी,
तुरत निपजायो आहार भात ॥४२

शंख भारजा ने पूछ पौषध लियो जी,
मने खाणो कल्पे नहीं आज ।
सगला बाट देखे आया नहीं जी,
जब पोक्खली चाल्या बुलावण काज ॥४३

शंख भार्या पोक्खली ने वंदन करी जी,
दे आसन पूछे चित्त लाय ।
मैं तो शंख रे कारण आवियो जी,
ते कहे पौषधशाला माय ॥४४

तिहां थी पौषधशाला में आविया जी,
इर्यावहि पडिक्कमि धर प्यार ।
शंख श्रावक ने कर वन्दना जी,
कहै चालो जीमण हुवो त्यार ॥४५

शंख कहे खाणो कल्पे नहीं जी,
मैंने पोषध दिनो है ठाय ।
वाह वाह भलो करी भाई तुम्हें जी,
कर क्रोध पोक्खली कहे वाय ॥४६

सब श्रावक सुण क्रोधे धगधगिया जी,
देखो शंख जो कपट री खान ।
कहे किसुं ने करे किसुं जी,
इण रो न्याय करेला भगवान ॥४७

सभी जीमने पौषध ठावियो जी,
जा दूजे दिन वन्दे जिनराय।
शंख जी पण पौषध में चालिया जी,
सब श्रावक हिले तिहां आय ॥४८

प्रभु कहे हिलना करो मति जी,
प्रिय धर्मी दृढधर्मी है येह।
कषाय रा फल शंख पूछिया जी,
सुण श्रावक डरिया है जेह ॥४९

शंख जी री हुण्डी शिकर गई जी,
पोक्खली आदि श्रावक उभा थाय।
शंख ने वन्दना कर खमाविया जी,
लुली लुली शिष नमाय ॥५०

आपां रे काले पक्खी रो दिन गयो जी,
हमां थासुं किधो विखवाद।
शल रहित नमन करां आपने जी,
आप खमजो म्हारो अपराध ॥५१

सूत्र भगवती शतक बारवें जी,
चाल्यो पेला उद्देशा रे माय।
इन विध सुं कीजो खमत्खामणा जी,
जिण सुं भव भव में सुख थाय ॥५२

अनन्त चौवोसी ने नित्य नमूं जी,
वली विरहमान जिन वीस।

गणधर केवली जिन भला जी,
नमावूं तारक गुरु ने शीष ॥५३

साधु साध्वी और श्रावक श्राविका जी,
सब जीवों ने खमावूं वारम्वार ।
सिद्ध आतम साखे करी जी,
मेरा वेर नहीं किण लार ॥५४

त्रिविध त्रिविध खमावतां जी,
भव भव रा फेरा टल जाय ।
आतम होवे निर्मली जी,
संचित कर्मों ने देवो खपाय ॥५५

ज्यों आखो दिन धान्य रखेलियो जी,
शरीर भराणो राख रे मांय ।
सांझे स्नान कियां हुवो उज्जलो जी,
ज्यों पड़िक्कमणो कियां शुध्द थाय ॥५६

कपडो पेरियाँ सेती मेलो हुवे जी,
फिर लागे चींगट घत तैल ।
जीव रूपियो छे यो कापडो जी,
पाप रूपियो लागो मैल ॥५७

आलोयणा रूपी तो अग्नि करो जी,
ज्ञान क्षमा रो जल शुद्ध पाय ।
खमत्खामणा रो साबू करो जी,
जीव रूपियो पट उज्जल थाय ॥५८

साधु ने खमाया बिन थंक न उतारणो जी,
वहत्कल्प सूत्र लेवो जोय ।
इच्छा होवे तो खमावे आगलो जी,
नहीं तो आप खमाया शुद्ध होय ॥५६

दो महिना खमाया बिना निकले जो,
तो साधुपणो होवे दूर ।
चौमासी खमाया बिना निकले जी,
श्रावकपणा में धूल ॥६०

संवच्छरी खमाया बिना निकलें जी,
तो समकित से होवे भ्रष्ट ।
नाम धराया गरज सरे नहीं जी,
खमाया होवे सम्यक्दृष्ट ॥६१

गौतम आनन्द खमाविया जी,
महाशतक रेवती जाण ।
चन्दनबाला मृगावती जी,
खमावतां पाम्यां निर्वाण ॥६२

कुलगुरु ने खमावता जी,
चारों तपस्वी तरिया तत्काल ।
चन्द्र सुन्दर केवल पामिया जी,
संक्षेप कियो वढ़ती जाणी ढाल ॥६३

नरम सु रज ऊंची चढ़े जी,
करडा पत्थर ठोकर खाय ।

नरमाई सु केई गया मोक्ष में जी,
करडा रह्या चौरासी गोता खाय ॥६४

करडाई सु केवल नहीं उपजे जी,
देखो बाहुवली कियो हो मान ।
बारे महिनों तक उभा रह्या जी,
शेवट नमियाँ सु लियो केवलज्ञान ॥६५

वर्षीतप सु अधिकी कही जी,
क्षरण एक नरमाई होय ॥
खमाया सु क्रोध दूरे टले जी,
क्षमा तुल्य तप नहीं कोय ॥६६

किरण सु ही करडाई राखो मती जी,
किरण सु मति राखो वैर विरोध ।
मुंडा आगे जन्मिया केई मर गया जी,
मर गया बड़ा बड़ा जोध ॥६७

सात पीढी पेला वडेरा हुआ जी,
केई किधा झगड़ा विवाद ।
उणां ने तो आज भूली गया जी,
तो थांने कुरण करसी याद ॥६८

मान राखी गया केई नरक में जी,
जठे पड रही जम केरी मार ॥
शुद्ध मन जोय खमाविया जी,
ते पाम्या सुख श्रीकार ॥६९

आलोयाँ सं होवे मोटा देवता जी,
ठाणांग गया प्रभु भाख ।
उपासकदशांग उत्तराध्ययन में,
और भी सूत्रों री साख ॥७०

ओच्छा जीवण रे कारणे जी,
मति राखो वैर मन मांय ।
एकभव में शुद्ध खमावतां जी,
भव भव में सुख थाय ॥७१

प्रथम तो तिण वेला खमावणा जी,
नहीं तो पक्खी खमावणी होय ।
चौमासी जरूर खमावणी जी,
संवच्छरी खमावजो सोय ॥७२

संवच्छरी तो उलंघजो मति जी,
धर्म समकित राखणी चाय ।
ऐडो अवसर फिर नहीं आवसी जी,
करोड़ो भवों रो देणो मिट जाय ॥७३

केई भोला जीव समझे नहीं जी,
मन शंके खमावतां ताम ।
थांरे नमता तो जोर लागे नहीं जी,
खमावतां नही लागे दाम ॥७४

इम जाणी विधि सुं खमावतां जी,
चित्त करी मांहिलो साफ ।

जीव अनन्त अनन्त मुक्ति गया जी,
ज्यारे खमत्खामणा रो प्रताप ।।७५

पूज्य अमरसिंघ जी हुवा दीपता जी,
धर्म फैलायो मरुधर देश ।
पूज्य पुनम दरिया गुण तणां जी,
तारया भव जीवों ने दे उपदेश ।।७६

संवत् उगणीसे ने चौपने जी,
शहर नींबाडे कियो है चौमास ।
संवच्छरी दिन गुरु परशाद सुं जी,
ऋषि नेमिचन्द भयो है उल्लास ।।७७

इम पक्खी चौमासी ने संवच्छरी जी,
करो खमत्खामणा दिल धार ।।
जो कोई री चौवीसी ने गावसी जी,
ज्यांरे होसी जी मंगलाचार ।।७८

●

पक्खी की चौवीसी सम्पूर्ण

●

श्री नेम-वाणी : उत्तरार्द्ध

१ क्षमा के चौक

राग लङ्गड़ी

सार धर्म प्रथम साधु का, दुक्कर क्षमा करणे का ।
जिनवर फरमाया, युक्ति से मार्ग है यह तिरणे का ।।टेर।।
द्वारामती नगरी के अन्दर, कृष्ण महाराजा राज्य करे ।
है पिता जिन्हों के वसुदेव देवकी मात सिरे ।
गज सुकुमाल नन्दन तसु व्यावन न्यानु अन्तेपुर आणी घरे ।
'सोमी' सोमिल कन्या रूप देख कृष्ण जी महल धरे ।।

शेर

तिण समय नेम समोसरचा, श्री नन्दन वन मझार जी ।
माधव वन्दन को चले, संग लिया गजकुमार जी ।।
वाणी सुणी श्रीनेम की, गज लिया तो संजमभार जी ।
महोत्सव किया श्री कृष्ण जी, है अन्तगढ़ अधिकार जी ।।

छोटी कड़ी

पूछे जिनवर से ऐसी दिल में आई।
मुझे उपरवाड़े की सेरी दो दिखलाई ।।
जिन भिक्षु की पड़िमा द्वादशमी फरमाई।
ऊठ चले श्मशान महाकाल ध्यान दिया ठाई ।।

दौड

आया सोमिल जिणवार, देखे गज अनगार।
भुसे श्वान गज लार, जिम कोप किया ।।
बिना गुन्हें मेरी वाल, इन्हें छोड़ी तत्काल।
शिर बांधी मिट्टी पाल, खिरा मेल दिया ।।
होते सुसरे जमाई, गिना सगपन नांई।
मुनि क्षमा चित्त लाई, समरस को पिया ।।
शुद्ध ध्यायो शुक्ल ध्यान, मुनि पायो केवलज्ञान।
दोय घड़ी के दरम्यान, शिव गढ़ को लिया ।।

मिलत

लाखों भवों का देना चुकाया सोच किया नहीं मरणे का।
।।जिन०।।१।।
परदेशी परभव नहीं माने मिथ्या मत की संग लागी।
एक केशीश्रमण जी जिन्हों को गुरू मिले हैं बड़भागी ।।
प्रश्न इग्यारा पूछ राय जिनदर्शन के हुए अनुरागी।
फिर वेले वेले करे पारणो राज्य तणी तृष्णा त्यागी ।।

शेर

राय तणे राणी हूंती, सूरीकन्ता पटनार जी।
चित्त प्रधान तो सारथी, एक सूर्यकान्त कुमार जी ।।
स्वार्थ तणी सगाई यहाँ, देखो तो इस संसार जी।
राणी राजा को मार वा अब करत है अविचार जी ।।

छोटी कड़ी

भयो धर्म गेलडो कन्थ, राज्य तज दिना।
झट कुंवर को बुलवाय, मारण मन किना ।।
हाँ मात तात का सुनके, मौन धर लिना।
सूर्य गया आप मकान कान नहीं दिना ।।

दौड

जब राणी ने बिचारी, सुत करेगा ज्हारी।
झट राय पे पुकारी, राणी एम कही ।।
थांके पारणो महाराज, म्हांके महलों करो आज।
राजा जाण्यो न अकाज, अर्ज मान लही ।।
राणी बनाया है माल, मांहि जहर दिया घाल।
आय पहुचा जब काल, जानी भूप सही ।।
कथाकार के जो मांहि, राणी टूंपो दियो जाहि।
तो ही राय डिगियो नाहि, क्षमा तिखी रही ।।

मिलत

सूरियाभ भये नृप मोक्ष जायेगा काम नहीं भव फिरने का।
।।जिन०।।२।।

गर सावत्थी कनककेतु के मृगावती है पटराणी।
एक खन्धक कुंवर जी उसी के फरजन्द है पुण्यवन्त प्राणी ॥
यौवनवय परणाय लाल को एकदिवस में गुरु वाणी।
सुन भये वैरागी जिन्होंने लिया संजम सुद्ध मन आणी ॥

शर

मा पिता हठ किनी घणी, मानी तो नहीं लगार जी।
सुभट दिया संग पांच से, वें चलत छाने लार जी ॥
बहन तणे पुर आविया, एकल करत विहार जी।
पुरुषसिंह राजा नगर कुंती, मुनि फिरत शहर मझार जी ॥

छोटी कड़ी

वहाँ राजा राणी रामत गोखाँ करते।
राणी देखे निज भ्रात नयन झरझरते ॥
राय चिन्ते इसका जार पूर्व कोई नर ते।
ऊठ चले सभा के वीच कोप दिल धरते ॥

दौड

जब नफ़र बुलवाये, मुनिराज को मंगवाये।
श्मशान को भिजवाये, ऐसा हुकम दिया ॥
तीखा पाचणा से झाल, सब उतारी है खाल।
नाके शल नहीं घाल, लोही वह गया ॥
ऐसे परीषह सहे, सगपन नहीं कहे।
क्षमा करी शिव गये, अन्त ज्ञान लिया ॥

सुनी काचर विचार, राजा राणी खेवा पार ।
मारे गये अनगार, बड़ा जुल्म किया ।।

मिलत

सुभट पांच सौ लिया संजम, सुन सोच लगा नृप डरणै का ।
।।जिन०।।३।।

इम अनेक तिर गये क्षमा से किस किसका मैं दाखूं नाम ।
खन्धक ऋषि के शिष्य पांच सौ पीले घाणी पहुंचे शिव ठाम ।।
पंचमें आरे भरतक्षेत्र में देश पंजाब शुभ दिल्ली ग्राम ।
गुरु अमरसिंघ जी एक पूज्य भये शिव साधन काम ।।

शेर

त दिल्ली के बादशाह राजा तू रघुनाथ जी ।
संमत सतरह पूज्य पधारे सुनी उसी वख्त की बात जी ।।
जिन धर्म सुन दिवान जी रंगी तो सातों धात जी ।
मरुधर देश की विनति वह करत जोड़ी हाथ जी ।।

छोटी कड़ी

मुनि कहे किम आवां तुम देश साधु को मारे ।
तब बन्दोबस्ती करी प्रधान बावीस रजवाड़े ।।
गढ़ जोधपुर में विचरत पूज्य पधारे ।
खुद राज्य तलहटी बीच मुनि को उतारे ।।

दौड

मिथ्यात्वी के नहीं भाई, भय की हवेली बताई ।
परधान जाने नाई, ्माने जुल्म किया ।।

उसमें था देव योग, कोई जाय न सके लोग।
मुनि के न चिन्ता शोग, जठे समोसरचा ॥
देव रात को चल आये, सप सिंह बनवाये।
बहुत मुनि को सताये, क्षमा करी न डरचा ॥
भाणु द्वार को सुनाये, देव आय लगे पाये।
प्रातः भये लोग आये, देखो साधु न मरचा ॥

मिलत

द्योत भया ऋषि नेमिचन्द्र कहे काम बड़ा जिन शरणे का।
॥जिन०॥४॥

कलश

स्थानकवासी जैन धर्म मरुदेश मझार जी।
सतरे सडसठ साल प्रथम अमर किया प्रचार जी ॥
पूज्य जीवराज जी संवत सोले हुआ पण्डित पढ़ी अंग जी।
तस्सपाट पूज्य श्री लालचन्द्र जी तत्पट्ट पूज्य अमरसिंघ जी ॥
तुलसीराम पूज्य पाट अमर के तीजे पट्ट सुजान जी।
चौथे पाट श्री जीतमल्ल जी पांचवें मुनि चन्द्र ज्ञान जी ॥
शशि उदित पूज्य पुनमचन्द जी छट्टे मम गुरुराज है।
तत्पाट ज्येष्ठ मुनि नेम भाषे सदा रहे यश गाज है ॥

●

२ दान, शील, तप और भावना

राग पूर्ववत्

दान शीयल तप चौथी भावना कोइयक चित्त से भावेगा ।
भगवन्त दरशावे जिन्हों से अक्षय अमर पद पावेगा ।।टेर।।
संगम ग्वालिया पूर्व भव में मुनिवर को वेराई खीर ।
भये शालीभद्र जी सेठ गोभद्र तणें घर घाल्यो सीर ।।
एक दिवस आये व्यापारी रत्नकम्बल सोले जिन तीर ।
फिरे राजगृही में जिन्हों की बिकी नहीं होगये दिलगीर ।।

शेर

भद्रा तो बैठी गोखड़े लिया व्यापारी झांक जी ।
मुख मांग्या दाम दिना मेट्यो नगर को वांक जी ।।
खण्ड बत्तीसे कर दिया लाड्याँ ने कहे लो राख जी ।
सासु क्यों दिना भाखला बहुओं ने दिना नांख जी ।।

छोटी कड़ी

एक लेकर भंगन गई राज्य के मांई ।
राणी ने देख श्रेणिक को सर्व सुनाई ।।

नप कर असवारी चले सेठ घर ताईं।
भद्रा दिनों बहुमान पुत्र को लाई ।।

दौड़

छूटी परसेवा की सेर, म्हारे माथे धणी फेर।
किनी करणी में देर, ऐसी दिल आई ।।
नारी बत्तीसों ही लेख, नित्य तजे एक-एक।
सुभद्रा बहिनी देख, कैसी करी भाई ।।
धन्नो कहे सुन नार, वह तो कायर गिवार।
लिये साले जी को लार, आठों छिटकाई ।।
धन्य धन्नो संजम पाल, गये मोक्ष मझार।
शालीभद्र अनगार, स्वार्थसिद्ध मांई ।।

मिलत

दान तणा फल प्रत्यक्ष देखो एक भव कर शिव जावेगा।
।।भग०।।१।।

महेन्द्रराय की धूया अञ्जना पवनकुंवर से व्याव किया।
जब से छिटकाई वर्ष बारह से कुंवर जी कटक गया ।।
पक्षी योग छाने आये सति पे रमी गया फिर गर्भ रहा।
उदर वृद्धि देखी सासु ने सतियों के सिर कलंक दिया ।।

शेर

देखा तो दी सेनानिका सासु तो माने नाय जी।
वसन्तमाला टेर कूटी घड़ी तो तेरह ताय जी ।।
तुम सुत आवे जहां लगे राखो तो म्हारी माय जी।
सासु तो अन्न का त्याग कीना पीयर दो पहुँचाय जी ।।

छोटी कड़ी

दोनों को काला वेश पीयर पठाई।
मावितां किना द्वेष कलंक ले आई ।।
फिरी सो बंधव घर द्वार किन्हीं न बतलाई।
देखो किन्हीं न पायो नीर फेर दी द्वाई ।।

दौड़

छटी आंसुड़े की धार, विप्र पायो जल बहार।
गई वन के मझार, मिले गुरु ज्ञानी ।।
पूछे भव विसतार, जन्में हनुयकुमार।
मास बीत गये बार, मामे घर आणी ।।
पवन लंका से जब आये, घर नारी नहीं पावे।
सब वन को ढुंढाये, छाती घबराणी ।।
सती लाधी है मूंशाल, आय मिले तत्काल।
सभी उतर गया आल, सती हुलसानीं ।।

मिलत

शील तणां प्रभाव जबर है सुरपति सो ही गुण गावेगा।
।।भग०।।२।

काकन्दी नगरी के अन्दर भद्रा सारथवाही है।
सुत धन्नो उन्हीं के जिनको बत्तीस रम्भा परणाई है ।।
सुख भोगता वीर वाणी सुन ऐसी दिल में आई है।
शुद्ध संजम लीना जिन्होंने छति ऋद्धि छिटकाई है ।।

शेर

दीक्षा तो लीनी श्री वीर पे जोड्या तो दोनों हाथ जी।
वेले तो वेले पारणो यावज्जीव करादो नाथ जी ।।

रंकादिक वंछे नहीं ऐसो तो लेनो भात जी।
अन्न मिले तो जल नहीं, जल मिले तो नही अन्न जात जी ॥

छोटी कड़ी

मुनि कर कर तपस्या खंखर कर दी काया।
शुद्ध भणें इग्यारे अंग राजगही आया ॥
वहां श्रेणिक राजा पूछे शीष नमाया।
करणी में कौन सरदार वीर बतलाया ॥

दौड

साधु चवदे हजार, रज तज मांहि सार।
धन्य धन्नो अणगार, गुणग्राम किया ॥
श्रेणिक वन्दे वारम्वार, धन्न मुनि को अवतार।
सब वन्दी नरनार, निज धाम गया ॥
नव मास खेंडा धार, पाली शुद्ध आचार।
एक मास के संथार, स्वार्थ सिद्ध लिया ॥
तप केरे फल जान, मिले महासुख खान।
चोसठ मण के प्रमाण, मोती लटक गया ॥

मिलत

मोक्ष जासी महाविदेह क्षेत्र में फिर गर्भ में नहीं आवेगा।

॥भग०॥३॥

प्रश्नचन्द राजा अति ताजा श्री वीर पे लीना संयमभार।
वनखण्ड के मांहि ध्यान ध्या दिया एक नर कहे तिणवार ॥
नगर तुम्हारा वैरी लूंटै सनि मुनि मन में करी तकरार।
हय गय रथ पायक सेना सज्ज त्यार करो वैरी लूं मार ॥

शेर

श्रेणिक पूछे वीर जम्पे अस्थिर भये मुनिराय जो ।
अभी तो आयुष्य खय करे तो जाय सातमीं नरक मांय जी ॥
जितरे तो मुनि शिर मुकुट जोता ध्यायो तो शुक्ल ध्यान जी ।
भाई तो निर्मल भावना पाया तो केवलज्ञान जी ॥

छोटी कडी

नृप सुनी दुंदुभि चमत्कार चित्त पाये ।
प्रशनचन्द पाम्या मोक्ष वीर बतलाये ॥
यह दान शीयल तप भाव चार मैं गाये ।
पूज्य अमरसिंघ जी महाराज के सिंघाड़ा माये ॥

दौड

छट्टे पाट पे विराजे, पूज्य पुनमचन्द जी ताजे ।
जग चूडामणि छाजे, गुण के ग्राही ॥
तस्य शिष्य नेमिचन्द, ऐसे गुरु लिये वन्द ।
चित्त छाया है आनन्द, कमी कछु नांहि ॥
संवत् उन्नीसे के फेर, वर्ष छप्पने की लेर ।
किया चातुर्मासा शहेर, भिन्डर मांहि ॥
कहूं मास काति शूद, ज्ञान पंचमी है खुद ।
यह तो वार भला बुद, जोड़ी चित्त च्हाई ॥

मिलत

यह चार आराधे तिरे वहुत जीव पण निज मन को वश लावेगा ॥
भगवन्त दरशावै जिन्हों से अक्षय अमर पद पावैगा ॥४॥

●

३ श्री महावीर-जीवन

राग खड़ी

श्री तृशलादे उत्तम सती जी ने, रत्न पदार्थ जाया है।
जगत्शिरोमणि शिरोमणि, महावीर जिन राया है ।।टेर।।
रत्नमहल सुखशय्या पोढ्या, चवदे स्वप्न जिन पाया है।
अपने कन्त को कन्त को, जगा के हाल सुनाया है।
राय सिद्धार्थ कहे सुन्दर जिनवर के चक्री राया है।
सुनकर के राणी राणी जी, अपने महल को आया है।
प्रात भये नृप भेज नफ़र को, पण्डित को बुलवाया है।
निमित्त अष्ट के अष्ट के, भद्रासन ढुलवाया है।
स्वप्नपाठक करत अर्थ को, भिन्न-भिन्न कर समझाया है।
तुम कुल म्याने माहि ने, तीर्थंकर चवी आया है।
देवे सीख जब राय पण्डित को, दान दिया दिल च्हाया है।
जगत् शिरोमणी शिरोमणी महावीर जिनराया है ।।१
मास सवा नव भये राणी जी, शुभ मुहुर्त्त सुत जाया है।
छप्पन्नकुमारी कुमारी, सूतक कर्म कराया है।
जन्मकल्याण करण वास्ते, चौसठ मघवा आया है।

लेय प्रभु को प्रभु को, मेरु शिखर नवराया है।
चटु अंगुली से मेरु कम्पाया, महावीर स्थपवाया है।
नाम जिनेन्द्र को, जिनेन्द्र को, मात मन्दिर सुर लाया है।
इन्द्र इन्द्राणी मंगल गावे, महोत्सव कर सिधाया है।
राय सिद्धार्थ सिद्धार्थ, दान के घन वर्षाया है।
ऋद्धि वृद्धि जब हुई भण्डार में, वर्द्धमान कहलाया है।
जगत् शिरोमणी शिरोमणी, महावीर जिनराया है ॥२

बालपने में खेले लाल जी, माता लाड लडाया है।
वर्ष हुए नवमें नव में, पण्डित पास पढाया है।
शक्र इन्द्र ब्राह्मण बन आया, प्रभुजी को बतलाया है।
अर्थ ओ३म् का ओ३म् का, भिन्न-भिन्न कर समझाया है।
इन्द्र गये निज स्थान सुनी के, पण्डित अचम्भा पाया है।
ले संग जिनको जिनेन्द्र को, राजभवन में आया है।
पुत्र तुम्हारा कैसे पढावे, इसकी अपरंमाया है।
हाल तो सुन के सुन के, मात तात हुलसाया है।
चमत्कार दिखलाये प्रभुने, दिन दिन तेज सवाया है।
जगत् शिरोमणि शिरोमणि, महावीर जिनराया है ॥३

रायवर कन्या देख कुवर को, यौवन में परणाया है।
सुख भोगता भोगता, वर्ष अट्ठावीस आया है।
मात तात गये देवलोक में नन्दीवर्द्धन फरमाया है।
वर्ष दोय में दोय में, भिक्षु जिम ठहराया है।
वर्षीदान जब दिया प्रभुने, तब ही घर छिटकाया है।

करते तप को तप को, अष्ट कर्म झटकाया है।
आप मोक्ष को गये ऋषि, नेमिचन्द शरणे आया है।
मुझे तात वह तात वह, सुख दो सुत का दाया है।
उन्नीसे चोपन्न फालगुन सुद, छट्ठ रत्नपुरी गुण गाया है।
जगत शिरोमणि शिरोमणि, महावीर जिनराया है ॥४

४ नमस्कार मंत्र की महिमा

राग द्रोण

सव मन्त्रों में श्रीकार यही मन्तर है,
महाराज इसी पर निश्चय जो रखता जी।
नवकार मन्त्र प्रभाव, भूत पण चल नहीं सकता जी ।।टेर
एक क्षितिप्रतिष्ठ हैं नगर राज्य वल करता,
महाराज जहाँ जिनदास श्रावक रहता जी।
एक दिन वर्षा जोर, नदी चढ़ आई खेतां जी।
वह रैयत राजा नदी देखन को चलता,
महाराज आया बिजोरा बहता जी।
देख तेरु पे लिया कढवाय, भूप को दीना महता जी।
वहुत स्वाद लगा नृप कहे यह दरखत कहाँ है ?,
महाराज लावो तुम खबरां पुख्ता जी ।।नवकार० ।।१
नर नदी तीर गये दूर वगीचा आया,
महाराज लोक कहे भितर न धसना जी।
यहाँ यक्ष करेगा तुझ भक्ष जाओ टल, जो जग बसना जी।
पिछे आये सुभट कई जावे सो नहीं आवे,

महाराज भूप की नहीं मिटी तृष्णा जी।
सव नाम की चिट्ठियाँ डाल, घड़े में वूरी है रसना जी।
नित्य कुमारी कन्या के हाथ से चिट्ठी निकाले,
महाराज जावे नर वही चमकता जी ॥ नवकार० ॥२
वह तज जीने की आश निराश हो घसता,
महाराज ले फल को नदी में न्हाता जी।
वहाँ तेरु ताकता रहे विजोरा लेके।
महाराज भूप को रोज खिलाता जी।
इम नित्य खपत विन मौत वहुत दुनिया घवराता जी।
सव मिल कहे नृप को नगर खाली हो जाता।
महाराज पिच्छे कौन रखेगा नुख़ता जी ॥नवकार०॥३
नहीं माने नृप भर रोश सभी को हटावे।
महाराज लोक तो कहे कहे हुए हैरान।
एक दिन चिट्ठी आई श्रावक वह जिनदास पहचान।
सागारी किया सन्थार जाय वहाँ पहुँचा;
महाराज धरा नवकार मंत्र का ध्यान।
वह भूत का वल गया छूट,
लूट नहीं सका उसी का प्राण।
नवपद तो सेंदा लगे ध्यान यक्ष दीना।
महाराज वह पिच्छला भव को निरखता जी ॥नवकार०॥४
ले संजम को दिया विराध सो व्यन्तर हुआ।
महाराज नहीं तो होता पद सुर निर्वाण।
देव लगा सेठ के पाय, तुहीं गुरु मेरा लिया भव जान।

तुम वर मांगो देव दर्शन निरस नहीं जावे।
महाराज सभी जीवों को दो अभयदान।
और मेरे कछुयन चाह, एक विजोरा दो नित्य आन।
यक्ष मान वचन जब सेठ को ठेठ पहुँचाया।
महाराज निश्चय से यक्ष नहीं भखता जी ।।नवकार०।।५
तेरू कहे बिजोरा, नहीं आया सेठ को लाया।
महाराज ठेठ नहीं गया किया तोफान।
सेठ किया बिजोरा भेंट,अचम्भा पाया रैयत राजान।
और मरे तूं उबरा कहो कैसे मेरे भाई।
महाराज सेठ ने कह दिया सभी बयान।
सुण जमी आसता भूप कहे तेरा मंत्र बड़ा बलवान।
किया नगर सेठ दिवान देश के स्थापै,
महाराज लोक तो सभो हरखाता जी।।नवकार०।।६
यक्ष करे बिजोरा नित्य भेंट सेठ दे नृप को।
महाराज नगर में यश विस्तरिया जी।
देव करे सेठ की वेठ, देखो नवपद की किरिया जी।
नित्य मरते बचाये सेठ भी सुरगति पाया।
महाराज अमरसिंघ जी गणधरिया जी।
ऋषि नेमिचन्द कहे पूज्य पुनम गुरुज्ञान का दरिया जी।
उन्नीसे त्रेसठ की साल भींडर चौमासा।
महाराज धर्म करो सन्त रहे टिकता जी ।।नवकार०।।७

५ नमस्कार मंत्र का प्रभाव

राग द्रोण

तुम जपो मंत्र नवकार सार पूर्व का।
महाराज विकट संकट टल जाता जी।
हुवा सोवन पौरषा सिद्ध, देखो नव पद गुण गाता जी। टेर॥
एक रत्नपुर है नगर भूप दमसार।
महाराज यशोभद्र धर्मी भाई जी।
तसु सुत शिवकुमार कुव्यसन को सेवे सदाई जी।
नहीं माने किसी की वात तात समझावे।
महाराज सेठ के वेदना आई जी।
हुई अन्त समय की वेर, कुमर को लिया वुलाई जी।
नहीं माना इत्ते दिन अब तो मान लिरावो।
महाराज सीख देवूं अब जाता जी॥हुवा०॥१
जव कुंवर कहे मैं मानूं हुक्म फरमावो।
महाराज सीखाया सेठ ने तव नवकार।
जव वख्त पडे तव स्मरण करना करदे वेडापार।
कर ध्यान धार लिया सार मंत्र को जाणी,

महाराज सेठ मर, गया स्वर्ग मझार।
पीछे कुंवर कुसंग जुआ से गया धन सब हार।
धन ढूंढत शिव को मिला एक बावा जी।
महाराज कुंवर को कहे क्या च्हाता जी।हुवा०॥२
कहे हाथ जोड़ के शिव सुणो बावा जी।
महाराज जुआ से हार गया सब आथ।
हो गया पूरा लाचार आप सा मिला हमें अब नाथ।
किस्मत में लिखा है क्या सो हमें बता दो।
महाराज अवधू कहे सुन बच्चा मुझ बात।
तुम चलो श्मशान के बीच काली चौदस आगई रात।
कुबेर का धन भण्डार तुझे दिलवादूं।
महाराज कुंवर सब मान ली वातां जी॥हुवा०॥३
अब अलख जगा के कुंवर को संग में लीना।
महाराज श्मशान के अन्दर आया जी।
कहे नाथ देख करामात अखूट अब करदूं माया जी।
यह सुवर्णसिद्धि की ऋद्धि विधि कह दिनी,
महाराज कुंवर सुन के ललचाया जी।
एक मुर्दा लिया मंगाय विधि से स्नान कराया जी।
सिनगार सजा के अग्निकुण्ड बनाया।
महाराज खेर अंगारा ताता जी॥हुवा०॥४
मुर्दे के हाथ में खड़ग दिया है नंगा।
महाराज जोगी कहे सुण ले बच्चा जी।
मर्दे के पैर उल्लास घृत तुम लेकर अच्छा जी।

मैं जपूँ मंत्र श्रीकार सार तुम देखो।
महाराज गुरु के वचन है सच्चा जी।
पण रहना बहुत हुंशियार, यार मत रहना कच्चा जी।
यों कह कर के अवधूत कुण्ड पर बैठा।
महाराज मंत्र को एकचित्त ध्याता जी ।।हुवा०।।५
हुवा जाप पूरा तब मुर्दा चट ऊठा है।
महाराज कुंवर का दिल थरहरिया जी।
जोगी ने ठगा कर दगा, रखे मारे इस विरिया जी।
अब भाग सकता नहीं, तात वचन चित्त आया।
महाराज स्मरण नवकार का करिया जी।
पड़ा मुर्दा गस्त खाय जोगी पुनः मंत्र उच्चरिया जी।
फिर पड़ा है तीजीवार भखडा तव बोला।
महाराज तुम्हें क्या मंतर आता जी ।।हुवा०।।६
तब कहता शिवकुमार मंत्र नहीं जाणं।
महाराज जाना दिल नवपद का परताप।
अव इसको छोड़ूं नाय करूं मैं एकचित्त इसका जाप।
जोगी जाने मेरे जाप में त्रुटी रहगई।
महाराज तीजी दफा फेर जपा है साफ।
जितरे तो डमरू वाज गाज कर आया भैरूँ आप।
दे भक्ष कहे वेताल लाल कर नैना।
महाराज जोगी सुन कर अकुलाता जी ।।हुवा०।।७
वो दे सकता न जवाव भैरु तव कोपा।
महाराज ऊठा कर कुण्ड में नाखा जी।

हुवा सोवन पोरषा त्यार कुंवर सामा नहीं झांका जी।
अब पड़ा कंवर के चरण देव यों बोला।
महाराज आपको नवपद राखा जी।
मैं इतना बना हूँ नर्म गर्म नहीं बोली भाखा जी।
हो प्रसन्न कहूं मैं आपको प्रेम धर के।
महाराज माँग लो जो चित्त च्हाता जी ॥हुवा०॥८
मैं रहा जीवित सो सब कुछ ही भर पाया।
महाराज देव कहे अमृतवेणा जी।
यह कनक पोरषा बना जोगी का सो तुम लेना जी।
ले चला कुंवर जब अपने मन विचारा।
महाराजा राजा को जाकर केहना जी।
कोई करे रखे वहाँ बात तो है यहाँ मुश्किल रेहना जी।
वह गाड जमि में चला भूप के पासे।
महाराज हाल कहा जोड़ के हाथा जी ।हुवा०॥९
चले भूप रैयत सब देख अचम्भा पाया।
महाराज देव कहे सिव का तालुक जी।
है परम सत्य यह बात कुंवर इस धन का मालिक जी।
फिर गा वजा के शिव के घर पहुंचाया।
महाराज मान दिया प्रजा के पालक जी।
तात बात नहीं मानी शिव ने जब था बालक जी।
अव नवकार प्रभावे अपार धन यह पाया।
महाराज खूटे नहीं निशदिन खाता जी ॥हुवा०॥१०
सिर छोड़ सवामण सोना नित्य उतारे।

महाराज रात में हो उस ठामे जी।
शिव दिया कुव्यसन को छोड़, धर्मकर सुरगति पामे जी।
मुझे पुण्य पौरषा पूज्य पुनम गुरु मिलिया।
महाराज अमरसिंघ की समुदामें जी।
कहे नेमिचन्द नवकार मंत्र को रखो हिया में जी।
उन्नीसे चौसठ अक्षय तीज दिन जोड़ी।
महाराज जोधपुर ठाणा साता जी ॥हुवा०॥१

नमस्कार मन्त्र का प्रताप

राग दोरंगी द्रोण

यह अरिहन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु।
महाराज पाँचों का सिमरण करना जी
यह विकट संकट मिट जाय के, खुद शास्त्र में
निरणा जी ।।टेर।।
कहूँ इस पे एक दृष्टान्त सभी सुन लेना।
महाराज साफ चित्त से जो सिमरताजी।
एक देखो अमरकुमार, जिन्हों से पार उतरता जी।
एक राजगृह है नगर देश मगध में।
महाराज राज्य वहाँ श्रेणिक करता जी।
राणी चेलणा समकित वन्त, सती है वह पतिवरता जी।
यह राय मिथ्यात्वी तत्त्वबोध नहीं माने।
महाराज सीख सद्गुरू की न धरता जी।
एक लगी कुगुरु की छाप, पाप करता नहीं डरता जी।

झेला

कहूँ उसी वख्त की वात सुनो सव प्यारे।

केई छेजारे बुलवाय कहे नप यारे।
जो देखत मोहित होय जगतजन सारे।

मिलत

महाराज ऐसी चित्रशाला को करना जी ॥यह०॥१
नप आज्ञा प्रमाणे चित्रशाल कर दीनी।
महाराज महल अति ऊँचा बनाया जी।
कुछ आया समझ में नाय, महल दरवाजा ढाया जी।
यों दूजी तीजी बार चुणा फिर गिरता,
महाराज भूपति मन घबराया जी।
फिर नैमित्तिक को बुलवाय, पूछा तो भेद वताया जी।
यहाँ बत्तीस लक्षण के वाल का होम करावो।
महाराज दीखे हमें देव की माया जी।
यह टीके महल प्रत्यक्ष, यक्ष का भक्ष भराया जी।

झेला

अभी फेरो डंडेरो शहर में भूप यों केंवे।
कोई वत्तीस लक्षणा वाल खुशी से देवे।
धन माल चाहे वह कोल अभी कर लेवे।

मिलत

महाराज सोना दूं तोल के भरना जी। यह०॥२
उस समय शहर में एक ब्राह्मण रहता है।
महाराज ऋषभदत्त नाम है मोटा जी।
भद्रा गहणी तसु पुत्र चार पण घर में टोटा जी।

नित्य मांग खाये पर उदरपूरण नहीं होता ।
महाराज भूख से उपजे गोटा जी ।
तीन पुत्र पुण्यहीन सलक्षणा सबसे छोटा जी ।
है नाम अमर पर मात तो उससे लड़ती ।
महाराज जन्मा तूं कुल में खोटा जी ।
न काम कछु मेरे आय, मारूँ तेरे सिर पे सोटा जी !

झेला

एक समय अमरकुमार शहर में फिरता ।
मिल गये मुनि महाराज काज सब सरता ।
जिन्हें सिखा दिया नवकार कष्ट सब हरता ।

मिलत

महाराज वख्त पर इसको सिमरना जी ॥यह०॥३
उस वख्त डंडेरा शहर माहि फिरता है ।
महाराज आया ब्रह्मपुरी के माहि जी ।
सुन ऋषभदत्त घर आय, कहे अब सुणो लुगाई जी ।
यह अपना अमरकुमार कहो तो बेचाँ ।
महाराज बोली वह दिल हुलसाई जी ।
इन्हें करो आँखों से दूर धूल इसके मुखमाई जी ।
जब रोक डंडेरो कहे विप्र उस वेला ।
महाराज राजा को देवो जताई जी ।
मेरे पुत्र बराबर सोना असल में लेऊं तोलाई जी ।

झेला

जब नफर जाय दरबार अर्ज गुजारी ।

नप कहे सोना दो तोल उसे तत्कारी ।
ले सोना विप्र के पास आये उस वारी ।

मिलत

महाराज तराजु में पुत्र ला धरना जी ॥ यह०॥४
यह देख तराजु कुंवर तात से कहता ।
महाराज ऐसी क्या दिल में आई जी ।
मै जीवित रहने पर धन की करूंगा बहुत कमाई जी ।
में क्या करूं बेटा ! मात तेरी वेचे हैं ।
महाराज मात पे करे नरमाई जी ।
मेरे भावे मरा तू आज मात कही लात लगाई जी ॥
तू खाने में शूरवीर काम नहीं करता ।
महाराज अभी तेने माँडी ठगाई जी ।
कोई मतना सुनना वात नाथ क्यों देर लगाई जी ।

झेला

अव मैं नहीं जननी तू नहीं मेरा जाया ।
मैने वेच दिया भूपति का इस पर दाया ।
कहे कटुक वैन को नैन में रोश छाया ।

मिलत

महाराज आँखों से अदीठ करना जी ॥यह०॥५
यह बातें सुनकर वैन दोड कर आई ।
महाराज हकीकत सुनके भई दिलगीर ।
विल-विलती वोले वेण नेण से वर्ष रहे हैं नीर ।
मेरा जोर चले नही क्या करूं जामण-जाया ।

महाराज सासरे धन नहीं मेरे तीर।
नहीं तो लं बचाय, माय की खाड भरूं मेरा वीर।
यह मात डाकिणी पिता तेरा हत्यारा।
महाराज ऐसी तेने क्या करी तकसीर।
तेरी होती मोटी आश, आज मेरा सूना हो गया पीर।

झेला

राखी पुली जोवूं वाट आणे कुण आवे।
बाँह पसार मिलेगो कौण मुसाला लावे।
दो हूं कण्ठ विलग कर भगनी भ्रात अरडावे।

मिलत

महाराज नेण ज्यों झरे निझरणा जी ।।यह०।।६
यह रोता अमर कहे सुण तूं जामण जाई।
महाराज मावित का दोष न इसके माय।
मेरे पूर्व जन्म के पाप, उदे आया सो छूटे नाय।
मैं भई रे सावली कौन कापडा देसी।
महाराज अमर कहे तीन बन्धव घर माय।
वे जाने मर गई बेन, याद नहीं करे जमारा ताय।
देऊँ छेला कपडा आधामाल बेंचा लूँ।
महाराज वेन कहे मेरे यह नहीं च्हाय।
मेरा जावे व्हाला वीर, पीर के धन को लागो लाय।

झेला

अब नहीं कोई विश्वास का देने वाला।
मैं किसको करूँ पुकार न कोई सुनने वाला।

यह वज्र हिये के कपाट खुले नहीं ताला।

मिलत

महाराज वन्धव संग नहीं आया मरणा जी ।।यह०।।७
यह तोले तराजु में देखे सभी कुटुम्बी।
महाराज जानते मोहनगारा जी।
पर दुःख की वेला में कौन ! जग तो सारा ठगारा जी।
सोने से खुश हुई मात कुंवर अब चलता।
महाराज लाया भृत्य मध्य बाजारा जी।
केई तमाशगीर वे लोग देखने को मिले हजारा जी।
अब सुनो नगर के सेठ अमर कहे रोता।
महाराज रहूँ मैं दास तुम्हारा जी।
वो सच्चा माई का लाल, प्राण जो रखे हमारा जी।

झेला

मैं झूठा खाय भरूँ पेट वेठ करूँ तेरी।
हे प्रभु के प्यारे ! सुनो अर्ज अब मेरी।
होमेगा वाल कुमार करेगा ढेरी।

मिलत

महाराज दयालु कोई करो करुणा जी ।।यह०।।८
केई सेठ कहे धन अडबों का भी देवे।
महाराज जोर नहीं चले हमारा वाल !
मावितां दीना वेच होम वा लीना है भोपाल।
जो हजूर करे मंजर अर्ज को सुनकर।
महाराज मालिक विन कौन सुने तेरा हाल।

तेरा दुःख देखा नहीं जाय, हृदय में ऊठ रही है जाल।
है दुष्ट तेरे मावित दया दिल नांही।
महाराज ब्राह्मण नहीं, है तो वह चण्डाल।
ऐसा काम नहीं करे नीच वो भी मन में रखता ख्याल।

झेला

अब नहीं रहा दिल विश्वास कुंवर घबराता।
सब बदल गये तो मुझ को कौन छुड़ाता।
यों रोता बाँगाँ पाड सुना नहीं जाता।

मिलत

महाराज कुंवर लगा भूप के चरणा जी ॥यह०॥६
ले आया भूप जहाँ श्रोत्री ब्राह्मण बैठे।
देख हुए प्रसन्न वे विप्र, असल में टाल के लाया जी।
यह वंश वंश का बैरी यों बनता है।
महाराज लोभ में विप्र ललचाया जी।
आहुति देने के काज चावल घत केई मंगाया जी।
बिन कसूर भूप क्यों मुझ को आप होमावो।
महाराज नैनों से जल बरसाया जी।
प्यारी प्रजा प्रतिपाल, नाथ तेरे शरणे आया जी।

झेला

यह बाड काकडी भखे बालक मा मारे।
हो आग नीर में रक्षक बनें हत्यारे।
जो भूप करे अन्याय किसे जा पुकारे।

मिलत

महाराज राज परभव से डरना जी ॥यह०॥१०
कहे भूप मेरा क्या दोष वेचा तेरी माता।
महाराज मोल कर मैंने लीना जी।
दो शीघ्र इसे सिनगार हुक्म अव भूप ने दीना जी।
तव जल से कराया स्नान चन्दन से अर्चा।
महाराज अत्तर से सुगन्धी कीना जी।
पहनाया सुन्दर पौशाक, गहना भी खूब नवीना जी।
ले आया वेदी पे पास ज्वाला जहाँ जलती।
महाराज देख कर कुंवर तो वीना जी।
मुझे दिया एक महामंत्र मिले गुरु ज्ञान नगीना जी।

झेला

जव दिया मावित ने वेच राजा जी मरावे।
सव वदल गये हैं लोग मुझे अव कौन वचावे।
गुरु ज्ञानी दिया है मत्र आडा अव आवे।

मिलत

महाराज मुझे नवकार का शरणा जी ॥यह०॥११
मुझे कहा था गुरु ने संकट में तुम रटना।
महाराज कष्ट यह वहुत करारा जी।
लो शरण शरण में नाथ, भक्त मैं आपका प्यारा जी।
मेरी पड़ी जहाज दरिया के मध्य भंवर में।
महाराज लगा दो आप किनारा जी।
दिया सभी को छेह, लिया आधार तुमारा जी।

अब तुम्हीं रखेंगे लाज कष्ट वेला में।
महाराज निवेदन सुनो हमारा जी।
हुवा चलित आसन तब देव, अवधि से किया विचारा जी।

झेला

नवकार मंत्र की सेव का करने वाला।
अनल में डाला देव आया तत्काला।
वर्षाया शीतल नीर बुज्झा दी ज्वाला।

मिलत

महाराज शरण तो ऐसा पकड़ना जी ॥यह०॥१२
देव लिया अधर उठाय आल नहीं आया।
महाराज सिंहासन रत्नों का जडता जी।
ले उस पे दिया बिठाया, देव गण पावां पडता जी।
हीरे जडित हैं गहनें मोतियन की माला।
महाराज रत्नों का मुकुट धरता जी।
सुर चमर ढोलते चार, केई सिर छत्र करता जी।
सोने के निर्मित पुष्प ऊपर वर्षाता।
महाराज जय जय शब्द उच्चरता जी।
अप्सरा गाती गीत, देव मिल नाटक रचता जी।

झेला

तत्ता थई थई नृत्य करत अति भारी।
ले घुमर अंग झूकाय वे परियाँ सारी।
टक टकी लगाय के देखत है नर नारी।

मिलत

महाराज हर्षवश आंसु झरना जी ।।यह०।।१३

अब देव चिन्ते इन दुष्टों को कष्ट में डालूं।
महाराज ऐसा फिर करे न साला जी।
गिरा ओंधा मुख जब भूप मुख से निकली ज्वाला जी।
सब पडे भू पर विप्र वेहोश के मांही।
महाराज सूखी ज्यों दरखत डाला जी।
नैन फटे मुख माय से वहता रक्त का नाला जी।
सब राणियाँ मिलकर अर्ज कुंवर से करती।
महाराज लाज अब रखलो लाला जी।
सब गुनाह करो वक्सीस रीश को तजो दयाला जी।

झेला

नवकार स्मर के कुंवर छाटां नांखां।
तब महिपत हुवा सचेत सामने झांकां।
धन्य धन्य कुंवर तेने भूप का जीवन राखां।

मिलत

महाराज भूप लगा कुंवर के चरणा जी ।।यह०।।१४

सब हाथ जोड़ के कुंवर का कीर्तन करता।
महाराज रैयत और राजा राणी जी।
सब माफ करो महाभाग! शक्ति नहीं तेरी जाणी जी।
वेभान पडे हैं विप्र देख सब दुनिया।
महाराज पाप फल लेओ पहचानी जी।
वाल-हत्या का पाप प्रगट में पावे प्राणी जी।

अब विप्र कुटुम्ब सब पडा कुंवर के चरणां।
महाराज कुंवर ने दया दिल आणी जी।
नवकार मंत्र ले नाम, विप्र सिर छाटां पाणी जी।

झेला

अब पण्डित हुवे हुशियार लिया है स्वासा।
सब खडी खलक और भूप देखे तमासा।
ऊठ लगे कंवर के पाय जीवन की आशा।।

मिलत

महाराज विप्र लिया मुख में तरणा जी।।यह०।।१५
यह लज्जित होकर विप्र सभी घर पहुँचे।
महाराज अचरज यह दुनिया पाई जी।
देव रचित नाटक को देख गये सब हुलसाई जी।
यह धन्य कुंवर और धन्य मंत्र गुरुवर का।
महाराज प्रभाव जिन्हें दिया दीखाई जी।
नवपद की श्रद्धापूर्ण भूप दिल लीनी जमाई जी।
नृप कहे अमर तू धन्य सभी को बचाया।
महाराज तेरी नवपद री कमाई जी।
मैं देऊं तुझे अर्द्ध राज पुत्री फिर दूं परणाई जी।

झेला

मेरे नहीं राज्य की चाह सुनो नर नाथा।
मैं लेऊं सजम भार छोड़ जग नाता।
यों हुआ उपशम भाव भावना भाता।

मिलत

महाराज हुवा ज्ञान जातिस्मरणा जी ।।यह०।।१६
पूर्वभव भण्या जो ज्ञान याद सभी आया ।
महाराज संजम लेना चित्त चहाया जी ।
किया पंचमुष्ठी से लोच वेश ला देव पहनाया जी ।
मुनिवेश देख नरेश निराश हुवा है ।
महाराज नैनों से जल वर्षाया जी ।
यह पलक पलक में पुण्य पुञ्ज कैसा प्रगटाया जी ।
अब अमरमुनि उपदेश देवे हितकारी ।
महाराज जगत झूठा दरशाया जी ।
मुनि महिमा सुनकर खलक पलक में दौड़ी आया जी ।

झेला

मुनि ऊठ चले तव राजा खुद पहुँचावे ।
धन्य धन्य कहे सब लोग मुनि गुण गावे ।
मुनि बाग में आकर ऐसा चिन्तन चलावे ।

मिलत

महाराज अब कृत कर्मों से लडना जी ।।यह०।।१७
मुनि जा श्मशान में काउसग्ग को कर दीना ।
महाराज नगर में महिमा फेली जी ।
हजारों गये नर नार ऋषभ की जहाँ हवेली जी ।
तेरा जन्म अकारथ जाय पुत्र मरवाया ।
महाराज धर्म हुवा उनका वेली जी ।
या सुनकर ऐसी बात मात तो हो गई गेली जी ।

दिया धन जमीं में गाड भूप ले जावे।
महाराज देणी नहीं मुझे अधेली जी।
पाणी पेला बांधूं पाल रह जावे घर में थैली जी।

भेला

मैं मारूँ पुत्र को मिटे भूप का दाव।
पूछे तो करूँगी मैं भी जरा जबाव।
लो माल तुम्हारा पुत्र हमारा लाव।

मिलत

महाराज नहीं तो दूँगा धरणा जी। यह०॥१८
नहीं लेगा भूप कभी माल रह जासी।
महाराज उमर तक मैं सुख पाऊं जी।
नहीं पुत्र मरे का शोक कहाँ है पत्ता लगाऊं जी।
जब कहा लोगों ने ध्यान श्मशान में धरते।
महाराज पापन कहे दर्शन चाऊं जी।
मैंने बहुत बुरा किया काम सामने जाय खमाऊं जी।
यह सुन अमर की बेन भी दौड़ के आई।
महाराज जामण संग मैं भी जाऊं जी।
यों मुझ लाखिणो वीर मुख देखी घर आऊं जी।

भेला

सुन चमकी दुष्टण मारूं कैसे इस आगे।
डर लागे रात में भूत श्मशान जागे।
जा सांज सवेरे हणूं देर नही लागे।

मिलत

महाराज दर्शन मिस काम यह करणा ॥यह०॥१९

बेटी को भूला के भेजी सासरे जल्दी।
महाराज रात में नीन्द न आवे जी।
मैं मारूं जल्दी जाय रखे वह जीवित जावे जी।
ले हाथ में शस्त्र अर्द्ध रात में ऊठी।
महाराज कोई भी पत्ता न पावे जी।
जो डरे चुहे से नार नहार को वश में लावे जी।
अब आई मशान में भूत भूतणी भमता।
महाराज मुनि को वे न सतावे जी।
पर हत्यारण या माय पुत्र को मारण आवे।

भेला

कर में है तलवार देखी मुनि आती।
जावज्जीव किया संथार वज्र कर छाती।
कर लाल नेत्र वा वचन कठोर सुनाती।

मिलत

महाराज मुनि तो राखी जरणा जी ॥यह०॥२०
रे पापी तेने क्या पाखण्ड चलाया।
महाराज खराब करूं तेरी मटिया जी।
तुझे दिया अगन में झोंक, तो ही तेरा पाप न कटिया जी।
तेने जीवन किया बचाव जाणा है मैंने।
महाराज मेरा धन तुझे न खटिया जी।
पण मैं न छोडूं तेरी केड, अब कहाँ जावे सटिया जी।
वा दुष्टण निर्दय वचन ऐसा मुख कहती।

महाराज पूर्व भव वैर उलटिया जी।
समभाव सहे जो कष्ट, जिन्हों का ही कर्म कटिया जी।

झेला

रे पापी तेरे तन का करूँ अभी कटका।
यों रोश लाय मुनिराज के सिर दिया झटका।
माता का सगपन गिना न रक्खा खटका।

मिलत

महाराज हत्यारण दिल नहीं करुणा जी ॥यह०॥२१
मुनि मार भगी मुझे रखे कोई देखेगा।
महाराज आनन्दित हो मन माई जी।
पण तुरत उदय आया पाप नाहरडी सामे आई जी।
वह तटक पडी और चीर डाला है तन को।
महाराज कर्मगति छटे नाई जी।
बुरी मौत मर, गई नार नरक छट्ठी के मांई जी।
वहाँ असह्य वेदना भोगे कर्म प्रभावे।
महाराज बाईस सागर स्थिति पाई जी।
माता पुत्र दे मार स्वार्थ की कैसी सगाई जी।

झेला

धन भोग सकी नहीं पापण सुत भी मारा।
नहीं स्वार्थ सधा है नर भव को भी हारा।
यों सुन कर बन्धु करो न विना विचारा।

मिलत

महाराज वैर नहीं किन से करणा जी ॥यह०॥२२

वहाँ मुनि शरीर से वहे रक्त की धारा।
महाराज ध्यान मुनि निर्मल धरिया जी।
यह मात दिया है साज जाने परभव का।
महाराज जाणे भव फेरा टलिया जी।
कर शुभ भाव से काल वार वें स्वर्ग अवतरिया जी।
वहाँ वाइस सागर की स्थिति के सुख को पाया।
महाराज भूले दुःख जो यहाँ पडिया जी।
चव विदेह में जासी मोक्ष, पाल के निर्मल किरिया जी।

झेला

दोही नरक स्वर्ग की स्थिति तो सरखी पाई।
दुःख सुख को दोनों वेद रहे वहाँ जाई।
मुनि शव को देखकर भूप को दिया चेताई।

मिलत

महाराज हत्यारे का करलो निर्णा जी ।।यह०।।२३
मुनि शव को देखे भूप रैयत वहाँ आके।
महाराज माता पडी पास में धरती जी।
इण मात कीना है घात वात या रात में वरती जी।
मुनि शव का कर संस्कार भूप लौटा है।
महाराज वेन सुन के दुःख धरती जी।
हाय हत्यारण खास मात हो क्या तूं करती जी।
वो धन नहीं लेता अब तो समता वरती।
महाराज हत्यारण तूं नहीं मरती जी।
मेरे दिल की दिल में रही मुनि का दर्शन करती जी।

झेला

रे पापन दी अन्तराय मुनि के दर्शन करती।
अब कहाँ देखूं उणियार रहे नहीं धरती।
सब दुनिया मिलकर मुनि की महिमा कहती।

मिलत

महाराज पापन से करे सब घृणा जी ॥यह०॥२४
मुनि महिमा कर रहे देव खड़े गगन में।
महाराज जगत् में यश फैलाया जी।
नवकार मंत्र प्रभाव अमर कुंवर सुख पाया जी।
इस तरह भव्य नव पद का इष्ट रखोगे।
महाराज आप का हो चित्त च्हाया जी।
पूज्य पुनम गुरुराज प्रशादे सुख वर्ताया जी।
यह सिंघाड़ा है, पूज्य अमरसिंघ जी का।
महाराज सात ठाणे से आया जी।
उन्नीसे पैंसठ की साल भींडर चौमासा ठाया जी।

झेला

जहाँ बहुत हुआ उपकार समझलो भाई।
यह कार्तिक मास बुद्धवार दीवाली आई।
"नेम मुनि" नवकार पच्चीसी गाई।

मिलत

महाराज लावणी में गुण वरणा जी ॥यह०॥२५

७ दया का महत्त्व

राग खड़ी

श्री वर्द्धमान महाराज के दफ्तर, खोलके देखो असल पट्टा ।
जैन मती तुम नाम धरा के, क्यों करते हो दया का ठट्ठा ॥
॥टेर॥

इस पर कहूँ दृष्टान्त आपस में, युगल जणाँ मिल मता किया ।
एक ने तो उपवास किया है, दूजे ने कर दी है दया ।
उपवास वाला तो आरम्भ करता, घर में हो कारण विरिया ।
जल अनल नमक हरि त्रस, हणे न हणे तो ही लगी क्रिया ।

छोटी कड़ी

व्यापार करत कुट मार हुवे यदि भारी ।
अधिकारी उसे दे कारागृह में डारी ।
उपवास वाले में वीती इतनी सारी ।
कहो दया वाले ने कैसी ममता मारी ।

मिलत

व्रत वैठे को कौन सतावे, दया वास का कितना वट्टा ॥१
तीन विदेशी आये नगर में, एक के कर में कनक मुंदडी ।
दूजे के पल्ले रत्न बंधा है, तीजे के विंटी रत्न जडी ।

यों उपवास दया पौषध में, कहे दो की करणी बहुत बडी।
दया का रत्न गुप्त बंधा है, उस की मालूम नहीं है पड़ी।

छोटी कडी

दया समान नहीं धर्म जगत् में दूजा।
इस दया माता की कर लो हरदम पूजा।
कर दया कई नर तिरे कई नर बुज्झा।
इस दया की निन्दा करे तो मुख दो डूजा।

मिलत

साठ नाम दया के चले हैं, प्रश्न व्याकरण को देख झटा ॥२
कई दया की करे मश्करी, मुख डेढा कर इसी तरे।
आज तो चंगा माल उडाया, लड्डू खा के पेट भरे।
कलाकन्द रसगुल्ले खाये, हाथों से फिर नकल करे।
पुत्र मात को करे उघाडी, ढके कैसे वे निन्दक बूरे।

छोटी कडी

है दया माता का जिकर आगम के माई।
जो मूढमती वे दया को माने नाई।
माता की मजाक वे करते लुच्चे भाई।
मुझे ग्लानि हुई जब दीनी बात सुनाई।

मिलत

समझदार तो ख्याल करेगा, मूढ का होगा चित्त खट्टा ॥३
दया में दोष बताते केई, खर्च करन से दूर भगा।
मुझे कारण से दया न होती, चीज चाहे सो दं मैं मंगा।

कैसे करेगा मैं न करूँ तो, मन में उसके ऐसा दगा।
दगावाज के दिल में देखो दयाभाव तो कभी न जगा।

छोटी कडी

केई पत्थर कुटा के लुच्चा सोदा खावे।
व्यापार करे आसामी कई डुब जावे।
चोर डाकू मिले तो घन को लूट ले जावे।
पण सुकृत में वे खर्च करण नहीं च्हावे।

मिलत

पर भव घन नहीं साथ चलेगा, तो क्यों रखता भाव मट्ठा ।।४
निन्दक मूंजी दोष निकाले, पर है दया की मुझ पे मया।
दया तुल्य नहीं धर्म दूसरा, वैदिक ग्रन्थ में देखो भैया।
सूत्र भगवती शतक वारहवें, पेला उद्देशा वीच कया।
खा पी करके पौषध करते, उसको ही हम कहते दया॥

छोटी कडी

ऐसी साखें और दृष्टान्त कहे कई न्यारे।
रिख नेमिचन्द की सीख सुनो मेरे प्यारे।
कहा पूज्य पुनम प्रशाद अमर सिघाडे।
उन्नीसे सतसठ श्रावण शुद्ध भीलाडे।

मिलत

अष्टम शनि उपदेश सुनाया, देख भायों को ऐसी छट्टा ।।५

८ महाव्रत सुरक्षा

राग—धन धन धन जम्बू कुंवर जी जोवन में समता लीनी ।। दुरंगी

श्री जिनराज महाराज जिन्होंने, हुक्म मुनि पे लगा दिया ।
पंच पंच महाव्रत दिया सभी को, किस रखा किस भगा दिया ।।
टेर ।।

एक दृष्टान्त चला सूत्र में, सुणजो करके हुंशियारी ।
राजगृही नगरी में रहता, धन्ना सेठ धन की क्यारी ।
पुत्र बहुओं की करण परीक्षा, सेठ ने मन में विचारी ।
कुटुम्ब बुलाके वहुएं जीमा के, ससुर कहे सुणा लो चारी ।

छूट

सब की साखे यह मैं केऊं जी ।
पंच शाल के दाणे देऊं जी ।
जब चाहे तब पीछे लेऊं जी ।
करो यत्न राखो जिम पूंजी ।

मिलत

खूब नशीयत देकर भेजी, उज्झा ने तो फेंक दिया ।।पं०।।१
दूजी भोग्या ने खा लिये हैं, तीजी रक्षा ने रख लीना ।

भस्मी डाल डिब्बे में सरक्षित, अपने सिराने धर दीना।
तीनों वक्त संभाल करे नित्य, अब चौथी ने सोच कीना।
सब साक्षी से सोंपा हम को, यह नहीं होना कारण बिना।

छूट

पंच पंच यह कैसे देना।
ज्यादा बढा के सुयश लेना।
पीयर पुरुष को वुला के केहना।
अलग अलग इनको बो देना।

मिलत

सालो साल बोते तुम रहना, ऐसा उनपे हुक्म दिया ॥पं०॥२
वैसे ही वे बोते रहने से, कोठे उन से भरा दिये।
पंच वर्ष के बाद सेठ ने, फिर कुटुम्ब को जीमा दिये।
प्रथम उज्भा से शालिदानें, सेठ साहब ने मांग लिये।
अन्य ला के सोंपे उसने, शंकित सेठ होय गये।

छूट

वे के वे के अन्य है सही जी।
मेरे मन में शंका रही जी।
सच सच तुम कह दो यही जी।
तव कहे वे तो है यह नहीं जी।

मिलत

तभी सेठ को गुस्सा तो आया, सूता शेर को जगा दिया॥
॥पं०॥३
फूस और गोवर वुहार के, वहार नाखण को या जासी।

दूजी भोग्या ने भक्षण कीना, या भक्षण धन को कर जासी।
तीजी रक्षा ने सागे दीना, साच बात दी परकाशी।

छूट

सेठ खुशी कहे कुंच्यां लो जी।
बिना हुक्म किसको मत दो जी।
मेरे घर में तुम हो खोजी।
बैठ गादी पे सुख से रहो जी।

मिलत

धन की मालकण करी भण्डारण, अब चौथी पे निगाह दिया।।
।।पं०।।४

इन तीनों से छोटी रोहिणी, पण अकल में सब से ताजी।
चार बुद्धि निधान अनोखी, अपने घर की रखे बाजी।
हाजर खड़ी सभा में बोली, क्या हुकम करते साहजी।
उस दिन पंच शालि कण दिना, सो सोंपो हमको आजी।

छूट

मेरे कण तो यों नहीं आवे।
नोकर पे चट हुकम लगावे।
गाडा गाडी सेंठें भर जावे।
सेठ सुणी मन अचरज पावे।

मिलत

जैसा कहा वैसा ही की कीना, गाडे भर के हवाल दिया।
।।पं०।।५

राजगृही नगरी में इन की, महिमा हो गई विस्तारी।

धना सेठ के घर की मालकण, बणी रोहिणी गुण धारी ।
संजम लीना धना सेठ ने, ज्ञाता सूत्र में अधिकारी ।
द्रव्य दृष्टान्त कहा है इस पे, भाव से सुन लो नर नारी ।

छूट

सेठ समान गिनो प्रभु जी ।
बहुअर जैसे हैं साधु जी ।
कण ज्यों पंच महाव्रत दूं जी ।
यत्न करो कर्मों से जूंझी ।

मिलत

केई शूरों ने रखा यत्न कर, केई कायर ने डाल दिया ।।
।।पं०।।६

केई उज्झा सम महाव्रत ले के, भेष नाख गृहस्थी होया ।
केई भोग्या सम भेद राख के, खाने में संजम खोया ।
इन दोनों की होवे हेलना, इह भव पर भव में रोया ।
केई रक्षा ज्यों यत्न करे वे, अल्प भण्या पण शुद्ध जोया ।

छूट

केई रोहिणी सम करे विस्तारे ।
पढ़े लिखे जनपद में पधारे ।
दे उपदेश भविजन तारे ।
बने साधु श्रावक व्रत धारे ।

मिलत

इह भव वन्दनीक पूजनीक दोनों, पर भव मुक्ति महल लिया ।
।।पं०।।७

पूज्य अमर सिंह जी के सिंघाडे, पूज्य पुनम गुरु सुख दाई।
उन्नीसे इगसठ साल में, सणावाड मेवाड़ के है भाई।
किया चौमासा पांच सन्तों से देख भक्ति की अधिकाई।
धर्म ध्यान तो खूब हुआ है, भायां और बायां मांई।

छूट

ज्ञाता सूत्र की कथा बनाई।
सबको सुनकर खुशियाँ छाई।
विहार करी बांके भेरु आई।
मिगसर वद एकम सुखदाई।

मिलत

नेम भणे भगवान् वीर ने, भव्य जीवों को जगा दिया।
।पं० ८
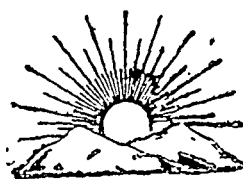
९ नेमनाथ का प्राक्रम

राग द्रोण

यह बावीसमाँ जिनराज हुए ब्रह्मचारी ।
महाराज अनन्तबली है जिन राया जी ।
श्री नेम नाथ का जोर, देख चमके हरिराया जी ॥ टेर ॥
एक दिन सभा में चली बात एक ऐसी ।
महाराज प्राक्रम है किसका भारी जी ।
कोई कहे प्रजन और भीम, विद्या में अर्जुन भारी जी ।
कोई कहने लगा बलभद्र वीर है सब में ।
महाराज कोई कहता गिरिधारी जी ।
तब हाथ ऊँचो कर राम कहे, सुणो बात हमारी जी ।
सबसे बढ कर है नेमकुंवर का प्राक्रम ।
महाराज पार नहीं सुर नर पाया जी । श्री नेम० ॥१
सुन कृष्ण हुआ दिलगीर वीर क्या भाषी ।
महाराज आज हमको नहीं च्हाया जी ।
इस भरी कचहरी बीच, मेरा अपमान कराया जी ।
इतने में चल कर पण्डित वहां पर आया ।
महाराज चुप बैठा हरिराया जी ।
है कौन बल में बलवान्, पूछे बलभद्र राया जी ।

[एक सौ पैंसठ

हो बल कितना परण नारी बल हरणी है।
महाराज इन्हीं से सब घबराया जी। श्री नेम०। २
कहे पण्डित मैं था बालपने के माही।
महाराज अकल बल में तो ऐसा जी।
एक सो आठ श्लोक, बनाता मैं तो हमेशा जी।
नृप सुन के शत और अट्ठ सोनैया देता।
महाराज खर्च कर देता पैसा जी।
लोह सांकल देता तोड, जोड नहीं कोई हम जैसा जी।
मै कहता कौन मुझ सामे आ अडता है।
महाराज किसी मां अजमा खाया जी ॥ श्री नेम० ॥३
जब कुटुम्ब दीनी परणाय एक मुझ नारी।
महाराज मिली मुझे ऐसी नाजू जी।
कहे नहीं अच्छे सिनगार, निकलती बाहर लाजूं जी।
जब अन्य लुगायाँ गहना पहन कर निकले।
महाराज देख दिल उल्टी दाझूं जी।
थां सरीखा है भरतार, बोलती बाहर गाजूं जी।
अब गहनें घडा कर मुझे पहना दो प्रीतम।
महाराज नाच फिर करूँ सवाया जी ॥ श्री नेम० ॥४

सवैया

समस्या—एक आण राण की, हजार आण बेर की।

हिंग आण तेल आण, गुड और खांड आण।
घृत आण लूण आण, चोटी आण मेण की ॥

सोले सिरणगार आण, कानों के कुण्डल आण।
लिलाट की टीकी आण, राखडी रयण की।
हाथों की तो मेंहदी आण, माथा को मेमद आण।
दांतों की भी चूकां आण, तिमण्यो रयण की॥
मुख को वेसर आण, हार आण डोर आण।
भलकदार नथ आण, चोकी तो जडाव की॥
हाथों का तो बाजूवन्ध, बिछिया जाभर आण।
वाजणी पोलरिया आण, पायल जो पान की॥
कांकण करोड़दार, मुंदडी मरोडदार।
छाप छल्ला मुंदडी, विछिया वणाव की॥
छाजलो वुहारो आण, चीपटो छालणो आण।
चुल्लो आण चक्की आण, वात ये महेर की॥
हांडी आण कुंडी आण, काठ की कठोरी आण।
थाली आण प्यालो आण, कह रही पेहर की॥
उंखल मुंसल आण, ढोलिया सिरख आण।
ओढण को साडी आण, घुमर दूं घेर की॥
छाने आण चोडे आण, दोरो आण सोरो आण।
जाणे जिणतरे आण, मर्यादा सुमेर की॥
काठ आण छाणां आण, हल्दी धण्यो जिरो आण।
छोरा ने हंगाई आण, मैं हूँ नारी शेहर की॥
ऐसी नारी जग जाण, नृग रे नेम री वाण।
एक आण राण की, हजार राण वेर की॥१

ऐसे कामण के फन्द बीच में पडगा।
महाराज नार मिली वड़ी धूतारी जी।
उस दिन से बुद्धि मलीन, गई कला काव्य हमारी जी।
बल हूटा बना निस्तेज अर्क लकडी सा।
महाराज भया धन से दुखियारी जी।
भूपत ने दिया छिःकाय, मांगता बना भीखारी जी।
मैं नारी नाहरडी तुल्य जान ली सागे।
महाराज सारा घर वृत्त सुनाया जी ॥ श्री नेम० ॥५
यह सुनी बात यदुनाथ दक्षिणा दोनी।
महाराज बात किसको नहीं दाखी जी।
नहीं परणसी नेम, वात सारी यह दिल में राखी जी।
यह पूज्य पूनम प्रशाद कथा अनुसारे।
महाराज नेम का चरित्र है साखी जी।
श्री नेमनाथ की कीर्ति, ऋषि नेमिचंद भाखी जी।
उन्नीसे सतसठ साल शहर भीलाडे।
महाराज धर्म का ठाठ लगाया जी ।श्री नेम०॥६

• •

[जैन रामायण के कुछ प्रसंगों पर कवि मुनि श्री द्वारा रचित कविताओं का रसास्वादन आप भी करें]

१० श्री लंका की उत्पत्ति रो त्रिढालियो

राग—आसणरा रे जोगी

शरण जिन जी रा हो,
शरण महाराज हो तेरी ३, ।।टेर।।

रूपाचल दक्षिण दिश श्रेणी,
रतनपुर धन्य भारी हो। स० ।। १

सत्यपुरुष घनवाहन राजा,
द्वादशव्रत शुद्धाचारी हो। स० ।। २

मातृपक्ष हीणो समझी कर,
अन्य खग अमर्ष भारी हो। स० ।। ३

तिण अवसर कंचन पुर स्वामी,
अश्वनीवेग पुण्य धारी हो। स० ।। ४

राणी श्रीमाला गुणवंती,
श्रीकन्ता तास कुमारी हो। स० ।। ५

तिण रे स्वयंवर मण्डप उपर,
आये नृप श्री कारी हो। स० ।। ६

सर्व तजी उण वरचो घनवाहन,
अन्य खग उठ्या युद्धधारी
ले श्रीकन्ता नृप घनवाहन,
पर्वत छोड दिया हारी ह
सर्व खग साथ हुवा ते नृप ने,
आया कोशल देश मझारी ह
ते समय श्री अजित जिनेश्वर,
बारे परिषद रचि भारी ह
सब परिवार लेई नृप डरतो,
अतिभय कहे मुख फाडी ह
श्री जिनराज निर्भय वच भाषे,
राक्षस इन्द्र विचारी हो
जाण स्वधर्मी दोनों ही इन्द्रे,
दियो नव माणक हारी ह
समुद्र मध्ये लंका वसावी,
इन्द्रों ने हितकारी हो
लंका रे मध्य कोट री भींते,
नामो लिख्यो विधि सारी ह
परनारी ने साधु सतावण
ये दोही बात निवारी ह
ये दोही कियां लंका विणसेली,
सीख सभी दिलधारी ह

दोहा

वलि इन्द्र इण पर कहे, धर्म उपर तुझ राग ।
तिण कर तूठां छां हमाँ खुलिया थारा भाग । १

ढाल दूसरी

राग—आदर जीव क्षमागुण आदर

वली पृथ्वी ना विवर मांहे, आठ जोयण ऊचांत जी ।
दण्डगिरि हेठे पातालपुरी छे, दोय प्रवेश दोय भांत जी ।।१
सुणो उत्पत्ति लंका गढ केरी ।। टेर ।।

ते पिण नगरी में तुझ दीधी, जा तू कर आनन्द जी ।
घनवाहन लंका जई बैठो, गया निज थाने इन्द जी ।।२
राक्षस द्वीप विद्या राक्षसणी, तिण सु राक्षस कहवाय जी ।
नर पिण राक्षस रूपे फिरता, सुर नहीं छे इण ठाय जी ।।३
जोजन सात सो राक्षस द्वीपे, त्रिकूट पर्वत जाण जी ।
ऊंचो तो नव जोजन फिर लाम्बो, पचसे जोयण प्रमाण जी ।।४
त्रिकूट पर्वत नाम यों कहिये तिण उपर छे तीन कूट जी ।
मध्यकूट पर लका वनी है, चावी चारों खूंट जी ।।५
तिण पर्वत के नीचे जाणो, न्हनी जमी छे पाताल जी ।
तीन तरफ गुफा आकारे, लंक पयाल रसाल जी । ६
पाताल लंका वीस जोजन री, कही छे ग्रन्थ री साख जी ।
तीन कोट लंका नगरी रा, वर्णन सुणो चित्त राख जी ।।७
तीस लाख कोट मण लोहनी, बाहिर कोट री नींव जी ।
मध्य कोट ताम्बां रो लख बारह, कोडां मण रे करीब जी ।।८

तीजो माहिलो कोट सोना रो, मरण छे दश लाख क्रोड जी।
कञ्चनमय गढ रा कोशिसा, मरणी रतनाँ री जोड जी ॥६
एक सो अस्सी कोश रे माहि ने, लंका रो विस्तार जी।
चार सहस्र छिन्नु दरवाजा, पाँच सो पोल एक द्वार जी ॥१०
सोनामय लंका घर पक्ति, सप्त नव खण्डा वास जी।
एक वीस भोम्याँ प्रतिमल्ल केरा, सूरज ज्यों प्रकाश जी ॥११
कोट किला खाई नो वर्णन, न कह्यो वधतो जाण जी।
रिख नेमीचन्द कहे हिव कहिशुं, लंका घरां रो परिमाण जी ॥१२
लवण समुद्र में तीस जोजन रो, किष्किधर पर्वत नाम जी।
तीस जोजन लंका थी किष्किधा, बान्दर द्वीप तिण ठाम जी ॥१३
उगणीसे सतसट्ठ रा वर्षे, जेठ चउदश सोमवार जी।
जोड़ी पूज्य पुनम प्रशादे, सायरा गाम मझार जी ॥१४

दोहा

लंका ना घरनी संख्या, कहुँ न्यारी न्यारी जात।
सुणो निन्द विकथा तजी, घणी रसीली बात ॥१

राग—ख्याल की

गिणती सुण लीजो, लंका घरों री ईणी रीत सुं ॥टेर॥
चार लाख तम्बोली बसता, दोय लाख कलाल।
पंच लाख पटवार तणा घर, बयालिस लक्ख कोटवाल ॥१
दश लाख तो कह्या सालवी, सतरे लाख सराफ।
पनरे लाख वधिक और सत्त लख, कुम्भावत री च्याप ॥२
तेरे लख तेली छः लख छिपा, नाई लाख पचीस।
चवदे लाख सुथार खाती, कुम्हार लाख छत्तीस ॥३

इग्यारा लाख माली तणा घर, क्षत्री अठारे लाख।
चालीस लाख हाडा का कहिये, जबरी ज्यांरी धाक ॥४
तेईस लाख कायस्थ लंका में, पैंतीस लाख लखारा।
साठ लाख डाढी करे, कीर्ति, सीत्तर लाख पिंजारा ॥५
नव लख है कन्दोई दुकानां, तीस लाख है दरजी।
अस्सीलाख महाजन वसता पिण, नहीं राज्य री मरजी ॥६
नायिका चिहोत्तर लाख धोलेहर, सवा लाख उर धार।
सोनी सेंतीस लाख शहर में, अडतीस लाख लोहार ॥७
अठारे लाख राणेहर कहिये, तीस लाख ध्वजबंध।
वीस लाख वाणावली सरे, और तणी नहीं सध ॥८
सात करोड बाणु लाख टांणे, पच्चीस सेंहस फिर जाण।
इतरा घरां री आई है गिणति, और को नहीं परिमाण ॥९
पूज्य पुनमचन्द जी प्रशादे, रिख नेमीचन्द भाखी।
उगणी से सतसट्ठ आसाढ, गाम गोगून्दा दाखी ॥१०

[एन सी ठेहतार

११ कोटिशीला वर्णन

दोहा

कोटि शीला-वर्णन करूँ, सुणजो ते चित्त लाय ।
दक्षिण भरत मध्य खण्ड में, सिन्धु देश के मांय ॥

राग—नगरी खूब बणी छे०

सीला क्रोडमणी छे जी, वासुदेव धणी छे जी ।
ज्यां री पोंच घणी छे जी, ग्रन्थे साख भणी छे जी ॥टेर॥
सीला एक जोजन री ऊंची, जाजन लाम्बी चौडी ।
जोजन एक जमि में ऊंडी, चार कडां री जोड़ी ॥१
भरत क्षेत्र में वसने वाली, सिन्धु देवी रो ठांणो ।
तिण रो भवन सीला रे पासे, चार करण्ड बली जाणो ॥२
शान्तिनाथ रा गणधर मोटा, चक्रायुध इण नामें ।
पाटानुपाट बत्तीस करोड़, मुगति गया तिण ठामें ॥३
कुन्थनाथ रा पाट अठावीस, सात करोड मुनि जाणो ।
केवल पामी इणी ही ज ठामें, पहुंता छे निर्वाणो ॥४
पाट चतुर्वीस अर्हनाथरा, साधु बारह कोडी ।
मल्ली वीस पाट खट् कोडी, सिद्ध थया कर्म तोडी ॥५

मुनिसुव्रत रा पाट पचासे, क्रोड तीन मुनिराया।
बारह पाट क्रोड नमी ना, अविचल पदवी पाया ॥६
सर्व क्रोड़ अडतीस मुनिवर, इण पर मुगति विराजे।
करोड़ों सिद्ध और करोडमणी छे, क्रोड सीला यों वाजे ॥७
वासुदेव प्रथम छत्र ज्यों उपाडे कर साही।
दूजो मस्तक तीजो कण्ठ लग, चौथो छाती ताहि ॥८
पंचमो नाभि लग उठावे, छट्ठो कडियाँ सुद्धे।
तीन खण्ड में फिरे दुवाई, उठावे इण मुद्दे ॥६
सातमो साथल और आठमो, गोडा ताहि आणे।
नवमो वासुदेव उंचावे, चार आंगुल परिमाणे ॥१०
डावे हाथ सुं पकड़ उपाडे, नमन करो तिणवारो।
बलवन्त जोधा नर नहीं बोदा, सगलां रा सिरदारो ॥११
पाछी हेठी मेले एडी सु, उचक करी ने नमावे।
पग सुं खुंद धरती पे पाछी, जिम थी तिम जमावे ॥१२
लछमण गोडां लग उपाडी, मिट गई सारी शंका।
जोर पिछाण्यो नृप सब जाण्यो, निश्चय लेसी लंका ॥१३
संवत् उगणीसे वर्ष पचासे, श्रावण सद्गुरु वारो।
शहर देलवाडे कियो चोमासो, हर्ष्या सहु नर नारो ॥१४
करोड सीला रो वर्णन कीनो, पद्म पुराण री साखे।
पूज्य पूनम महाराज प्रशादे, नेमीचंद यों भाखे ॥१५

[एक सौ छियानवे

[अशोकवाटिका में सीता अपने पति और देवर की प्रशंसा करती हुई मन्दोदरी को कहती है]

१२ राम-प्रशंसा

राग—मोहनगारो रे

बालम म्हारोए २, वो गहरा हरिया दुपट्टा वारो ए । टेर॥
सीता जी कहे मन्दोदरी से, थूं पति बखाणे थारोए ।
कहां जम्बुक कहाँ केहरी, कहां खर तुखारोए ॥१
बाल पणे में बल देखायो, सब को मनड़ो हुलसियोए ।
राजगृही ने छोडी ससुरो, अयोद्धा वसियोए ॥२
जनकराय रो संकट काटचो, दुश्मन सैन्य हटायोए ।
स्वयंवर मण्डप माहिने फिर, धनुष्य चढायोए ॥३
भामण्डल रो जोर हटायो, तुझ डोसो पण डरियोए ।
बोल सक्यो नहीं मुंढे वठे मैं, रघुपति वरियोए ॥४
सुग्रीव जी रो न्याव निवेडचो, साहशक्ति ने मारचोए ।
सब वान्दर जब हुवा पक्ष में, काज सुधारचोए ॥५
केई नप दास भये हैं उनके, जिनके दुःख परिहरियाए ।
नेम कहे सीता ने यह गुण, राम रा करियाए ॥६

१३ लक्ष्मण-प्रशंसा

राग—मोहनगारो रे

देवर म्हारोए २, वो केसरिया रूमाल वारोए ॥ टेर ॥
कमध्वज कुंवर केसरियो म्हारो, देवर गुण भण्डारोए।
उण री होड़ करे कुण बल में, अपरम्पारोए ॥१
वज्रावर्तन धनुष्य चढ़ायो, सुरनर महिमा कीधीए।
अष्टादश वर कन्यका, खग रायाँ दीधीए ॥२
सिंहोदर और वज्रजंग रो, प्रण तो पूरो रखायोए।
सुरमाला रो तात पल्ली से, तुरत छडायोए ॥३
ब्राह्मण ने परचो दीखलायो, रामपुरी को वसायोए।
वनमाला रो दुःख दूर कर, जोर वतायोए ॥४
भरत पक्ष ले अतिवीर्य्य री, दीधी शान गमाईए।
पंचशक्ति को जीत-जीत, पद्मा को व्याहीए ॥५
वंशस्थल गिरि देव धुजाता, लोग घणा दुःख वालाए।
कुलभूषण और देशभूषण का, संकट टालाए ॥६
चवदे सहस विद्याधर राजा, सगा था तीनों भाईए।
उणें मार नणदल रे हाथों, लाम्बी पेराईए ॥७

शंका हटाने सब भूपत री, क्रोडशीला कर धारीए।
सब ने हुवो विश्वास लंका पर, कर रह्या त्यारीए ॥८

बड़ा बड़ा रा मान मिटाया, अब तुझ री है वारीए।
थूं पण नजरों देख लेसी, यह बाताँ सारीए ॥६

एडा कन्त देवर है म्हारा, थू कांई होड़ करावेए।
नेममुनि कहे रत्न काच कब, सरखा थावेए ॥१०

अमर सिंघाडे पूज्य पुनम गुरु, दिन दिन तेज सवायाए।
उगणीसे छासठ जयपुर, चौमासा ठायाए ॥११

[सम्राट् रावण की प्रेरणा से उत्प्रेरित मन्दोदरी
महाराणी सीता के सन्निकट पहुंच, रावण के गुण
गान गाने लगी जब सीता विचलित न हुई
तो वह उल्टे पैरों लौटने लगी तब
सीता का कहना]

१४ सीता की फटकार

राग—लावणी

पाछी जावण लागी बोल वचन सुण अब को ।
उभी रहे मन्दोदरी नार लेती जा लब को ॥टेर॥

अब सुण ले मेरी बात राम जो रूठो ।
थने लाम्बी पहरासी हाथ हियो क्यों फूटो ।
थारो अल्प दिनों को सुख जाणजे खूटो ।
यो सतियों केरो मुख वचन नहीं झूठो ।
जो वचन जो झूटो होय जगत् होय डब को ॥उभी०॥१
तूं किण पे आई चलाय वचन यों बोली ।
थे कुल की गमाई आब लाज थे खोली ।
तुझ में रति गुण नाय पनी ज्यों फोली ।

सज आई सिनगार जगत् की गोली ।
जो होय सती का लंछ वचन कहे ढब को ।।उभी०।।२
तूं भोग दलाली काज बनी है दूती ।
लम्पट का सुरा कर बोल चढी क्यों भूती ।
तूं लगी मेरे क्यों केड हडकनी कुत्ती ।
इरा लखरगों के न्याय पडे शिर जूती ।
कुलखरगी बगडाल उठचो क्यों भभको ।।उभी०।।३
अव आवे छे रघुनाथ रावरग रा जमजे ।
नरगदल के लम्बी हाथ अबे नहीं समझे ।
मैंने करडा कया है बोल दोष तूं खमजे ।
तूं सेंठा राखजे 'नेम' पियु ने दमजे ।
सूर्योदय की वेल पडे ज्यों झब को ।।उभी०।।४
ज्यों मिंढो मांडे सिंग सिंह सुं जाई ।
मरती वेला में पांख किडी के आई ।
त्यों बाबा केरो धिंग मौत बुलाई ।
नैनों को ढकता सियाल कान दोई लाई ।
त्यों आंखां आडा कान करे तू बाई ।
इरा सुं जावेला लाज लागे कुल ठब को ।।उभी०।।५
अव मुझ पासे झकाल करो मत कुड़ी ।
तज लम्पट की वात करो अव रूड़ी ।
तेरी छिन में फूटेगी यह कनक की चूड़ी ।
पति लम्पट घर नार दलालरग वूड़ी ।
सुरग रावरग रारगी के सिर चढचौ है चव को ।।उभी०।।६

लंक पयाला जाय 'वीर' नृप कीनो।
पुरी किष्किधाराज कपि ने दीनो।
कई पाय पडे वडराय जगत् जस लीनो।
तुझ कन्त मारण को लंक प्रयाण कीनो।
यह सुण सीता का वोल पड्यो दिल धव को ॥उभी०। ७

एरापत को छोड़ गधो कुण लावे।
कल्पवृक्ष को छोड़ वबूल कुण वावे।
त्यों सीता तो एक फक्त राम को ध्यावे।
यों सोच मन्दोदरी लौट महल में आवे।
हंसली हंस को छोड़ काग चाहे कव को ॥उभी०॥८

उन्नीसे अडतालिस साल कियो शुभवासो।
हुवो पूज्य पुनम प्रशाद बुद्धि प्रकाशो।
पचभद्रे में आय कियो है चौमासो।
पाखण्ड घटियो जोर सु ज्ञान उजासो।
कहे नेमिचन्द लो गाय कण्ठ ले नभ को ॥उभी०॥९

[एक गो [illegible]

[लक्ष्मण ने रावण पर चक्र का प्रयोग किया उसका वर्णन कवि के शब्दों में]

१५ लक्ष्मण का चक्र चलाना

दोहा

वचन सुणी रावण तणा, लक्ष्मण कोप अपार।
चक्र चलावे किणविधे, ते सुणजो चित्त लाय ॥१

राग—खडका की

लक्ष्मण कलकल्यो कोप में परजल्यो,
कडकडी भीड ने चक्र वावें।
आकाशे भमावियो सणण चलावियो,
जाय वैरी नो शिरच्छेद लावे ॥१
हरि रे कोपावियो चक्र चलावियो ॥टेर॥
रघुसेना में जावतो सुख वर्तावतो,
रत्न सुवर्ण ने पुष्प जुई।
महिमा वस्त्र तणी केशर सुगंध घणी,
पंच प्रकार री वृष्टि हुई ॥२

राक्षस सेना मही चक्र आयो वही,
तांम तो घोर अन्धकार हुवो।
वावल विहामणी महा रे डरावणी,
खारमय उठयो अधिक धूंवो ॥३

वर्षा हुई घणी अग्नि पत्थर तणी
धूल कांकर अनें फूस फांटो।
रज उडी जती आंख बुरीजती,
उल्कापात ने शाल कांटो ॥४

अन्धकार ऐसो थयो केम जावे कह्यो,
हाथ सं हाथ तो नाय सूज्झे।
कायर नर लडथडे तुरत हेठा पड़े,
शूर वीरों ना ही पाव धूजे ॥५

रुचि घर जावा तणी फां फां मारें घणी,
पन्थ को भेद तो नाही पावे।
आमां सामा दर वड़े आफल्यां धस पड़े,
जाणें के शाकिनी भूत खावे ॥६

भूत ने प्रेत जोटिगन जोगिणी,
नागा खडक ले आकाशे नाचे।
खांड खांड फूंकता मुख ज्वाला मूकता,
हा हा कार तो अधिक माचे ॥७

हड़ हड़ हड़ हड़ हड़ ताम हड़हाटो हुवो घणो,
सड़ ड़ ड़ ड़ अग्नि ना बाण छूटे।

[[illegible]

धडडड धरति सहु धूजे घणी,
तडडड करती नाड टूटे ॥८

भणणण तो भणकार हुवो घणो
घणणण ज्यों मृगराज गाजे।

फणणण ज्यों फूंकार करतो घणो,
सणणण चक्र नो शब्द वाजे ॥९

नारी कह्यो हतो, केम करिये मतो,
वीर कहे मैं तो बोल राख्यो।

थोडो कह्यो इहाँ चक्र वर्णन तिहां,
पद्मपुराण में बहु भाख्यो ॥१०

मंत्री कहे स्वामि जुवो पुण्य पूरो हुवो,
सुणत दशमुख करत नीला।

कोप कहे मूढ तू डरत व्यर्थ में,
ऐसे मेरे राज्य में बहुत खीला ॥११

भूप वचन सुण्यो मंत्री मस्तक धुण्यो,
कर्म तणी गति नेम जुई।

चक्र तब आवतो रावण गल लागतो,
साबू रे माहे ज्यों तांत बूई ॥१२

पुष्प वृष्टि हुई देवता तब कही,
अष्टम वासुदेव पुण्य पूरा।

पूज्य पुनम तणें प्रशाद नेमी भणे,
ढाल गावो थे होय शूरा ॥१३

राग—गर्व मनति कर रे

श्री मुनिसुव्रत को ध्यावूं, सुख शुभ शास्वता पावूं।
सती सीता का गुण गावूं, ऐसी है रघुवर नारी।
महिमा जग में विस्तारी ॥१

काल से डर रे, मेरी जान काल से डर रे।
काल फिर सब ही जग खाया, चले गये बड़े बड़े राया ॥टेर॥

सीता को लंका से लाया, अयोद्धा रघुवर जी आया।
सज्जन जन देखी सुखपाया, राम है सीता का रागी।
शोकों की द्वेषता जागी ॥काल से डर रे०॥२

राणियाँ सब सीता पै आई, रावण का चित्र बनवाई।
नगर में वार्ता फैलाई, सीता के अवगुण सब दाखे।
कारण नहीं रघुवर की राखे ॥काल से डर रे०॥३

रघुपति महलों में आवे, राण्यां सब उने समझावे।
रावण का चित्र दीखलावे सीताजी दर्शन करे छाने।
राम तो बात नहीं माने ॥काल से डर रे० ॥४

पधारे सभा बीच स्वामी, कोटवाल कहता सिर नामी।

[illegible]

अर्ज एक सुनो अन्तर्यामी, नगर में निन्दा बहु थावे।
कान से सुनी नहीं जावे। काल से डर रे० ॥५

बिल्ली को पय कोई भोलावे, सिंह मुख आगे भख आवे।
निर्धन पे दौलत कोई लावे, भुखे को भेजे रसोडे।
यह तो सब हर्गिज नहीं छोडे। काल से डर रे० ॥६

ऐसे ही सीता जी जाणो, ले गयो रावण महाराणो।
शीलव्रत निश्चय खण्डाणो, राम सुण सीता पर कोप्यो।
सती को देशवटो सोंप्यो। काल से डर रे० ॥७

राम को कहता है लछमण, सतियों में सीता शिरोमण।
कछु न दुनिया में लखण, लोक नहीं अपनी तो जोवे।
बात पर घर की बिगोवे। काल से डर रे० ॥८

राम तब मुख को कर राता, कहे मत बोलो अब भ्राता।
मेरी जो चाहो सुखसाता, देर तुम अब तो मत लावो।
सीता को वन में पहुँचावो। काल से डर से० ॥९

वेश तब काला पहनाई, सीता को वन में पहुँचाई।
रथी कहे मस्तक झूकाई, राम की आज्ञा सुण लीजे।
दोष मुझ ऊपर मत दीजे। काल से डर रे ॥१०

रोती हुई कहे सीता माई, दोष मुझ कर्मों का भाई।
कहना रघुपत को अब जाई, मैं थी घर जितरे था दोरा।
राम अब रही जो तुम सोरा। काल से डरे रे० ॥११

सुणी पुनः रथ को लोटायो, सारथी अयोध्या आयो।
राम को मस्तक झूकायो, सीता की बात कही सारी।
राम को हुवो दुःख भारी। काल से डर रे० ॥१२

नैनों में आँसू भर आवे, राम को लछमन समझावे।
रोयाँ से राज्य पुनः नावे, मैंने तो वरज्या था पेला।
मानी नहीं आप उण वेला। काल से डर रे० ॥१३
सीता का विरह सतावे, राम झट जंगल में आवे।
शोध सब वन की करावे, सीता की खबरां नहीं पाई।
राम को मूर्छा तब आई। काल से डर रे० ॥१४
सचेतन होकर रघुरायो, अयोध्या लौट कर आयो।
सीता तो वसगी मन मायो, वर्ष सम काटे है रातां।
सुनो अब सीता की वातां। काल से डर रे० ॥१५
सीता अब चाली है वन में, नवकार मंत्र गिने मन में।
गर्भवती कोई नही संग में, एकाकी सीता जी रोवे।
पूर्व का पाप आलोवे। काल से डर रे० ॥१६
पुंडरीक पुरी को महारायो, मदन सुण वज्रजंग आयो।
सीता को देखी दुःख पायो, तुझे कुण वन में ला राखी।
सीता ने बीतक सब भाखी। काल से डर रे० ॥१७
राजा ने धीरप तब आपी, धर्म की भगनी कर थापी।
सीता की चिन्ता सब कापी, आप की नगरी ले आयो।
महल में रख के सुख पायो। काल से डर रे० ॥१८
सवा नवमास पूर्ण थाया, सीता ने दोय पुत्र जाया।
नाम 'लव कुश' दो है राखा, उत्सव खूब नगरी में कीनो।
दान बहु याचक को दीनो। काल से डर रे० ॥१९
कुंवर दोई मोटे जब थावे, विनय विद्या बालक को आवे।

[एक मी लड़ाई

सम वय बालक मिल जावे, कभी वे बागों में रमते।
ख्याल वे करते मन गमते। काल से डर रे० ॥२०

कभी वे चंग लेई गावे, कभी वे राजा बन जावे।
कभी वे चोर पकड लावे, बाण वे मारण नहीं चूके।
कभी वे मारे लात मुक्के। काल से डर रे० ॥२१

लाल मत हम को धमकावो, हुक्म तुम किस पर चलावो।
माल तुम पार का खावो, अठे तो बणी रह्या राणा।
बाप का नहीं है ठिकाणा। काल से डर रे० ॥२२

वचन सुण दोनों दुःख पाये, शीघ्र निज महलों में आये।
मात के चरण शिष नाये, अम्मा कहो अपनी क्या ख्यात।
सीता ने मांड कही सब बात। काल से डर रे० ॥२३

बात सुणी रीश घणी आई, भेजी वन माहे मुझ माई।
युद्ध मैं करूं शीघ्र जाई, पिता की खबरां ले लेवें।
दुःख नहीं फेर कभी देवे। काल से डर रे० ॥२४

सीता कहे ऐसे मत कहना, जबर से सब्बर कर रहना।
कुंवर कहे यह तो नहीं होना, घणा दिन हुआ माल खाता।
अब तो करां जंग हाथां। काल से डर रे० ॥२५॥

कुंवर यों कह करके चाल्या, नहीं रह्या माता रा पाल्या।
मामा रा पग तो जाय झाल्या, मामा जी त्यार होय जावो।
चढण में देर मती लावो। काल से डर रे० ॥२६

मामा सुण चिन्ता में पेठा, कहे तुम उत्तम का बेटा।
बाप से नहीं करना खेटा, जीता जो रावण के आगे।

तेरा वहाँ दाव नहीं लागे । काल से डर रे० ॥२७

वात नहीं मानां मैं एको, जोर अब म्हारो भी देखो ।
मामे जाण्यो काम निर्भेको, सज्या अब हाथी रथ घोडा ।
पायदल मिलिया केई कोडां । काल से डर रे० ॥२८

नगर पुर आया है फिरता, वड़े वड़े भूप भेला करता ।
विजय का डंका ही वजता, अयोद्धा आय किया डेरा ।
नगर को चारों ओर घेरा । काल से डर रे० ॥२९

वात सुण रघुपत रीसायो, हुक्म कर दल वल सज्जायो ।
क्रोध कर लक्ष्मण भी आयो, उभय दल आपस में भिडिया ।
केई नर भूमि पर पडिया । काल से डर रे० ॥३०

भामण्डल भूप सुणी आयो, भाणेजा देखी सुख पायो ।
वीर रस रण में दीखलायो, सुग्रीवादि पूछे है ऐसे ।
आप इन पक्ष में कहो कैसे । काल से डर रे० ॥३१

कहे ये सीता के जाये, राम के वेटे कहलाये ।
मुलाकात करने को आये, सुणी सभी चुपचाप वैठे ।
लडे़ ये बाप और वेटे । काल से डर रे० ॥३२

दोनों में युद्ध मचा भागे, लव अरु कुश के आगे ।
राम के सुभट सभी भागे, खड़ा नहीं युद्ध में कोई ।
राम और लक्ष्मन है दोई । काल से डर रे० ॥३३

लव जा रघुपत से भिडिया, कुश जा लक्ष्मण से अडिया ।
परस्पर दोनों ही लडिया, किया युद्ध नाना प्रकारे ।
नहीं कोई युद्ध में हारे । काल से डर रे० ॥३४

कहता लव राम को ऐसें, रावण को मार लिया वैसे ।
गिदड नहीं हम तो उण जैसे, तीन खण्ड खोसकर लीना ।
काम क्या आप भला कीना । काल से डर रे० ॥३५

पड़ा अब मर्द से काम, युद्ध तज बैंठो निज धाम ।
लेवो अब भगवत का नाम, भोपे कब भारत ही कीना ।
मजामें शंख बजा लीना । काल से डर रे० ॥३६

राम कहे जिभ करे छोरे, आये क्यों सामने मोरे ।
जबर से सबर कर जोरे, चन्द दिन जिन्दा जो चावो ।
नमन कर पाछा फिर जावो । काल से डर रे० ॥३७

लव पर राम बाण छोडे, बीच में आता ही तोडे ।
घायल हुए राम के घोड़े, लव के सननन बाण छूटे ।
कायर के देख हिये फूटे । काल से डर रे ०॥३८

कुश तो लछमन के संग में, युद्ध तो करता है रंग में ।
मचा है शोर पूरा अंग में, लछमन ने चक्र जब मेल्यो ।
कुंवर ने हाथ में झेल्यो । काल से डर रे० ॥३९

शस्त्र और अस्त्र सभी हारे, राम अब लछमन विचारे ।
बदल गये किस्मत हमारे, विधाता क्या करना चावे ।
राज्य अब हाथों से जावे । काल से डर रे० ॥४०

चलायो लव ने अब बाणो, राम को रथ भी गुडानो ।
देख कर राम घबराणो. जीमनी आंख तो फरकानी ।
शकुन शुभ लीना पहचानी । काल से डर रे० ॥४१

व्योम से आय नारद हेठा, लड़ो क्यों बाप और बेटा ।
करो क्यों आपस में खेटा, राम कहे कुण बेटा बापो ।

कहता तोय लागे है पापो । काल से डर रे० ॥४२

नारद तब सगली सुनाई, राम सुण मूर्छा गत पाई ।
कुवर जा झुके चरण माई, गोद में लेकर बैठावे ।
राम मन हर्ष नहीं मावे । काल से डर रे० ॥४३

कुवर कहे सुन लेना तातो, वेग से आणो मुझ मातो ।
करेंगे और पीछे बातो, राम तब भूप भेजावे ।
सीता जी आना नहीं चावे । काल से डर रे० ॥४४

आये चट राम सेनाणी, देखकर सीता हर्षाणी ।
आखिर में अयोद्धा आणी, धीज की कर दी तैयारी ।
मिले वहाँ लाखों नर नारी । काल से डर रे० ॥४५

खाड खण काठ धूकाणी, ज्वाला से ज्वाला मिलाणी ।
सीता कहे मुख से यों वाणी, वंच्छा नर राम को टाली ।
आग तूं दीजे मुझ बाली । काल से डर रे० ॥४६

कहो यों पावक जलधाणी, हुवो है पावक को पाणी ।
पंच द्रव्य वर्षे हैं आणी, पाणी के पंकज पर बैठी ।
शंका सब जन की तो मेटी । काल से डर रे० ॥४७

सभी जन धन्यवाद देवें, राम तब सीता को केवे ।
महला चलो सुख माहि रेवें, सीता कहे अब तो नहीं आनूं ।
संजम ले परम सुख पानुं । काल से डर रे० ॥४८

आखिर में संजम ले लीधो, लोच निज हाथों से कीधो ।
समता को प्यालो भर पीधो, विरला कोई टेक ऐसी धारे ।
संजम ले आतम उद्धारे । काल से डर रे० ॥४९

निराशा सव के दिल छाई, राम आ महलों के माई।
सीता विरह सहा नहीं जाई, आमली मिल जावे खासा।
पूरे क्या आम्बा की आशा । काल से डर रे० ॥५०

इसी तरह रघुवर नित्य रेहता, वर्ष तो बीत गया केता।
एक समय ज्ञान इन्द्र देता, राम की मृत्यु यदि होवे।
तो लक्ष्मण हर्गिज नहीं जीवे। काल से डर रे० ॥५१

भावी वश एक देव आई, बनावटी राम बन जाई।
दिया फिर मृत्यु दीखलाई, नोकर जा लछमन को केवे।
राम तो राम शरण हुवे। काल से डर रे० ॥५२

धसक कर लछमन तो परियो, कहता हा राम तो मरियो।
डेरो जा चौथी में करियो, देव तो मिला कैसा छलिया।
मार दिया लछमन सा बलिया । काल से डर रे० ॥५३

खबर सुन आया रघुनाथ, रीसाया दीसे मुझ भ्रात।
लोक कहे मरने की बात, बोले तब राम रोश करके।
मरे हैं तेरे सब घर के। काल से डर रे० ॥५४

मेरा तो जीता है भाई, फिरे ले छः मासां ताँई।
आखिर दिया देव समजाई, दाग झट लछमन को दीधो।
राम ने संजम ले लीधो। काल से डर रे० ॥५५

घणा वर्ष संजम को पाली, तप कर आतम उजाली।
मोह मद ममता को टाली, सीता गई अच्युत कल्पन में।
इन्द्र वन चिन्ते है मन में। काल से डर रे० ॥५६

प्रथम यदि राम मोक्ष जावे, मेरे से रहा नहीं जावे।
सीता वन सीतेन्द्र आवे, हाव और भाव करी वोले।

राम तो ध्यान नहीं खोले । काल से डर रे० ॥५७

उच्चतम भाव प्रगटाया, राम तव केवल को पाया ।
सीतेन्द्र चरणे शिर नाया, देशना दीव्य राम दीनी ।
अन्त में मोक्षपुरी लीनी । काल से डर रे० ॥५८

विभीषण सुग्रीव हनुराया, संजम ले शिवसुख को पाया ।
जन्म और मरण मिटाया, हुए सब मुनिसुव्रत वारे ।
आतमा केइयों की तारे । काल से डर रे० ॥५९

रावण और लछमन जिन थासी, सीता वन गणधर शिव जासी ।
कथा में संक्षिप्त परकाशी, सभी जन राम राम बोलो ।
हिरदे के पट को झट खोलो । काल से डर रे० ॥६०

सिघाड़ा अमरसिंह सोवे, पुनम पूज्य मेरा मन मोवे ।
मेरे को महर नजर जोवे, जोड़कर नेममुनि बोले ।
नहीं कोई राम के तोले । काल से डर रे० ॥६१

उन्नीसे साल सेंताली, वैशाख सुदी पंचम गुरुवारी ।
शहर जालोर है गुलजारी, पन्ना मुनि मेरा गुरुभाई ।
संजम का सहायक सदाई । काल से डर रे० ॥६२

१७ नारी नैन के बाण

राग—कोरो काजलियो

छेल भमर जी रे, थे बण रह्या दिन ने रात। छे० ॥टेर॥
थे राचो पर परणी साथ, तो करसी थांरी घात। छे०।
थारे टके न पैसो हाथ, थारी लाजे कुल ने जात। छे० ॥१
थारे धूल नाखे सब न्यात, थारे जम मारेला लात। छे०।
भरावे अग्नि थम्बेरे बाथ, थे मत करो इण से बात। छे० ॥२
चटक मटक रहे उजलो, नहीं अंग रे रज लगार। छे०।
खूबसूरत औरत देखने, थूं देखे आंख्या फाड। छे० ॥३
या काम कटक री नायिका, या नारी बड़ी शैतान। छे०।
दल बादल ने ले चढ़ी, या मोड़े मर्दों रा मान। छे० ॥४
या भांपण धनुष्य चढ़ाय ने, या मारे नैण रा बाण। छे०।
सुणो दृष्टान्त इण उपरे. या ले लम्पट नर रा प्राण। छे० ॥५
एक क्षत्री आणो ले आवतो, चौर उठ्यो विषम लख वाट। छे०।
ठाकुर बाण घणा मुकिया, चौर लिया वर्छी सूं काट। छे० ॥६
एक तीर बाकी रह्यो जद, नारी ने पकड़्यो हाथ। छे०।
फेंको मति इण बाण ने, थे रखे विगाड़ो बात। छे० ॥७

रथ री भूल ऊंची करी, ठकुराणी ठमोडा लगाय । छे० ।
रूप देख मूर्छी गयो, जद ठाकुर दियो पोढाय । छे० ॥८
पड्यो जाण खत्री गर्वाणो, कहे देख मर्द का काम । छे० ।
तस्कर कहे गर्व मति, थारा तोड्या बाण तमाम । छे० ॥९
मरतो नहीं एक बाण सुं, तूं खाली मूंछा मत ताण ! छे० ।
म्हारे थारो बाण नहीं लागियो, लाग्यो नारी नैना रो बाण
। छे० ॥१०
एकदम में देखत मर्यो, या चीज बुरी है जलाल । छे० ।
जो रहे सदा इण संग में, ज्यारा होसी कांण हवाल । छे० ॥११
चोर ज्युं भव-भव में हि मरतो, पर परणी ने देखत पाण । छे० ।
ठाकुर संजम ले लियो, ज्यारे लाग्यो वैराग्य बाण । छे० ॥१२
नेम मुनि कहे गुण जो चावो, वन्दो पूज्य पुनम गुरु पाय । छे० ।
उगणीसे चिमोत्तर होनी, चौमासो आकोला माय । छे० ॥१३

[एक सौ चिपालीस

१८ सती श्रीमती चरित्र

राग—द्रौण की

सुख करण दुःख हरण जपो नवपद को।
महाराज खरा है यह रख वाला जी।
हुई नवपद के प्रताप सर्प फूलन की माला जी। टेर।
एक श्रीपति सेठ पोतनपुर अन्दर रहता।
महाराज पुत्री उन घर में जाई जी।
श्रीमती दियो है नाम काम सब में चतुराई जी।
वह बालपणा में धर्म तात संग सीखी।
महाराज सेंठी जिण समकित पाई जी।
वह करती धर्म ध्यान आई यौवन वय माई जी।
तब सेठ चिन्ते किसी धर्मी को परणा दू।
महाराज मिथ्यात्वी से लेवूं टाला जी ।। हुई० ।।१
उस वख्त पुरुष कोई और नगर का वासी।
महाराज पोतनपुर अन्दर आया जी।
उन देख कन्या का रूप तुरत मन में मोहाया जी।
पूछे लोगों को किस की वाल कुमारी।

महाराज हाल सब उन का सुनाया जी ।
मिथ्यात्वी को देता नाय देवे जिन धर्म को पाया जी ।
सुण चिन्ते मिथ्यात्वी कन्या तो यह परणूँ ।
महाराज सीखूँ धर्म ग्राल पंपाला जी ॥ हुई० ॥२

राग—आच्छो आनन्द रंग वर्षायो

महाराज मिले बड भागी, म्हारी लगन गुरुजी से लागी । टेर॥
कर कपट मुनि पे आयो, वाणी सण के खूब हुलसायो ।
आज भाग्यदशा मुझ जागी ॥ महा० ॥१
ज्ञान सीखे कर कर लटका, भितर से तो जहर का बटका ।
उपर से तो तृष्णा त्यागी । महा० ॥२
कभी आयम्बिल व्रत भी करता किडियाँ देख पूंजी पग धरता ।
ऐसा बन गया मटक वैरागी ॥ महा० ॥३
रिख नेमिचंद केवे ऐसे, उन के काज सरे कहो कैसे ।
धर्म ठग देखो यह सागी ॥ महा० ॥४

राग—ढोल की

मुनि विहार किया तो ही सब मिल उनको रखा ।
महाराज यह कपटी श्रावक बणिया जी ।
रहा सेठ जी पौषधशाल में ना पडिक्कमणा गिणिया जी ।
यह धर्म भावना देख सेठ को दीना ।
महाराज खुशी करनी सुण महिमा जी ।
सब सोंप्या पासा रूपया भला भंडारा भलिया जी ।
यह जिनके धर्म को आज पायो खासो ।

१८ सती श्रीमती चरित्र

राग—द्रौण की

सुख करण दुःख हरण जपो नवपद को।
महाराज खरा है यह रख वाला जी।
हुई नवपद के प्रताप सर्प फूलन की माला जी। टेर।
एक श्रीपति सेठ पोतनपुर अन्दर रहता।
महाराज पुत्री उन घर में जाई जी।
श्रीमती दियो है नाम काम सब में चतुराई जी।
वह बालपरा में धर्म तात संग सीखी।
महाराज सेंठी जिरा समकित पाई जी।
वह करती धर्म ध्यान आई यौवन वय माई जी।
तव सेठ चिन्ते किसी धर्मी को परणा दू।
महाराज मिथ्यात्वी से लेवूं टाला जी॥ हुई०॥१
उस वक्त पुरुष कोई और नगर का बासी।
महाराज पोतनपुर अन्दर आया जी।
उन देख कन्या का रूप तुरत मन में मोहाया जी।
पूछे लोगों को किस की बाल कुमारी।

महाराज हाल सब उन का सुनाया जो।
मिथ्यात्वी को देता नाय देवे जिन धर्म को पाया जी।
सुण चिन्ते मिथ्यात्वी कन्या तो यह परणूँ।
महाराज सींखूँ धर्म आल पंपाला जी॥ हुई० ॥२

राग—आच्छो आनन्द रंग वर्षायो

महाराज मिले बड भागी, म्हारी लगन गुरुजी से लागी। टेर॥
कर कपट मुनि पे आयो, वाणी सण के खूब हुलसायो।
आज भाग्यदशा मुझ जागी॥ महा० ॥१
ज्ञान सीखे कर कर लटका, भितर से तो जहर का बटका।
उपर से तो तृष्णा त्यागी। महा० ॥२
कभी आयम्बिल व्रत भी करता, किडियाँ देख पूंजी पग धरता।
ऐसा बन गया मटक वैरागी॥ महा० ॥३
रिख नेमिचंद केवै ऐसे, उन के काज सरे कहो कैसे।
धर्म ठग देखो यह सागी॥ महा० ॥४

राग—द्रोण की

मुनि विहार किया तो ही सब मिल उनको रखा।
महाराज वह कपटी श्रावक बणिया जी।
ला सेठ जी पौषधशाल भेला पडिक्कमणा गिणिया जी।
यह धर्म भावना देख सेठ यों बोला।
महाराज पुत्री परणो गुण मणिया जी।
मन मांग्या पासा ढल्या भला पोबारा भणिया जी।
वह चिन्ते धर्म तो आज पाधरो आयो।

महाराज इते दिन रटतां माला जी ।।हुई०।।३

राग—हां जी बना थारी हथाई म्हारो बेसणो

हाँ हो सेठां, धूर्त बोल्यो अंग धूजतो,
हां हो सेठां, कानों के आडा दिना हाथ।
ऐसो बोल बोलो तो जासुं थारा धाम सुं ।।टेर।।
हां हो सेठां, थांरी शाला ने म्हारो बेसणो,
हां हो० इसडी किम काढो छो बात ।।१
म्हारो जीव धडक्यो है नारी रा नाम सुं ।।टेर।।
हां हो सेठां, नारी तो नागण सारखी,
हां हो सेठां, विषनी है वेल समान।
हां हो० कामणगारी इण भव बूरी,
हां हो० परभव नरक री खान ।।२
हां हो० सुसरा जमाई हुवा पछे,
हां हो० धर्म रो रे वे नहीं व्यवहार।
हाँ हो० साहमी नो सगपण दोहिलो,
हां हो० भोग मिल्या बहुवार ।।३
हां हो० म्हारे तो संजम लेवणो,
हां हो० कुण घाले गले डाल।
हां रे प्राणी नेम मुनि कहे सांभलो,
हां रे धूर्त, देखो मांडी है मायाजाल ।।४

सेठ जी का प्रत्युत्तर

राग—रुणजुणियो ले

सेठ सुणी तब बोलियो, दृढधर्मी जी।

है धन धन तुम अवतार हो, प्रियधर्मी जी।
आच्छी विचारी बातड़ी, दृढधर्मी जी।
थां जाण संसार असार हो, प्रिय० ॥१
जो तुम्हें संजम लेवणो, दृढ० ।
थे जेज करो मति काय हो, प्रिय० ।
कुवारी ने घर वर घणा, दृढ० ।
कुण देवे ऐसी अन्तराय हो, प्रिय० ॥२
चढ़ती जवानी आप री, दृढ० ।
फिर चढतो है वैराग हो, प्रिय० ।
धन खर्ची महोच्छव करॉं, दृढ० ।
लो दीक्षा मोटा भाग हो, प्रिय ॥३
धूरत सुणी मन चिन्तवे हो, भवियण जी० ।
या पडी है उल्टी बात हो, मेरे गुणीजन जी ।
नेम मुनि कहे जगत् में हो, भवियण जी ।
साफी की सुधरे बात हो, मेरे गुणीजन जी ॥४

राग—मोहनगारो रे

सुण जो साह जी रे २, मन म्हारो तो संजम सुं राजी रे ॥ टेर ॥

लेतां देतां कांई न आवे, छाती उणारी दाजी रे।
जाल करी फिर बोलियो, बणाई जाभीरे ॥ सुण० ॥१
कुटुम्ब मेरो है सारो मिथ्यात्वी, घर में करडी माजी रे।
बात सुणे तो फोडे पातरा, आवे गाजी रे ॥२

धर्म रेहणो है मुश्किल मेरे, कहूँ बात यह ताजी रे।
जो घर आवे बेटी आप री, तो रहे बाजी रे ॥३
दोय जणां रो मन मिल जावे, क्या करे मुल्ला काज़ी रे।
नेम कहे दुनिया में देखो, एडा पाजी रे ॥४

राग—घर आणा जी घर आणा नेम नगिना

थे सुण जोजी, थे सुणजो लाल जमाई जी।
घर बैठा ही करोसमाई जी ॥ टेर ॥
सेठ सुणावे जी, सेठ सुण बोले इम वाणी,
म्हे तो पेलां ही या जाणी।
पिण पोते जी पिण पोते तुम हठ कीनी,
अब बेटी आपने दीनी ॥१
धन देसुं जी, धन देसुं जी दायजो गहरो,
थे आच्छा आच्छा पहरो।
मन मांने जी, मन मांने तों भेला रहिजो,
नहीं तो न्यारा धर्म करीजो ॥२
दोनों के जी, दोनों के एक धर्म होवे,
रहे व्रत गाढा नहीं खोवे।
इण कारण जी, इण कारण म्हारी अर्जी,
पछे तो राज री मर्जी ॥३
कहे धूरत जी, धूरत हिरदे में बैठी,
लगे धर्म नींव जब सेंठी।
रिख नेमीजी नेमी कहे सुणो भाई,
कपटी रे पाधरी आई ॥४

राग—द्रौण की

सेठ दगा न जाण्यां हठ कर व्याव मनाया।
महाराज मिथ्यात्वी के हुवा दिल च्हाया जी।
कर आरण कारण तुरत निज पुत्री परणाया जी।
दियो दत्त दायजो खूब कसर नहीं राखी।
महाराज लाडी ले सासरे आया जी।
सब कुटुम्ब मिला धर प्रेम हर्ष दिल हुवा सवाया जी।
बहु लगी सासु के पाय सखी सब मिल के।
महाराज गीत[1] तो गावे रसाला जी। हुई०॥४

काम सरचा दुःख विसरचा कहावत साच्ची।
महाराज धर्म को छोड़ दिया तत्काल।
वो रहे मिथ्यात्व में राच पुंजणी दिया बैठका वाल।
करे सती सामायिक पडिक्कमणो दो विरिया।
महाराज मिथ्यात्वी देता उनको गाल।
तो भी छोडे नाय धर्म में सती रहे नित्य लाल।
सासु घुरकावे मणंदी पण चमकावे।
महाराज देखो यह कर्मों का चाला जी॥हुई॥५
सासु कहे तडकी भूतणी नी परे भडकी।
महाराज बहु तोये शर्म न आवे जी।
तूं बैठी मूंढो बांध बालक मेरे भय खावे जी।
यह छोड सांग तू टांग पकड के घीसुं।
महाराज सत्य सुं सती न डिगावे जी।

कहे निज कर्मा का दोष रोश तिलभर नहीं लावे जी।
फिर कहे सासु दे धर्म छोड कहूं ढब से।
महाराज बुरा होवे नहीं तो हवाला जी ॥हुई०॥६

राग—अच्छा मेरी जान संग नहीं छोडूं

सुणो मेरी सासु धर्म नहीं छोडूं ।
अच्छा मेरी जान धर्म नहीं छोडूं ॥टेर ॥
पियारा धर्म हमारा, यह हार हिया रा किम तोडूं ॥१
चिन्तामणि हमको मिला है, अजी कंकर लेन कैसे दोडूं ॥२
ध्य जो हाथ लगे तो, कैसे कपास को मैं लोढूं ॥३
गुरु धर्म तीनों अमोलक, इनके आगे मैं अंग मोडूं ॥४
कित भूषण धार लिया मैं, शील चुंदडी तन ओढूं ॥५
सासु घुरका कर बोली, अब मैं तेरा शिर फोडूं ॥६
जाय पण इण भव माहि, नहीं मिथ्यात्व में मन जोडूं ॥७
मांस मेरा रंगा धर्म में, ऐसे धर्म कैसे छोडूं ॥८
कहे जो धर्म में राता, उनकी महिमा कैसे जोडूं ॥९

राग—द्रौण की

करके नयन को लाल नणंद यों बोली।
राज कैसे तूं धर्म को करती जी।
बैठे सामयिक माय सचित्त जल लाय छिटकती जी।
ी को रसोई करती खाय वह कैसे ?
राज ठंडी से उदर को भरती जी।
शाग तिथी में न खाय रखे शुद्ध श्रावकवर्ती जी।

ो दो]

पग पग पर करती क्लेश द्वेष वा धरती।
महाराज सती कहे सुण तूं बाला जी ॥हुई०॥७

राग—हां ए सखी तोय कहती थी

अजी बाई जी तोय कहती थी, तूं कर्म चीकना बांध मती।
मैं दाखूं हित की बातडली, तूं आडी दौडी फांद मती ॥टेर॥

तेरे सासरिया में धर्म घणो, तोय कहती थी।
थे क्यों दीनों छिटकाय, बाई जी तोय कहती थी।
सुहागण लगी विधवां पगां, तोय कहती थी।
कहे मो सरखी कर माय, बाई जी तोय कहती थी ॥१

नणांद तोय कहती थी, सद्गुरु की संगति छोड़ मती।
कुयश को क्यों तूं लेती थी, कुगुरु को कर तूं जोड़ मती ॥टेर॥

तो सरखी मुझ ने करे, तोय कहती थी,।
मैं हर्गिज मानूं नाय, बाई जी तोय कहती थी।
संगटो दोष न लागतो तोय कहती थी।
मैं बैठूं सामायिक माय, बाई जी तोय कहती थी ॥२

असल धणी जिण ओलख्यो, तोय कहती थी।
न आवे ढूला ढूली दाय, बाई जी तोय कहती थी।
खारक दाख मेवा तजी, तोय कहती थी।
फिर निम्बोली कुण खाय, बाई जी तोय कहती थी ॥३

भवोभव में भटकी घणी, दुःख सहती थी।
तूं कुगुरु संग मत जाय, नणांद कोय कहती थी।

नेम मुनि कहे सांभलो, वा कहती थी।
तब नणंदल सुण कोपाय भोजाई तोय कहती थी ॥४

राग—मोहनगारो रे

नणन्दल बोलीए २, थे मेलो धर्म ने धारचो भोलीए ॥टेर॥
न्हावण धोवण में पाप बतावे, मर्म जाणे नहीं ऊंडोए।
सुबह शाम तू करे सामायिक, बांधी मूंडोए ॥न०॥१
फेरे पूंजणी सारा घर में, बणी धर्म री धोरीए।
थारे सरीखी धर्म ठगारी, देखी थोड़ीए ॥न०॥२

राग—पूर्ववत्

भावज बोलेए २, नहीं धर्म दूसरो जैन रे तोलेए ॥टेरा॥
जन धर्म सो धर्म न दूजो, मर्म बतावण वालोए।
आत्म धर्म ओलखावण वालो, जग उजियालोए ॥भा०॥१
न्हावण धोवण में धर्म होवे तो, मीन को होय अपारोए।
आठों पहर जो रेहवे पानी में, चित्त विचारोए ॥भा०॥२
असल घोडा रे लागे तोबडो, गधा के लागे कांइए ?
असली वांधे मुंडे मुहपति, नकली नाँईए ॥भा०॥३
धर्म आड में करे ठगाई, वह है धर्म ठगाईए।
नेम कहे सती वचन सांभली, नणन्द रीसाईए ॥भा॥४

राग—द्रौण की

अब तडक भडक कर नणांदल बैण सुनावे।
महाराज भावज पडी मेरे पाने जी।
करूं नयणाँ नाखती नीर वीर को जा कहे छाने जी।

महाराज लगो मत इण के काने जी।
अब कर दो इण को दूर दूजी परणा दूं थामें जी।
वणी धर्मधोरण या थोरण करतां बूरी।
महाराज मेटो इण रा जंजाला जी ॥हुई०॥८

राग.......

वो सुण के सही, मुख बोला नहीं।
मुख बोला नहीं, जब दुष्टन गई रे हाँ ॥१
अब उनकी चली, कुटुम्ब से मिली।
कुटुम्ब से मिली, जहर की जली रे हाँ ॥२
है यह न अच्छी, मैं कहूं रे सच्ची।
मैं कहूं रे सच्ची, वो कह के पच्ची रे हाँ ॥३
ो कैसे भई, पीछे कहोगा सही।
छे कहोगा सही, जुदा रहोगा भई रे हाँ ॥४
सभी सुन के इसी, कहो करिये किसी।
कहो करिये किसी, उपजे जिसी रे हाँ ॥५
ऐसा मत्ता किया, उन को बुलाय लिया।
उनको बुलाय लिया, जुदा रहो भैया हाँ ॥६
कोई कहे मारो परी, कोई कुबुद्धि करी।
कोई कुबुद्धि करी, जाणें यों ही मरी रे हाँ ॥७
लगा एक धूनी, कोई नहीं था गुनी।
कोई नहीं था गुनी, कहे नेम मुनि रे हाँ ॥८

राग—ढ्रौण की

इस विध सब कुनबा ने मिल कर सोचा।

महाराज इगी संग डिग नहीं भरणा जी।
सबके दिल जाग्यो द्वेष सती का चाहे मरणा जी।

राग—ख्याल की

अवसर है आछो, पाछो नहीं आवे इग सारखो ॥टेर॥
तिण समय में भुजंग भयंकर, निकसा भू से आय।
काला काली नाग सा सरे, देखत सब भय खाय।
सब जन कहे सती के छाने, घालो घडा के मांय।
विन मारया मर जाय इन से, अवसर चूको नांय॥
घाल घडा में राख्यो राते, दे ढक्कन मजबूत।
प्रातः होत पत्नी से बोला, पति बात अद्भूत॥
उस घडे में रखी हुई हे, बढिया पुष्प की माला।
जाओ ले आवो मैं गले में, पहन लेवूं तत्काला जी॥

राग—द्रौण की

प्रातः ऊठ के पति प्रेम से बोला।
महाराज गौरी तुम रतियन डरणा जी।
ला घडे में पुष्प की माल पहनूं मैं देर न करणा जी।
वो तहत्त कहकर पति आज्ञा सिर धरके।
महाराज सती ऊठी तत्काला जी ॥हुई०॥
नवकार गिणे विना काम कभी ना करती।
महाराज सती ने सिमरा है जगनाथ।
ढक्कण घड़े का खोल भीतर में डाल दिया निज हाथ।
की शासनदेव नें पुष्पमाल उस वीरिया।

महाराज पति को दी लाकर साख्यात।
पति देख किया है गौर और यह बनी अचरज की बात।
खुशबू से यह तो महल महक रहा सारा।
महाराज गया कहाँ भुजंग वह काला जी ॥हुई०॥१०

राग—चतुरपदी

पंच वर्ण की सुगन्ध सवाई,
डाला नाग माला कैसे आई।
पूछे पत्नी से कहाँ से उठा लाई,
न जानूं मैंने बीती बात बताई ॥१
पडा भर्म सर्प थे दीना निकाली,
माला घाली नार चिरताली।
बोले आंखों में ला लाली,
कहे नेम सती ने समता झाली ॥८

राग—द्रौण की

वह करण परीक्षा माला हाथ [illegible]।
महाराज फूंफाडा करतो [illegible]।
झट नाठो वांगा पाड काल [illegible]।
वो घसक पडा धरणी [illegible]।
महाराज हाका [illegible]।
झट दिया उसे [illegible] जी।
यह गलवा [illegible] जी।
महाराज [illegible] आवे।
[illegible]

राग—खडी

हवेली के चौक में, पडा सर्प वहाँ आय जी।
फणाटोप कर जीभ काढे, दौडे चौक के माय जी ॥

छूट

सुण प्यारे, यह देख अहि को लोक सभी अकुलाये।
सुण प्यारे, कहे ऐसा फणिधर देखन में नहीं आये।

मिलत

खड़े देख रहे दूर भय घुसा दिल म्यान जी ।१
मंत्र बड़ा नवकार जिन्हों का सुनो सभी बयान जी। टेर॥
लोक आय पूछे उसी को, कैसे हुआ कहो लाल जी।
घबरा कर बोला वो ऐसे, क्या कहूँ मैं हाल जी।

छूट

सुण प्यारे, तुम कहते मारो यह काम नहीं है अच्छा।
सुण प्यारे, इण करी फूलन की माल धर्म यह सच्चा।

मिलत

सब हँस कर बोले बाई दास तू समझे नहीं नादान जी ।मंत्र० ।२
आज पहले नहीं हुआ कभी, सर्प फूलन की माल जी।
प्रत्यक्ष लेवे देख तो माने, नहीं तो झूठी झकाल जी।

छूट

सुण लाड़ी, अब जहरीले सांप की माला तू बणादे।
सुण लाड़ी, यह जाणे जैन को फैन सू सत्य दरशादे।

मिलत

मुनि नेमिचंद कहे सती करे क्या देखो सकल जहान जी ।मंत्र०।।३

राग— ख्याल की

इष्ट देव हमारा, शरणे आया की लज्जा राख जो।
है सहारा तुम्हारा, किरपा करी ने सांमो झांख जो ॥टेर॥
सुण सती चिन्ते घट अन्दर, घाल्यो अजाणे हाथ।
पण यह प्रत्यक्ष दीखतो सरे, तुम जाणो जगनाथ रे ।इष्ट०।१
देख्यां डरे खाधां मरे सरे, उभी जोड़ूँ हाथ।
सफल धण्यां री चाकरी सरे, सिमरूँ छूं दिन रात ।इष्ट०।२
जस महिमा री नहीं हूँ भूखी, नहीं मरणे को सोच।
पाखण्डी काँई जाणसी सरे, यो म्हने सवलो सोच ।इष्ट०।३
जहाज चली दरियाव में सरे, पडी भंवर के बीच।
काढो इण ने जल्दी प्रभु जी, धपे मिथ्यात्व को कीच ।इष्ट०।४
जो फिरे उघाडी कामणी सरे, जिण री धणी ने लाज।
नेम मुनि कहे सती का अब तो, सारो सगला काज ।इष्ट०।५

राग—सीता माता की गोदी में हनुमंत डाली मूंदडो०

नवकार मंत्र प्रभाव फले मन भावना रे।
सिमरो शुद्ध मन सं नर नार हुवे मन चावना रे ॥टेर॥
यह तो नवपद सिमरी बाला, चलता पकडा विषधर काला।
आ कर शासन देव तत्काला, कर दी सर्प पुष्प की माला—
मन हर्षावना रे ॥ सिमरो शुद्ध० ॥१
सुन्दर वस्त्र तन पहनाया, भूषण विविध भान्त मन भाया।
सती को सिंहासन बिठलाया, जय जय करे देव गगन में,
फली सब कामना रे ॥ सिमरो शुद्ध० ॥२

गगन में दुन्दुभि देव बजावे, पुष्प वष्टि फिर वर्षावे।
नवपद महिमा सुर मुख गावे, धन धन सती तुम अवतार,
धर्म दीपावनारे ।। सिमरो शुद्ध० ।।३

एक चन्द्र ने नव लख तारा, सती पण एक ने नगर हो सारा।
ओखाणो सत्य केवे जग सारा, बोले देख सभी नर नार,
हर्ष वधावना रे ।। सिमरो शुद्ध०।।४

सीता का उपदेश

राग—दादरो

मिथ्यात्व झोड़ छोड़, जरा गोर तो करो।
देव गुरु धर्म को, शुद्ध आदरो ।।टेर।।

देव अरिहन्त, गुरु निग्रन्थ को धरो।
काटे कर्म परम धर्म, मर्म यह खरो ।।१

कुदेव मति सेव, लेव भींत को दरो।
कुगुरु तजो दूर, भण्डसूर से बूरो ।।२

कुधर्म हुवो माफ, छाप पाप की हरो।
हिंसा में धर्म थाप, जम ताप से डरो ।।३

सुगुरु और कुगुरु को, अरु बरु तो करो।
तज काच मणि राच, साच झूठ आन्तरो ।।४

तजो ताण करो छाण, मत मान में मरो।
हुवा जाण परमाण, जिन आण सिर धरो ।।५

नवकार मंत्र सार, भव पार उत्तरो।
रखो आश मिले पास, खास शिव को वरो ।।६

छोड़ो धन्ध कर्म वन्ध, फन्द मेट दो परो।
लो आनन्द नेमिचन्द, जिन्दगानी से तिरो ।।७

राग—द्रौण की

सासु और नणन्दी आ अपराध खमावे।
महाराज पति पण करे नरमाई जी।
हमें दिया वहुत सा कष्ट धर्म को छोडा नाई जी।
देव गुरु और धर्म सत्य हैं तीनों।
महाराज दृढ तूं है इण माई जी।
कुण करे तेरी जग होड़ देव पण है तुझ सहाई जी।
धन्य तुम्हें और धन्य धर्म है तेरा।
महाराज कर्म को टालनवाला जी ॥हुई०॥१२
यह प्रत्यक्ष पडचा देख कुटुम्ब तो सारा।
महाराज जैन मत को अपनाया जी।
मिथ्यात्व को दीना छोड़ धर्म को करत सवायां जी।
शुद्ध करणी कर के सती तो स्वर्ग सिधाई।
महाराज नेम जिनका गुण गाया जी।
अमर गच्छ के पूज्य पुनम गुरु मुझ मन भाया जी।
किया उन्नीसे सत्तावन्न का चौमासा।
महाराज गोगून्दा गणपत वाला जी ॥हुई०॥१३

१९ जोधपुर के राजा की लावणी प्रथम

राग—उदाजी कर्मन की गति न्यारी

ज्ञानी देखी जिण में रंच फर्क नहीं,
तं कांई धारे मन माई।
पुण्य उदय से जो सुख आवे,
पाप उदय घट जाई ॥१
जीवा जी पुण्य सदा सुखदाई,
पाप सभी को दुःख दाई ॥टेर॥
पेली घणा री रेहगई मन में,
प्रत्यक्ष सुणो एक भाई ।
जोधपुर रा धणी सरदार सिंघ जी,
सिर पर छत्र धराई ।जी०॥२
पेलां तो हाडी जी पुण्य उदे फिर,
राणे जी बेटी परणाई।
आप रे नाम री सही हुई जद,
देश में आण वर्ताई ॥जी०॥३
एक दिन दिल्ली सुं जोधपुर आतां,
वेदना ऐसी आई ।

देश देश रा वैद्य बुलाया,
औखध केई कराई ।।जी०।।४
म्हाराणी केवे सोनो तोल दूं,
कोई साता करो मेरा भाई ।
काँई भी गरज सरी नहीं जांके,
मेट सके कुण आई ।।जी०।।५
पेली आतां मनसोबो कर नें,
फाग रमण री ठेराई ।
पांचम री असवारी करस्यां,
सभी करो सजाई ।।जी०।।६
दडी गुलाल वीगेरे रेल में,
विध विध चीजों मंगवाई ।
सुणी खजाने से चालिस सेंसरी,
हुई मंजूरी सवाई ।।जी०।।७
छत्तीस कारखाना त्यारी हुवा और,
शहर रा लोक लुगाई ।
हलबल माच रही है नगर में,
रेत देखण ने उमाई ।।जी०।।८
आगे ऐसी असवारी न कीनी,
जैसी देऊं रे देखाई ।
ऐसी हूंस केई मन में हुंती जाके,
एक ही पूरण नहीं थाई ।।जीवा०।।९

उण हीज बखत रे माई।
आप चिंती धरी रही असवारी,
ज्यारे असवारी काल री आई ।।जी०।।११
महाराज कुंवर पण मिल नहीं सकिया,
रे गई मन री मन माई।
मर्जीदान और जनाना झूरे पिण,
राख सक्या कोई नाई ।।जी०।।११
पूरो राज कर न सक्या, गया,
जोवन बत्तीस रे माई ।
पुण्य पाप संग रे ये जीव रे,
बांधी जैसी गति पाई ।।जी०।।१२
केता था रेत माया सब मेरी,
पिण संग रति नहीं आई।
सब छोड एकला गया परभव में,
फिर गई 'सुमेर' दुवाई ।।जी०।।१३
पुण्य उदय शिशोदण जी देखो,
महाराणी पदवी पाई ।
कुरुब कायदो अधिक वधायो,
प्रीति बढी सवाई ।।जी०।।१४
कुवर जी हुसी तो राज वे करसी,
ऐसी राजा जी फरमाई।

सो तो सुहाग पूरो देख सक्या नही,

प्रालब्ध कसी आई ॥जी०॥१५

राजा राणी रे पण रे गई मन में,

तो दूजा रे कई रे चलाई।

भोला जीव केई घडा बांधे मन में,

कांई होसी कल राई ॥जी०॥१६

फाग रमण री चीजाँ भेली कीनी,

एक ही काम न आई।

सुणी उगणीस सेंस डाक्टर ले गयो,

गरज सरी नहीं कांई ॥जी०॥१७

पाप करम कर पिंड ने पोष्यो,

विधविध कर ने दवाई।

जडी बूंटी खूंटी री नहीं थारे,

चिट्ठी काल री आई ॥जी०॥१८

कंचन देता ही काया न ठेरी,

जतन करे तू कांई।

कागद काच घडी जिम काया थारी,

पल में ही पलटाई ॥जी०॥१९

सणंतकुमार जी चौथा चक्री,

छः खण्ड फिरे रे दुवाई।

चौरासी लाख हय गय रथ पायक,

एक लाख वाण सेंस लुगाई ॥जी०॥२०

रूप गर्व सुं रोग हुवो तन,
छिन में रिद्धी छिटकाई ।
सोले सेंस सुर हाजर हुंता पण,
मेट सक्या कोई नाई ॥जी०॥२१
सातसे वर्ष लगे वेदना भोगवी,
देव परीक्षा कराई ।
ओखध न वंछ्यो मुक्ति पधारचा,
ऐसा नरों की अधिकाई ॥जी०॥२२
इम जाणी काया को सार काढो तो,
तप जप करो रे समाई ।
या काया तो पछेइ थाने छेह देवेला तो,
पेले चेतो क्युं नो भाई ।जी०॥२३
अमरसिंघ जी रा सिंघाडा माहि,
पूज्य पुनम है सुखदाई ।
रिख नेमिचन्द रे आणंद वरते,
पन्नालाल सरीखा गुरु भाई ॥जी०॥२४
समत उगणीसे सतसठ वष,
चैत्रवद पंचम राई ।
शहर जोधपुर में डेलाण सराफां रे,
सोमवार दरसाई ॥जी०॥२५
नीन्द उडी जद रात रा बैठा,
सेजे ही दिल पर आई ।

रिख नेमिचन्द कहे प्रत्यक्ष देखी ने,
आतम ने, समझाई ।।जी०।।२६
सरदार सिंघ जी री सुणी हकीकत,
जेसी सुणी वसी गाई ।
पहेली या लावणी नहीं कीधी प्रसिद्ध,
जिण पर दुजी वणाई ।।जी०।।२७

२० जोधपुर के राजा की लावणी द्वितीय

राग—पूर्ववत्

चेतन कोई कर्मों रो पार न पाया,
भोला जाणे करा दिला च्हाया।
बड़ा बडा हुवा जग राया,
वे तो बादल जिम विरलाया ॥टेर॥
केवलज्ञानी भाव देख्या ज्यों,
निश्चय होवे सुणो भाया।
मनसोबा करे बिना कारण,
होसी जो लेख लिखाया ॥चे०॥१
मरुधर देश सुभट पुर राया,
सरदारसिंघ सवाया।
बडी उम्मेद से व्याव बणा कर,
लोडी जी परण घर लाया ॥चे०॥२
आप नाम री हुई मुगत्यारी तो,
दुनिया में हुकम चलाया।

भर जोवन बत्तीस में आया,
काम करे दिल च्हाया ।।चे०।।३
एक दिन ऐसी वेदना उठी तो,
आया दिल्ली से घबराया ।
उसी घडी तार परदेशों में देके,
डाक्टर तुरत बुलाया ।।चे०।।४
भांत भांत इलाज किया पण,
एक अर्थ नहीं आया ।
म्हाराणी जी कहे तोल देऊँ धन,
तो रही पति जी री काया ।।चे०।।५
पांचम री असवारी कर सां तो,
कारखानें हुकम लगाया ।
उणी पांचम रे दिन देही वर्तणी,
तो काल हरामी ज्यांरे आया ।।चे०।।६
आप जाण्यो करसा असवारी,
ते । करण नहीं पाया ।
वच में काल री आई असवारी,
अचाणक जिण ने उठाया ।।चे०।।७
राज पाट गढ माल खजाना,
धरिय रही सब माया ।
आण दुवाई फिरे 'सुमेर' की,
आप एकला सिधाया ।।चे०।।८

कतरीक बातों री रैं गई मन में,
जिस का पता नहीं पाया ।
दर्द किसी कुं के नहीं सकिया,
बेहोस हो गई काया ।।चे०।।६
राणी का महाराणी जी हो गया,
दीना मान सवाया ।
उणा रे पण मन में ही रह गई,
फरजन एक न जाया ।।चे०।।१०
ऐसी प्रत्यक्ष देख भव जीवा,
मन में समता लाया ।
छत्रपति की भी ऐसी हो गई,
तो थांपे कितरीक माया ।।चे०।।११
कोइक चिन्ते आज नहीं करशां,
काल करांगा भाया ।
मनसोबो कर ने रात रा सूता,
प्राते वो ही विरलाया ।।चे०।।१२
मूढ चिन्ते हम थोडा दिनों में,
खूब कमावे माया ।
पाव पलक री खबर नहीं है,
कांय को चित्त ललचाया ।।चे०।।१३
बड़ा बड़ा की पण रे गई मन में,
सूत्र ग्रन्थ दरसाया ।

चक्रवर्ती री भी साहबी देखो,
बादल जिम विरलाया ॥चे०॥१४

इम सुणी त्याग वैराग आणो,
नीठ मानव भव पाया।
एकण चित्त सुं धर्म आराधो,
तो होसी दिल च्हाया ॥चे०॥१५

उगणी से सतसठ चैत्र वद पंचम,
जोधपुर अन्दर गाया ।
रिख नेमिचन्द कहे हाल सुण्या थी,
जेसा मैं जोड दरसाया ॥चे०॥१६

अमरसिंघ जी महाराज के गच्छ में,
मुझ गुरु पाट दीपाया।
पूज्य पुनम चंद जी कृपा कर मुझे,
आच्छा ज्ञान बताया ॥चे०॥१७
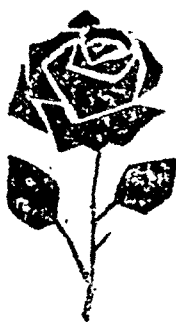
२१ नेमनाथ और राजुल

राग—कुवरां साधु तणो आचार

इम किम छोडी नेमकुमार। राणी राजुल रा भरतार ।।टेर।।

छप्पन करोड़ प्रभु जान बणाई,
आया हर्ष अपार।
तोरण थी रथ पाछो फेरयो,
दया धर्म दिल धार ।।इम०।।१

पशुअन की प्रभु पीडा देखी,
मारी नहीं सुणि रे पुकार।
बीन्द किणी विलमाया थाने,
पाछा वल्या इण वार ।।इम०।।२

जो थारे वालम नहीं परणणो तो,
पेली करता विचार।
तेल चढी हमने छिटकाई,
किम निकले जमवार ।।इम०।।३

जो थारे प्रीतम या हीज करणी तो,
फेरा फिरता चार।

हूँ पण संजम साथे लेती,
नहीं करती मनवार ॥इम०॥४
हूँस रही म्हारे सासरिया री,
नहीं देख्यो घर बार ।
नेणाँ सुं परनाला बरसे,
झूर रही राजुल नार ॥इम०॥५
खैर करी पिया थाएँ ओलुम्बो,
कांई देऊं वारम्वार ।
आठ भवांरी प्रीत बंधाणी,
नव में तोड्यो तार ॥इम०॥६
इम कही ने कांकण डोरडा,
तोड्यो नवसर हार ।
सखी सहेलियाँ वरजत सारी,
जाये चढी गिरनार ॥इम०॥७
आप तो नेम जी पेली पधारया,
मुझे न लिधी लार ।
आप पेली मं जाऊं मुगत में,
जाणजो थांरी नार ॥इम०॥८
चोपन्न दिनों रे पेली यो सती,
पोहती मोक्ष मझार ।
नेम राजुल या सरीखी जोडी,
थोडी इण संसार ॥इम०॥९

पूज्य अमरसिंघ जी रो सिंघाडो,
दीपत ज्यं दिनकार ।
पूज्य पुनम महाराज प्रशादे,
भणे नेम अणगार ॥इम०॥१०

समत उगणीसे साल त्रेपने,
भाद्रव पंच शनिवार ।
गाम रंडेडे कियो चौमासो,
घणो हुवो उपगार ॥इम०॥११

२२ चेतन-चरित्र
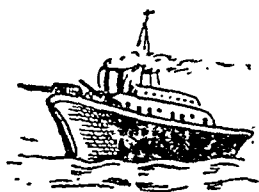
दोहा

अनन्त चौवीसी जो हुई, होसी वले अनन्त।
भाव युद्ध कर कर्म सुं, कीधां भव ना अन्त ॥१
मोह मिथ्यावश जीवडो, रुलियो भव अनन्त।
चेतन ने समझायवा, भाव कह्या भगवन्त ॥२
भाव धरी भवियण सुणो, यह व्यवहार दृष्टान्त।
निश्चय माहि आतमा, कर्मों सेती लडन्त ॥३
वासुदेव भुजवल करी, जीते मिनख दस लाख।
हारे ते पिण कर्म थी, या हीज मोटी साख ॥४
कलियुग में नहीं केवली, अवध्यादिकपण नाय।
सांसा भांगे किणविधे, दुःखम आरा माय ॥५
यो चेतन प्रतिवन्ध में, पड्यो दुविध्या मांहि।
सिंघ ज मिढो होइ रह्यो, आपो चेत्यो नांहि ॥६
कर्मराय रे वस पड्यो, गोता चिहूँ गति खाय।
कर्मों थी छूटक हुवां, जनम मरण मिट जाय ॥७
किणविध कर्मा वस पड्यो छूटो किणविध जाय।
सावधान थई सांभलो, नर नारी चित्त लाय ॥८

ढाल पहली—राग—साधुजी ने वन्दना नित्य २।

श्री जिनवर उपनय उपदिशे ।टेर॥

भव जीवों रा सारण काज रे प्राणी।

तहत्त वचन करने सरदहे

ज्यारो अविचल है यस गाज रे प्राणी ॥१

संसार-मुलक रो साहिबो मोटो,

मोह करम महाराय रे प्राणी।

शिवनगर री वाट तो पाडे,

रहे मिथ्या में समाय रे प्राणी ॥२

दूजो शिवपुर केरो साहिबो,

तिण रो श्री जिनराय नाम रे प्राणी।

पर उपकारी है गुणों रो आगर,

भव्य जीवों रा सारे काम रे प्राणी ॥३

तीजो देहलपुर नो राजा,

चेतनराय सुजाण रे प्राणी।

रह्यो काल अनन्त निगोदे,

हुवो बाद में जन्म पिछाण रे प्राणी ॥४

तरुण भयो पचेन्द्रिय पणे में,

मोह राजा नो कोटवाल रे प्राणी।

तिण रो नाम पायो जीव एहवो,

महा करडो दुष्ट चण्डाल रे प्राणी ॥५

तेनी बहेन कुमति है नामे,

परणाई चेतनराय रे प्राणी।

रात दिवस तिण भूं लिपटचो रहे,
बन्दर जिम रहे नचाय रे प्राणी ।।६
कुमति रो वाप लोभ कहिजे,
माता या हिंसा नाम रे प्राणी ।
कुमति रो राणो झूठ है भाई,
तिको फैल रह्यो ठामो ठाम रे प्राणी ।।७
भतीजो लालच सबसुं मोटो,
भतीजी तृष्णा बेल रे प्राणी ।
महापापिणी विषय भोजाई,
क्रोधो जी मोह नो पटेल रे प्राणी ।।८
इसा सगपण कुमति तणां छै,
चेतन राख्या लपेट रे प्राणी ।
लख चौरासी डोले हींडो मांडचो,
कदी उपर कदी हेट रे प्राणी ।।६

दोहा

अनन्त काल गुजरयाँ पछे, चेतन बड़ भूपाल ।
दूतरूप गुरुमुख सुण्यो, गौरी रूप रसाल ।।१
श्री जिनराज तिहूं लोक नो, बांको तसु उमराव ।
धर्मराय गुण आगलो, करड़ो तेज प्रभाव ।।२
वहन सुमति सहु गुणभरी, मांगी चेतन राय ।
परणाई वहु हर्ष सुं, नृप सैईदान घुराय ।।३

ढाल दूसरी—राग—कमंगत बांकडी रे

वाप ज्ञान दया तसु माता, भाई साच ते वाज्यो ।
संतोष भतीज भतीजी समता, धीरज भोजाई साज्यो ।।घन०।।१

धन संसार में रे चेतन, जग मांहे जस गाज्यो।
रली रंग बधावरणा रे चेतन, हर्ष बहुत उपराज्यो ।।टेर।।
क्षमा प्रधान थयो चेतन रे, जोड़ी जोर विराज्यो।
न्याय नीति पुर में वर्ताई, भय अरि नो सहु भाज्यो ।।धन०।।
चेतनराय सुमत थी राच्यो, कुमत थकी मन खांच्यो।
सुमत कुमत दोनों सोकां रे, मांहोमाहे झगडो मांच्यो ।।धन०।।
सुमत कहे सुण पिउडा म्हारा, कुमत महल मत जाओ।
बतलाया पिण बात में करजो, गाल देतो गम खाजो ।।धन०।।
भूख तृषा पिण सहजो मन सु, काया मतना थाज्यो।
वंछित तुम चा काम करूंगी, खिम्या साथ पग ठाज्यो ।।धन०।।
इतरा काम कियां बिण अपणा, हरगिज सरे न काजो।
इसडी बात न करजो प्रीतम, जिणकर ने तुम लाजो ।।धन०।।
मानी सीख भयो इक रंगो, चेतन आतम साज्यो।
समता राणी थई नचिन्ती, भय कुमतण नो भाज्यो ।।धन०।।

दोहा

तब कुमतण मन चिन्तवे, लोडी परण्यो नाथ।
झगडूं जई सोकड भणी, ज्यूं पिउ रहवै हाथ ।।१
इम चिन्तव आवी कहे, कुमतण वचन रास।
भलपण चाहे तो छोड़ दे, मेरे पिउ नो पास ।।२

ढाल तीसरी—राग—थारे परण्यां ने बोय परणाउ हे

कलालीए। एक गोरी ने दूजी सांवली ।।
पास छोडे नीं म्हारा पीवनो, डाकण लागी क्यूं केड ।धूतारीए।
सूतो हो मोह भर नीन्द में बीन्द जगायो थे छेड । १

सोकडली थे वस कीधो म्हारा कन्त ते ॥टेर॥

मिट्ठा भोजन जीमतो, नहीं सहतो भूख ते प्यास ॥धूतारीए ॥
थे आय कीधो है दूबलो, कराय तप उपवास ॥सो०॥२
रंगमहल में यो पोढतो, करतो रंग विलास ॥धूतारीए॥
लहुडी है तुझ परण्यां पछे, नाहीं गमे दिल हास ॥सो०॥३
सेज्ज सूहाली सूतो सदा रमतो दिन ने रात ॥धूतारीए॥
कान लागा है हिव थायरे, कदियन पूछे हँस वात ॥सो०॥४
काम लत्ता कर वींटियो, लियो है पिव ने थे घेर ॥धूतारीए॥
महल छुडायो है म्हायरो, हूं वरणगी मरण री सेर ॥सो०॥५
पान वीडी है मुख चावतो, सूंघतो अन्तर फूल ॥धूतारीए॥
चोवा ने चन्दण चरचतो, थने देखी ने गयो भूल ॥सो०॥६
हूं पण राणी मानीजती, मानतो मोज रसाल ॥धूतारीए॥
थे आवी ने कांमण किया, छेडे तो देवे गाल ॥सो०॥७
थारे नेणां रो पाणी लागणो नाख्यो थे मूंह कवाण ॥धूतारीए॥
नाथ्यां वैल जिम नाथियो, उ भोलो है नाथ अजाण ॥सो०॥८
पीहर जा तू हिव पाधरी, जो चावे कुशल ने खेम ॥धूतारीए॥
नहीं तर करसु है पाधरी, नहीं है करूं तो कहे नेम ॥सो०॥९

दोहा

तटकी ने सुमति कहे, कहो कुण जावे पीर ।
लाडे कोडे परणियो, मुझ नणंदी रो वीर ॥१
डूबोयो थे पापिणी, चोपड चिउगति खेल ।
पर घर वैर वसाविया, तू लागी लार चुडेल ॥२

ढाल चौथी—राग—म्हारो प्रेम पियारो विछियो०

डाकरण लागी न छोडे है ठीकरो,
यह तो लोक ओखाणो कहिवाय है, जीजी।
लोहडी रे महलां दीवो बले,
बड़ी सुं सह्यो न जाय है ॥१
जीजी, कांय पडावे है माजनो ॥टेर॥

वेरण थई लागी है पिव ने,
छिनगारी म्हारी सोक है, जीजी।
घर में हाण कीधी घणी,
बाहिर हंसाया लोक है, जीजी० ॥२

के तो बडी होवे वांझड़ी,
के कजिया खोर अपार है, जीजी।
के कुलंछणी कुरूपणी होवे,
जदि लोहडी वंछे भरतार है,जीजी ॥३

जो थारो सुख पायो हूँतो,
तो श्याने परणातो मोय है, जीजी।
तेरो दुक्ख देखियो जदी,
मुझ थी घर वासो होय है, जीजी ॥४

बिभचारण है ताहरो,
करे संग होवे फजीत है, जीजी।
एक छोडी ने दूजो करे,
थारी कुण म्हाने परतीत है, जीजी ॥५

नरक रूप्या थारा महलड़ा,
थे तो सेज्ज बिछाई निगोद, हे जीजी।
पोढ़े जो बुडे वापडो थांसु,
किण विध पावे मोद, हे जीजी ॥६
ठग वेटी जिम थे मांडियो,
ऊपर ढोल्यो ने हेठे कूप हे, जीजी।
काचा तांतण पर सेजडी,
पड़े नर देखी रूप हे, जीजी ॥७
ज्यूँ मुझ ने मति जाणजे,
हूँ तिरिया तारण भरतार हे,जीजी।
धरमी रा कुल में उपनी,
म्हारी साख भरे संसार हे, जीजी ॥८
इण पर झगड़ी दोउ जणी,
किण ने ही न आवे नींद हे, लाला।
रिख नेमिचन्द कहे सांभलो,
हिवे वीच में पडियो बीन्द हे, ॥९
लाला कुमति संग तुम परिहरो ॥टेर॥

दोहा

सोकड लड़ती देखने, वोल्यो चेतनराय।
क्यूं वोलो आदर घटे, गुण गांठ को जाय ॥१
नीच जात कुमति तणी, क्यू मांड्यो विखवाद।
सील अलूणो हूँ थयो, चाट्या नावे स्वाद ॥२

[दो सौ

ढाल पांचवी--राग--तुम तो भले विराजोजी।

तूं तो दिल न खोले जी,
यो लोडी रो भरमायो वालम डोढो बोले जी ॥टेर॥
थे परण्यां हो दोरा थई ने, हूँ थारी बाजूं नार।
पले लागी थारे प्रीतम, अब किम जावूं बहार ॥तं तो०॥
थांरा घर में हूँ बडेरी, सगलां पेलां आई।
मैं कहो थाने कांई दुःख दीनो, सोक उपर थे लाई ।तूं०॥
मूंछडियाँ बट घालता जी, डोढी पाघ बणाय।
आरसा में मुख निरखता, वे दिन गया भूलाय ।तूं०॥
वालम थूं तो मन रो भोलो, सोकड कपटरा कूँडी।
लोहडी रो सीखायो म्हनें, गालां देवे भूँडी ॥तं०॥
म्हांने दोरो लागे जी,
सोकडली रो साल म्हांने खारो लागेजी ॥टेर
मुख मचकोडी लोहडी चाले, डोले बोले डोढी।
माखी नहीं, पण मल को मारे, थे पण माथे चोढी ॥म्हां०॥
मैं अर्द्धांगिनी बाजूं थारी, बाहिर कुंकर काडो।
मेहला बैठी हुकम चलावूं, लोहडी गंडक ताडो ॥म्हां०॥
गाड़ो उलडियाँ पाछे बोलो, वन्याग रो कांई काम।
नेम भणे कुमति कहे प्रीतम, रखे गमावो माम ॥म्हां०॥

दोहा

जीवराज कहे कुमत तूं, निकमी मत कर झोड।
माम थारी तो जावसी, राखूं पगरखी ठोड ॥१

राणी हिवै पाणी भरो, पिहर द पहुँचाय।
कुमतरण कहे परण्यां पछे पिहर जाय वलाय ॥२

ढाल छठी—राग—आंबा जी पाका वनडी निम्बू जी०

पिहरिये जावूं तोही पाछी जी आवूं।
थांने नट जिम नाच नचावूं ॥१

केसरिया सुणो म्हारी थे वातां।
म्हारी थे वातां, के हूँ पिहरिये जाता।

कांई बहु दिन हुवा थांसु खाता।
वालमियां सुणो म्हारी थे वातां ॥टेर॥

म्हारे पिहरिये म्हारा भावो जी करड़ा।
वे सामां मंडियाँ पाडे वरडा ॥२

भाई भतीजा वलि काको जी लडसी।
थां रे म्हां विना पूरो किम पडसी ॥३

मिट्ठा भोजन ने नीकी तरकारी
हाजर मैं रहती भर कर [illegible]

लूंग इलायची ने पान [illegible]
मैं मूंछरण पण देती [illegible]

पावती प्रेम रस रा [illegible]
थे रंग मेहलां मैं [illegible] ॥६

सेज्ज सुहाली [illegible]
थारा तो [illegible] ॥७

अन्तर रा [illegible]

पदमरण से प्रेम पुनि धरता ।।८
अन्तर फूलेल में रहता गरकावो ।
थे म्हां विना सुख किम पावो ।।६
भँमर जी म्हांने पिहर मत मेलो ।
पिहर में मत मेलो, म्हांसु चोपड खेलो ।
म्हारो हेलो झरोखा माहि झेलो ।
पियाजी म्हाने पिहर मत मेलो ।।टेर
नेम भणे सुणे परखदा सारी ।
तो इण पर बोली कुमतण नारी ।।१०

दोहा

कुमत वचन चेतन सुण्यां, कांइक डूलगो मन ।
सुमति चिन्त्यो गांठ को, रखे गमावे धन ।।१
अवसर कबहू न चूकिये, तब बोली तत्काल ।
कर हुँशियारी वालमा, केम पड्यो जंजाल ।।२

ढाल सातवी—राग—कांई रे जबाब करूं रसिया

तूं कांई रे जंजाल करे पिउड़ा, जाल करेलो जंजाल करेगो ।
तो सुसरा की फोज से केम लडेगो ।।टेर।।
क्यूं रे पिया थू हुवो हलफलियो ।
तो दीखे छे मेरो सोकड चलियो ।।१
कहो जी वालम थाने किण विलमायो ।
तो लोहडी रे जाता बड़ी भरमायो ।।२
पण मत रहिजो थे इण रे भरोसे ।

विश्वास देई ने गतो मसोले ॥३

जाल फांसो कर थांने डुबोवे।

रखे वड़ी रे पिया सांमो धूं जोवे।४

भूतरण ज्यूं मुझ ने वलगी है।

तो केसरिया कारण दुख पाई ॥५

लवक करती या सांमो तुणावे।

पाछो जाब थांने देणो न आवे ॥६

गिदड वण थे बात जो राखी।

तो थांरी गमाय देवेली साखी ॥७

नेम कहे नारी करडी या बोली।

तो जीव राज ने अखियां अब खोली ॥८

दोहा

गज अंकुश अश्व ताजणे, तिम चेतन आयो ठाम।
पीड भई मन उपरे, जाणे लागो डाम ॥१
तब चेतन निरभय थयो बोले वचन करूर।
अलगी रहिजे कुमतड़ी, मत आजे हजूर ॥२

ढाल आठवीं—राग—लावणी

चल सरक खड़ी रहे दूर, तुझे कुण छेड़े।
यह कुमत कलेशन नार, लगी क्यों केडे ॥टेर॥
तू समता को भरमायो मुझे क्यों छोड़ी। मुझे क्यों० ॥
मेरी अनन्त काल की प्रीत पलक में तोड़ी।
अब तुझ बिन सूनी सेज्ज कहूं कर जोडी। कहूं कर० ।

अब ऊठो हमारे संग सुखे रहो पोढी।
अब झूर झूर कुमतरा नार आंसुअन करडे। आंसु० चल०॥१
तू समता को भरमायो मुझे क्यों टाली, मुझे क्यों० ॥
तू समता को सरदार देत मोय गाली।
मेरी अनन्त काल की प्रीति पलक नहीं पाली। पलक० ।
तेरी हम दोनों हैं नार गोरी और काली।
थे हम को दीनी ठेल सुमत को तेडे। सुमत० ।चल०॥२
मैं कुमना से ललचाय रति ना डिगियो। रति ना० ।
मैं सुणी सूत्र की सीख सेंठो हुय लगियो।
अब चित्त कर चेतन सेज्ज-कुमत की भगियो। कुमत० ।
जिनराज वचन को ज्ञान हिये माँहि जगियो।
जिनदास कुमत की बात खोवत मन खेड़े। खोवत० ।चल०।३

दोहा

इण अवसर कुमति तदा, पिउ अपमानी जाण।
आई पिहर उतावलीं, बाप पुकारयो आण॥१
लोभ पुकारयो पाप ने, पाप पुकारयो मोह।
मोहराज मन चिन्तवे यह तो बात असोह ॥२
दुर्जन अनड नमावता, तीर्थंकरादि कोय ।
इता काल में आज लग, गंज न सक्या मोय ॥३

ढाल नवमी—राग - सेहतां खुधा परीसो दोहिलो

मोह जिसो जग को नहीं (टेर), इसडो मुझ विरुदाउए।
जीवराज कुण वापड़ो, ज्ञान सुता सु ललचाउए। मो० ॥१

मैं वठा या वात हुवे, किम रेहसी मुझ मामोए।
जीवराज फेरूं नहीं, तो मोह म्हारो काँई नामोए। मो० ॥२
अरणक ने मैं छेतरयो, चलियो मैं आर्द्रकुमारोए।
वारे वरस रह्यो वैश्या घरे, नन्दिषेण अणगारोए। मो० ॥३
पुत्र इलायची देख लो, मल्लिनाथ ना मित्रीए।
हरि चक्री जिनपण हमें, काढ्या एक यंत्रीए। मो० ॥४
साधु श्रावक कुण वापड़ा, कुण जति ने जोगीए।
मोह कहे मैं कर दिया, एकसा त्यागी ने भोगीए। मो० ॥५
देव दाणव वापडा किसा, कुण इंद ने चन्दोए।
कुण राँक राजेश्वरू, पाड नाखूं मोह फंदोए। मो० ॥६
जिण दरिये जग रेलीयो, तो कीडी रा विलरो कांइए।
जिण परवत उडाविया, तिणखो किसी खात्र माईए। मो० ॥७
तीनलोक वश माहरे, कर दिया पाय जेरोए।
नहीं रह्यो कोई पण इसो म्हांसु वांधे वेरोए। मो० ॥८

दोहा

इम चिन्तवने मोह नृप, राग द्वेष उमराव।
कही समाचार विदा दिया, दे मोटा सिर पाव ॥१
के तो कुमत मनाय लो, हूं सुख मानूं जेण।
सेण हुवो थे म्हायरा तो, मान ले जो मुझ वैण ॥२

ढाल दसमी—राग—घायडमल हलवे हालो

(कोई कोई 'गुरां जी थे म्हने कोडे नहीं राख्यो', में भी गाते हैं।)

राग द्वेप आया जीव पासे, जीव राय भणी इम भासे।

नाय लो कुमत बेगी महाराज, ज्यं भलो थासे ॥१
हीं तो थांमे फोडा पडसी, मोह नृप मन आसी ज्यूं करसी।
हला ही समझो पछे महाराज, गरज न सरसी ॥२
ीवराज धूजरण जब लागो, किहा जइये इण थी आगो।
ोठ छूटो पहलो गुणठाणो, फिर आय लागो ॥३
ोथो पांचमो सातमो पायो, पिण कुमतण लार गमायो।
ायो वलि मन वीराग, फिर पेहले आयो ॥४
ुमतण पग रोप्या काठा, जब चेतन जी पिण त्राठा।
िव थी पदमण रो कांई जोर, सुमता राणी न्हाठा ॥५
हिव कुमता किसी विध आई, किसी किसी सजाई लाई।
ुणजो थे हुई सावधान, लोग लुगाई ॥६
मन' रूपी बड़ो परधान, 'कामो' जी वली देश दिवान।
कलहो' जी मुसायब 'ईर्षा' जी सेव, वजीर 'मान' ॥७
क्रोधो' जी बड़ा कोटवाल, 'कुबधो' जी पटेल रसाल।
माया' खवास काजी जी 'लोभ' फौजदार आल ॥८
गृद्धो' जी दीवीदार, 'चुगलो' जी बड़ीदार धार।
कुगुरु' दुष्ट ने रति अरति, अहलकार ॥९
हिंसा' जी 'अधर्मों' जी भाई, 'निन्दो' जी और ठगाई।
इत्यादिक चौहटिया तेह, बड़ा अन्याई ॥१०

दोहा

देहलपुर में दैत्य इसा, हुवा तो भेला आय।
खिण वसावे खिण लूटे, मांड्यो अजब अन्याय ॥१

चिउं गति माय रुलावियो, काल अनन्त अनन्त ।
सुमता राणी चिन्तव्यो, दुःखी पूरो मुझ कन्त ॥२
वालो भोलो पिउ म्हायरो, नहीं घर विधरी ठीक ।
नीठ ढब में पाड्यो हतो, रात दिवस दे सीख ॥३
फिर समझावूं पिवने, सम्यक्त्व सखी ले साथ ।
सीख देवे हिव किणविधे, मानो नानडिया नाथ ॥४

ढाल ग्यारवीं—राग—राजन्द थारी देख दो असवारी

प्रीतम थांने वरजूं छूं मोरा कन्ता ।
थे तो उलटी लगाय दीनी चिन्ता ॥ टेर ॥

पीहर थी पाछी वल आई, थांरे कारण गुणवन्ता ।
दुखिया देख थांने प्रीतम म्हारे, नयणां रा नीर झरन्ता ॥प्री०॥१
महाविकराल यह मोह नृपन, जोध महा दुर्दन्ता ।
रत्न त्रय विना तीनों ही काले, कदी नहीं जीपन्ता ॥प्री०॥२
जीतण रो उपाय करो तो, देव ध्यावो अरिहन्ता ।
धर्म दया में केवली भाख्यो, गुरु श्रद्धो निर्ग्रन्था ॥प्री०॥३
अविचल गढ में आप पधारो, ज्योति में ज्योति मिलन्ता ।
नेम भणे सुमति रो मान्या सुं, मिट जावे सारी चिन्ता ॥प्री०॥४

दोहा

लोडी लखणा बाह्यरी, कुमति नाम कुनार ।
जिण रो भरमायो थको, चेतन कहे तिवार ॥१
चेतन कहे कांइयक मुझे, मर्कट जिम वैराग ।
कांइयक नारी कुभारजा, फटा म्हारा भाग ॥२

ढाल बारहवीं—राग—सीता ने लेई राम सु मिलो०

करकसा नार मिली, फूटा फूटा हो पिया जी थारा भाग ॥टेर॥

सुमत्ति कहे सुण वालमा रे, कुनारी घर माय।
संभेरो सगलो करी रे, खोका देवे छिटकाय ॥१

सुवे वहेली ऊठे अवेली, धर्म ध्यान नहीं सूझे।
रात दिवस या छाती बाले, एडी नारी ने काँई पूजे ॥२

नट जेम थांने नचाव्याँरे, अजुहन आवे शान।
यह धूतारी कामणगारी, मोड्या है मर्दो रा मान ॥३

नारी या तो छे रे सूघली रे, नीच स्थान ले जाय।
पटके दीवो दीखाय ने रे, गोता तो चउंगति खाय ॥४

इसडी नारी देखने पण, थां तो अधिकी माणी।
सगलो धन उडावियो रे, घर री तो करी धूल धाणी ॥५

जैसा कु तैसा मिले रे, कहो किण ने समभावे।
जो छोकरिया घर वसे तो, बाबो बुट्टी क्यों लावे ॥६

कही कही हूँ कायी हुई रे, उण घर थूं मत जाय।
नेम मुनि कहे इम सुणी रे, बोल्यो है चेतन राय ॥७

दोहा

पर घर कहे हूँ कद गयो, तब सुमति कहे सुण वात।
शोखिन तू पर घर तणो, ते कहूँ सुण साख्यात ॥१

ढाल तेरहवीं—राग—सुण चन्दा जी श्री मन्दिर

अहो चेतन जी, पर घर में मति खेलो निज घर आवो।
अहो आतम जी, निज घर में कहे लोंग सदा सुख पावो ॥टेर॥

पर घर में बहुला दुःख थाशे, पर संगति सेती विष वासे।
भव भव में तूं दुर्गति जाशे। अहो चेतन० ॥१

पर घर में ममता माई छे, तिहाँ मोह पिता दुःख दाई छे।
तिहां कुमति सरीखा भाई छ। अहो चेतन० ॥२

पर घर में कुमता नारी छे, ते दूती पण हुँशियारी छे।
ते त्रिउ गति माही न्यारी छे। अहो चेतन० ॥३

पर घर में निन्दा चुगली छे, जिहां काम क्रोध की युगली छे।
या तो समझ नहीं थारी सुगली छे। अहो चेतन० ॥४

तिहाँ मृषा रूप सुत मोटो छे, तिहाँ परवंचन चित्त खोटो छे।
तिहां लाभ नहीं पण टोटो छे। अहो चेतन० ॥५

निज घर में सम्पति बहुली छे, सिद्ध साधक पदवी सोहिली छे।
निज पद को नाम अमोली छे। अहो चेतन०। ६

जहां क्षमा मात सुखदाइ छे जहां धीरज तात सहाइ छे।
जहां धर्म सरीखो भाई छे। अहो चेतन० ॥७

जहां ज्ञान पुत्र गुण भारी छे, जहां दया पुत्री दिल धारी जे।
जहाँ सुमति सरीखी नारी छे। अहो चेतन० ॥८

निज गेह सदा सुखकारी छे, जहां चेतन मूर्ति तुम्हारी छे।
त्यां आनन्दघन अधिकारी छे। अहो चेतन० ॥६

निज धाम सदा शंकर ध्यावे, पर धाम गया लघुता पावे।
जिम चन्द्र सूर्य प्रभुता न्यावे। अहो चेतन० ॥१०

तू सच्चित् आनन्दघन स्वामी, तू करुणा कर अन्तर्यामी।
तू पूर्ण परमानन्द धामी। अहो चेतन० ॥११

ढाल बारहवीं—राग—सीता ने लेई राम सुं मिलो०

करकसा नार मिली, फूटा फूटा हो पिया जी थारा भाग ॥टेर॥

सुमति कहे सुण वालमा रे, कुनारी घर माय।
संभेरो सगलो करी रे, खोका देवे छिटकाय ॥१

सुवे वहेली ऊठे अवेली, धर्म ध्यान नहीं सूझे।
रात दिवस या छाती बाले, एडी नारी ने काँई पूजे ॥२

नट जेम थांने नचाव्याँरे, अजुहन आवे शान।
यह धूतारी कामरणगारी, मोड्या है मर्दा रा मान ॥३

नारी या तो छे रे सूघली रे, नीच स्थान ले जाय।
पटके दीवो दीखाय ने रे, गोता तो चउंगति खाय ॥४

इसडी नारी देखने पण, थां तो अधिकी माणी।
सगलो धन उडावियो रे, घर री तो करी धूल धाणी ॥५

जैसा कु तैसा मिले रे, कहो किण ने समभावे।
जो छोकरिया घर वसे तो, बाबो बुट्टी क्यों लावे ॥६

कहो कही हूँ कायी हुई रे, उण घर थूं मत जाय।
नेम मुनि कहे इम सुणी रे, बोल्यो है चेतन राय ॥७

दोहा

पर घर कहे हूँ कद गयो, तब सुमति कहे सुण बात।
शोखिन तू पर घर तणो, ते कहूँ सुण साख्यात ॥१

ढाल तेरहवीं—राग—सुण चन्दा जी श्री मन्दिर

अहो चेतन जी, पर घर में मति खेलो निज घर आवो।
अहो आतम जी, निज घर में कहे लींग सदा सुख पावो ॥टेर॥

पर घर में बहुला दुःख थाशे, पर संगति सैती विष वासे ।
भव भव में तूं दुर्गति जाशे । अहो चेतन० ॥१
पर घर में ममता माई छे, तिहाँ मोह पिता दुःख दाई छे।
तिहां कुमति सरीखा भाई छ । अहो चेतन० ॥२
पर घर में कुमता नारी छे, ते दूती पण हुँशियारी छे ।
ते चिउगति माही न्यारी छे । अहो चेतन० ॥३
पर घर में निन्दा चुगली छे, जिहां काम क्रोध की युगली छे।
या तो समझ नहीं थारी सुगली छे। अहो चेतन० ॥४
तिहाँ मृषा रूप सुत मोटो छे, तिहाँ परवंचन चित्त खोटो छे।
तिहां लाभ नहीं पण टोटो छे । अहो चेतन० ॥५
निज घर में सम्पति बहुली छे,सिद्ध साधक पदवी सोहिली छे।
निज पद को नाम अमोली छे। अहो चेतन० ।६
जहां क्षमा मात सुखदाइ छे जहां धीरज तात सहाइ छे ।
जहां धर्म सरीखो भाई छे। अहो चेतन० ॥७
जहां ज्ञान पुत्र गुण भारी छे, जहां दया पुत्री दिल धारी जे।
जहाँ सुमति सरीखी नारी छे। अहो चेतन० ॥८
निज गेह सदा सुखकारी छे, जहां चेतन मूर्ति तुम्हारी छे।
त्यां आनन्दघन अधिकारी छे। अहो चेतन० ॥९
निज धाम सदा शंकर ध्यावे, पर धाम गया लघुता पावे ।
जिम चन्द्र सूर्य प्रभुता न्याये। अहो चेतन० ॥१०
तू सच्चित् आनन्दघन स्वामी, तू करुणा कर अन्तर्यामी।
तू पूर्ण परमानन्द धामी । अहो चेतन० ॥११

जहाँ पर घर निज घर एक ज छे, जहाँ सुमति कुमति एक ज छे।
नहीं मुद्रा मूरति भेखज छे। अहो चेतन० ॥१२
इहाऽपर घर परमार्थ जाणो,जहां निज घर संपद् गुणखाणो।
तिहां मेट दियो खांचा ताणो। अहो चेतन० ॥१३
पर घर पर गुण ने तजशे, जे निजानन्द पद में मलशे।
ते अक्षय अमर पद में भलशे। अहो चेतन० ॥१०
या सीख सुमत इण पर भाखी, सो कहूँ यहां की है वाकी।
हिवै कुमति नी जाशे नाकी। अहो० ॥१५

दोहा

सीख देई सेंठो कियो, सुमति निज भरतार।
वली विशेखे वीनवे, इण पर सुमति नार ॥१

ढाल चौदहवीं—राग—कैसे मुर्झाई देखत वर कारो ए।

वीनवे सुमती नारी, घरे आवो नी प्यारा ॥टेर॥
मान सीख मुझ कंत प्यारा, वारणा लेऊँ तमारा।वी०॥१
आज लगे कुमती भरमाया, मुझे तजो किम प्यारा।
अब तो कुमत कुपात्र सखी संग, छोडो नी सेंण हमारा।वी०॥२
शील संतोष सदा सुखदाता, शिव सहज तिहारा।
राग द्वेष दोय कुमत सदा संग, वधिया करे विकारा।वी०॥३
मोह कर्म तुम बैरी जवरा, धन रा लूंटणहारा।
नरक निगोद की सेज बिछाकर, करे अज्ञान अंधारा।वी०॥४
त्याग दिवान तुमारा नोका, मतना जाणो खारा।
सुमत सखी सुविनीत सुकोमल, तसु सुख अमृतधारा ॥५

किरिया विविध सिराना सुहाना, मसुरिया है भारा।
समकित सेज संतोष तलाई, ज्ञान दीपक अजवारा।वी०॥६
मल मूत्र रा भण्डार भरा है यह देही असारा।
पाछे ही तुमको छेह देयगा, तो पेला ही तज होउ न्यारा।वी०॥७
जनम जरा मिट जावे, फिर नहीं है अवतारा।
समझ के सेल करो शिवपुर की, सब जग दास तुमारा।वी०॥८
मोह कर्म के फन्दा जग में, यह है मेटणहारा।
रत्न चन्द कहे सीख सुमत की, मानो नी अकन कुमारा।वी०॥६

दोहा

सुमता आवी देखने, चमकी कुमतण नार।
करडी छे यह कामणी, रखे वश करे भर्तार॥१
दौड आवी चेतन कने, करण लगी अरदास।
झगड़ो लोडी सोक रो, प्रितम मेटो खखास॥२

ढाल पन्द्रहवीं—राग—ख्याल की

थे सुण जो लोकां, झगड़ों भारी रे लोडी सोकरो।
तुम देखो तमासो, या तो तरुणी रे प्रीतम डोकरो।
मने आवे हांसो, यो क्यों हुवो इण लारे छोकरो।
है अकल को तासो, दोष न कोई रे दूजा लोक रो॥टेर॥
कुमतण कूकी इण परे सरे, सणो सभी नर नार।
इण कपटण ने काढी परी पर, तो ही न छोडे लार रे।थे०॥१
दो दो सूई सीवे न कंथा, ज्यों पंथ एक असवार।
एक म्यान में ना खटे सरे, दो तेज तरवार रे।थे०॥२

पीला चावल कुण मेल्या इणने, कहो आणे कुण आयो।
बिगर बुलाई दौड़ी आई, काँई थे लबको पायो रे।थे०॥३
कुह्या कानां री कूतरी सरे, ज्यूं ताडे ज्यूं आवे।
गलियार गधी ने गाय घोड़ी जिम, या कांमण तिण दावे रे।थे०।४
धुर थी वालम परिहरी सरे, खोटो देखी नखरो।
जोरावर सुं आय धसी अब, आयो इण रो अकरो रे।थे०॥५
सुधी तरे सुं अब नहीं माने, काढूं इण रो बंक।
करूं पाधरी जाय पीहर में, देख लगावूं लंक रे।थे०॥६
कहे चेतन रहवे नहीं बकती, अव तोय करशुं पूरी।
पूरी करे तो नाक ज काटूं, मत कर मन मगरूरी रे॥७
हूं किम समभावूं रे लोडी भरमायो बोले डोढ में॥टेर
पांखां आवे कीट के सरे, सो तो नेडी मौत।
गेला मत ह्वे आगतो सरे, थारी ढीली पडसी पोतरे।हूं०॥८
मोंटी बैर दो ही पकड मंगावूं, देख बंदी का काम।
जावज्जीव की कैद भुगतावूं, तो मुझ कुमति नाम रे।हूं०॥६
मैं कैसे जगावूं रे वालम सूतो रे लोडी सेज में।
तोय कैसे उठावूं रे, लोडी सेजां में सूतो नीन्द में॥टेर
दो गोरी रो साहिबो बणियो, रे रे मोल्या माँटी।
जो घर में आवा नहीं दे तो, भांगू थारी घाँटी रे।मैं०॥१०
मूई सोक हूवे दुःख दाई, जीवित किसा हवाल।
नेम मुनि कहे खोटो जग में, सोकडली रो सालरे।मैं०।११

दोहा

इम सुण चेतन चमकियो, या धूतारी नार।

हां० गाली देवे तो गम खावणी,
हां० मोटा मुनिवर जेम।
हां० संगत कीजे रे ऊंच की,
हांरे प्राणी इम कहे रिख नेम।ऐ०॥५

दोहा

ऊंच संगत ऊंचो हुवे जेम खाल को नीर।
गंगा सु जाइ मिल्यो, सबके चढे शरीर॥१
तिण कारण तूं वालमा, नीच को डर मत लाव।
वांका मारग देख के, रखे धूजावे पाव॥२

ढाल सत्रहवीं राग—धूंसो वाजे रे महाराज उम्मेदसिंह को।

डरपो मति, हांरे डरपो मति देख मारग बांको। टेर॥
इण मारग मांहि सांकड भीड़ो
जाणे रे सूई तणो नांको।डर०॥१
उबड़ खाबड़ इण पथ में चलणो,
इधर उधर तुम मत झांको॥२
जंगी झाड खडगधार पे जाणो,
आगे है सुख रो टांको॥३
वटपाड़ु बीच चोर घणा है,
तेवीस लगाय रह्या ताको॥४
चारित्र वीर्य रहे जो वलाउ,
तो जोर न लागे इण चोरां को॥५
अटवी लंघाई ने सीम देखाई,
तो गांम गोर में मति थाको॥६

सिद्धपुरा रा धर्म रुंख देखाया,
अब भूलो नहीं दोष म्हांको ॥७
कुमति काढ ने शहर में जाइजो,
राज्य पाट रेहसी थांको ॥८
जन्म जरा नहीं मरण है वहाँ पे,
अजर अमर सुख है जां को ॥९
सुमति कहे पिया यह सुख चावो,
तो कुमति सोकड दूर न्हांको ॥१०
नेम भणे अब चेते चेतन तो,
आय गयो सुद्धरण आंको ॥११

दोहा

पुनः सुमति इण पर कहे, पिउ जा रखे भूलाय।
पंथ बता दूं पाधरो, गोता कदी न खाय ॥१
देवगढ में रहिजो मति, दिन लागेला वहुत।
उदयपुर को छोड़ के, खेरोदे पहुँत्त ॥२
उठा सुं जाइजो पाधरा, सायपुरा में ठेट।
मार्ग शुद्ध बतावियो, अबकाई सब मेट ॥३
जीव राज सुण रंजियो, आयो मन विश्वास।
तब चेतन कुमतण भणी, बोले एम विमास ॥४

ढाल अठारहवीं—राग—अलगी रहनो

अलगी रेहनी तुझ दूती ने कुण तेडे।
अलगी रेहनी तू, मुझ ने क्यों छेडे।

अलगी रेहनी काय पडी मुझ केडे ॥टेर॥

तो मुझ मोह महामद पायो, तिण हूँ थयो मतवारो।
चिउं गत माहे भमायो ते मुझ ने, जन्म बिगाड़्यो म्हारो ।अ०॥१

कामदेव ने तेडी आण्यो, तिण पण मांडी बाजी।
नेणां रे लटके मुख के मटके, मुझ ने कीधो राजी ।अ०॥२

नरक निगोद तणा मन्दिर में, पातिक पलंग विछायो।
मुझ ने भोलव त्यां बैसाण्यो, जद सुमताई समझायो ।अ०॥३

तब मैं मदिरा छाक निवारी, समकित सूं खडी चाखी।
उदैरतन कहै जद चेतन जी, सुमत सखी अभिलाखी ।अ०॥४

खायक सम्यक्त्व सखी सुमत की, मुझ मन तिण हर लीधो।
अनुकम्पा करुणा रस अमृत, प्यालो भर भर पीधो ।अ०॥५

खाय किचकिची कुमतण वरडी, कटुक वचन तिण बोल्या।
मुझ ने तजी पण देख हवे तूं, काम हमारो मोल्या ।अ०॥६

निकल गई कुमतण निज पीहर, कंत चढ्यो पचम गुणठाणें।
सातमें आठमें नवमें चढतां, पडिया घाव निशाणें ।अ०॥७

पंच स्वाध्याय घूरे सईदाण, वर्त्या मंगल माला।
जाग्यो अब नीठ मोह निद्रा थी, श्री चेतन भूपाला ।अ०॥८

दोहा

कूकी कुमतण जाय ने, सुण हो राजा मोह।
सुमत सोक मुझ कंत सु, बड़ो करायो द्रोह ॥१

हिव मुझ ने नहीं आदरे, लाखों क्रोड प्रकार।
करणी हुय सो कीजिये, तुम बेटी री वार ॥२

ढाल उन्नीसवीं—राग—आई रे पनोती जरासिन्धरी

मोह कहे ये गहलणी, तुझ ने जग भर्त्तारोए।
एक गयो तो जाण दे, रोवे किसुं गमारोए ॥१
मोह धीरवे कुमत ने, लागो डाकण लारोए।
आई रे पनोती मोहराय नी ॥टेर॥
कुमत कहे मोहराय जी, आ कही सो तो सांचोए।
पण सोक साल शाले घणो, आकरडी मुझ आंचोए ।मो०॥२
मोह कहे ते तो हिवे, छां तो घणाइ बलवन्तो ए।
पण सुमता नी फौज थी, जोर न मुझ चालन्तोए ।मो०॥३
तू कहे तो चेतन भणी, लेऊं साकडे घेरोए।
देहलपुरी विखेर ने, कर नाखूं ढेरमढेरोए ।मो०॥४
यूं कर मुझ वाप जी, कर दे नगरी साफोए।
फेर वसण पावे नहीं, म्हारी मिटे छाती रो बाफोए ।मो०॥५
मोह कहे धीरी रहो, म कर उतावल गाढीए।
हलवे हलवे आपणो, काम देशा सिर चाढ़ीए ।मो०॥६
आयुकर्म उमराव जी, बोल्यो मूँछ मरोडीए।
हुकम करो मुझ उपरे, वार लगावूँ थोडीए ।मो०॥७
तीन लोक में हूँ फिरूँ सगले मोरी धाकोए।
खलभल करूँ खिणेक में, ना गिणूं काचो पाको ए ।मो०॥८
मोह सुणी हर्षित थयो, कुगुरु इत बुलायो ए।
समाचार कहे किण विधे, ते सुण जो चित्त लायोए ।मो०॥९

दोहा

कुगुरु दूत ने मेलियो, कहे चेतन ने आय।

मोह कह्यो क्यों नां करे, अब ही मन समझाय ॥१
के, सज्ज कर दल ताहरो, के ले नारी मनाय ।
किसे भरोसे तूं रह्यो, पछे मुंह देसी लपकाय ॥२

ढाल बीसवीं—राग—अलबेल्या की

चेतन तब पाछो कहे रे लाल,
मानूं जो तुम बेण, मोह राजा रे ।
रहण नहीं द्यो सुख में रे लाल,
थे नहीं हमारा सेण, मोह राजा रे ।चे०॥१
घडियक नरक निगोद में रे लाल,
घडियक तिर्यंच माय, मोह० ।
खिण सुर, खिण मिनख में रे लाल,
पिण नित रहवा दो नाय, मो० ।चे०॥२
साढो सतरे भव हुवे रे लाल,
एक मुहुर्त्त माय, मोह० ।
एक निगोद में इसी करो रे लाल,
हूँ तो मानूं नाय, मो० ।चे०॥३
पांच भवे चार गत करी रे लाल,
मुहूर्त्त में दो फरसाय, मोह० ।
किसा कथन कहूँ ताहरा रे लाल,
ठामो ठाम अन्याय, मो० ।चे०॥४
इतरा दिन हूँ जाणतोरे लाल,
मोह कर्म महाराज, मो० ।

पूज्य आराध्य उत्तम श्री, श्री जी सकल गुणनिधान।
जगत् माहि जे भली उपमा, ते सहु विराजमान।
पाप रूप मल पडल तणा तूं, फेड निर्मल कर्तार ॥१

वारी वारी श्रीमन्धर जिन की, भव्य जन प्राण आधार ॥टेर॥

स्वयं बुद्ध पुरुषों माहि उत्तम, थे तीन लोक ना नाथ।
मोक्ष अक्षय गढ नो तूं दाता, और न कोई आथ।
तूं तारक प्रतिपालक सहु नो, अनन्त दर्शन ज्ञान।
चारित्र तप तणो तूं स्वामी, भय भञ्जन भगवान।
अज्ञान मोह अने मिथ्या मत, दुर्गति टालण हार ॥वारी०॥२

जग आनन्द जगत्नो बन्धु, जगत्नाथ जग देव।
जगगुरु जग ना अन्तर्यामी, सुर नर करता सेव।
कृपानिधान ने करुणासागर, परम दयाल कृपाल।
महासार्थवाह परउपगारी, महानिर्याम गोवाल।
परमेश्वर परम सुखदाता, बलो परम दातार ॥वारी०॥३

परमतखण्डण श्री शिवमण्डण, जगवल्लभ जिनराय।
चौंतीस अतिशय पैंतीस वाणी, जीवों ना गरिबनिवाज।
एक सहस्र ने आठ शुभ लक्षण, सगला गुण शोभन्त।
एक जीभ थीं किम कहवाये, तुम गुण अनन्त अनन्त।
सहंस जीभ सुर गुरु बणावे, तो ही न पामे पार ॥वारी०॥४

सर्वज्ञ सर्वदर्शी जग भूषण, विरुद है तारण तरण।
धर्मचक्री घाती कर्म निकन्दक, संशय मिथ्यातम हरण।
अनन्त क्रोड इग्यारे श्री श्री, श्री सिमन्धर स्वामी।

चिरंजीव योग्य यह लिखतं, अर्जी अन्तर्यामी।
दक्षिणार्द्ध भर्त्त क्षेत्र मध्यखण्ड, आर्य क्षेत्र मझार। वारी०।५
देहलपुर थी आज्ञाकारी, सेवक रांक कंगाल।
किंकर दास नो दास तुम्हारो, जीव वन्दन त्रिकाल।
घणें आदर सु घणें हर्ष सु घणें मान सन्मान।
घणी कृपा और घणी महर सु वर्णन लीजो मान।
घड़ी घड़ी ने समय समय में, अनन्त अनन्ती वार ॥वारी०॥६

दोहा

सेवक उपर सुनजर, कर लेजो अवधार।
पूत कपूत न देखसी, हूँ अवगुण नो भण्डार ॥१
अपरंच वलि जीव नृप कहे सुगुरु दूत ने आम।
तेपण सुणजो चित्त दे, छोड घरों रा काम ॥२

ढाल बाइसवीं—राग—मोतियाँ सु मूंगी हो मारु जी गोरडी।

कागदियो लिख दीधो सीमन्धर स्वामी ने ॥टेर॥
श्री श्री चेतन भूपाल।
कर्मो रे जोगे हो कुमत परणियो रे,
म्हनें पाड्यो मोह जंजाल ।का०॥१
ओलख लीधा हो अवगुण तेहना,
मैं तो दीधी मुंह उतार।
मोह राजाए हो जाय पुकार ने,
डर पाय लागी वलि लार ।का०॥२
काल अनन्तो मांने भटकावियो,
पछे समता पाछी आय।

अन्तर नैण हमारा खोलिया,

सीख देय दियो समभाय ।का०।३

बलि पुकारी कुमतण जाय ने,

तिण मेल्यो है कुगुरु दूत।

वचन सांभली म्हे तो थरहर्यो,

म्हारे साथे नहीं संजमसूत ।का०।।४

पायो मैं दुःखमी आरो पांचमो,

मति श्रुत नहीं निर्मल ज्ञान।

विद्या लब्ध्यादिक पण है नहीं,

नर रूप में ढोर समान ।का०।।५

संशय भांजण हारो तो को नहीं,

किण ने मै पूछूं वली जाय।

को नहीं दीसे हो इसडो भरत में,

जिहां देखूं तिहां न्याय ।का०।।६

भेखधारी पण बधिया इण समें,

वली ज्ञान किरिया में हीण।

पाखण्डियां जमाया मत आप आपणा,

कुबधां में घणा ही प्रवीण ।का०।।७

कुकली कदाग्रही बधिया यहाँ घणा,

केई अपच्छन्दा अवनीत।

एक आधार प्रभु जी म्हारे आप रो,

म्हाने सूत्र री छे परतीत ।का०।।८

महिमा यश पूजा रा भूखा छे घणा,
मूढ काढे नव नवां सांग।
हर्गिज ज्याने तो हूं धीजूं नहीं,
राखूं कने ज्ञान री डांग ।का०॥६

दोहा

देहलपुर माहि बध्या, चुगल जार ने चोर।
सबल फौज मोह कर्म नी, कांई न चाले जोर॥१
कुमत भ्रमावा थी अति, ले आवी ते लार।
चवदे मूसद्दी तेहना, तेहज करे उजाड॥२
तीन लोक तिण लूट ने, निर्धन कीधा लोग।
वली लारा सु मोकल्या, जराचन्द नामे रोग॥३
आवत पाण उजड किया, परगना चौदे तमाम।
गाम ठाम सूना पड्या, सुण जो ते मुझ स्वाम॥४

ढाल तेईसवीं—राग—चन्द्रगुप्त राजा सुणो

मस्तकपुर धूजे रह्यो, स्वामी कर्णपुरी रे तो मायो रे।
केनोई शब्द सुणता नथी, नासिकपुर वश नायो रे॥१
प्रभु विनतडी अवधार जो ॥टेर॥
रसनापुरी तो लडथडे, न गिणे खाड ने कुओ रे।
प्रभु हस्तपुरी तो धूजे घणी, हिरदा रो स्वास सूनो हुओ रे॥२
लालनगर नो लोक तो, निकल रह्यो दिन रातो रे।
धीरप दीधां पण ना रहे, पाछा माय ने दीसे जातो रे॥३
पेटलावाद रे माहे तो, खपतो न दीसे मालो रे।
पाठण हतो लोचनपुरी, ते तो थई बे हवालो रे॥४

दन्तपुरी तो परि भांजने, कर नाखो ढमढेरो रे।
मुखसुदा रो घाटो बे थयो, फोजा आण फिरी चोफेरो रे ॥५
वृषणपुर में ढूंढतां, कोई उभो नजर नहीं आवे रे।
मूल द्वार तो धरे धीरज नहीं, पड्यो वहु दुःख पावे रे।६
चरणपुरी रे मांहि तो, कांई न रह्यो सकारो रे।
चर्मपुरी लटके रही, सगले थयो हाकारो रे ॥७
काम पड्यो म्हारे सांकडो, गयो यौवन वन्धव नाशी रे।
रह्यो देहलपुर में एकलो, तिण सुं थयो मैं उदासी रे ॥८
बेहवाल परवश पड्यो, नहीं म्हारो कोय सखाई रे।
मुसद्दी पिण मोह सुं मिल गया, म्हारो जोर न चाले कांई रे।९
स्यूं कहूँ देहलपुर लयो, ते पिण मूल असारो रे।
प्रभु चरण कमल महाराज ना, म्हां सुं गाढा दूर अवारो रे ॥१०

दोहा

हूँ पुण्यहीण अभागियो, न सकूं तुम पे आय।
प्रभु भेटण कोई दिन तणी, दीसे छे अन्तराय ॥१
बीचे विकट पथ अतिघणा, झंगी झाडी झाड।
भूत प्रेत हिंसक घणा, नदियाँ ने वली पहाड ॥२
बोलाऊ नहीं राज नो, भरतक्षेत्र के माय।
विद्या लब्ध तथा देवता, पांख तिका पिण नाय ॥३
जेणें कर आवी मिलु, ते नहीं रह्यो उपाय।
चिन्तातुर प्रभु हूँ थयो, इण कारण महाराय ॥४

ढाल चौबीसवीं—राग—ते गुरु मेरे उर वसो

दीनदयाल महाप्रभु, कृपानिधी महाराज।

संकट शोक तणो मोटो, निवारो गरिबनिवाज ।।१
अर्ज म्हारी अवधारजो । टर । अभयदान दातार ।
भीरू चेतन रांक ना, एक थारो आधार ।।अ०।।२
श्रावक ने सुनजर सुं, आण अनुकम्पा लहर ।
राज रो प्रधान धर्मसी, मेलो कर ने महर ।।अ०।।३
समकित नाम सेनापति, सामग्री सामान ।
सेना सहित मोकलो, तो पायो लाख निधान ।।अ०।४
तो उद्धार हुवे मेरो, हे महर दरियाव !
रांक कंगाल.मो दीन ने उपर कीजो यह भाव ।।अ० ।५
सार एक तुम म्हायरे, बाकी सहु परिवार ।
काचो मेलो संसार रो, नहीं छूटता बार ।।अ०।।६
पाम्या ते पिण म्हायरा, बैरी छे रे एकान्त ।
श्यूं करिये परवश पड्यो, किम पूरूँ खांत ।अ०।।७
अनाथ नी बार प्रभु विना, कुण करे इण संसार ।
जो तो कोई दीसे नहीं, मुझ तुमचो आधार ।।अ०।।८
ते माटे हिव हे प्रभु, नहीं ढील नो काज ।
वेगी वार कीजो हवे, तुम ने हमारी लाज ।।अ०।।९

दोहा

इत्यादिक भाषा करी, मन जी नाम उकील ।
जाय मिलो भगवन्त सुं, न करी बीच में ढील ।।१
जीवराज रा दुत ने, देख्यो दीन दयाल ।
विणजारो कही जीव ने, बतलावे तत्काल ।।२

ढाल पच्चीसवीं—राग—ऊँची नीची सरवरिया री पाल०

विणजारा रे, देखी पोलां चार,
लख चौरासी चोवटा ।वि०॥१

विणजारा रे, थारे वालद लख कोड,
कर्म किरियाणो थे भर्यो ।वि०॥२

विणजारा रे, थारे छे दोय नार,
एक गोरी ने दूजी सावली ।वि०॥३

विण० सावली सुं बहु हेत,
इण रो भरमायो तूं भम्यो ।वि०॥४

विण० गोरी छे गुणवन्त,
इण री सीखे तूं चालजे ।वि०॥५

विण० थारो छे घर दूर,
शिर पर बोझ लियो थे घणो ।वि०॥६

विण० सम्बल लीजो साथ,
आगे नहीं हठवाणियो ।वि०॥७

विण० आगे छे थारो सेठ,
उठे तो लेखो मांगसी ।वि०॥८

विण० विणज्या विणज अनेक,
शिव पाटण विणजी नहीं ।वि० ।९

विण० खासी सघलो साथ,
लाभ टोटा रो तूं घणी ।वि०॥१०

विण० तू होई सूतो नचिन्त,
परभातियो तारो उगियो ।वि०॥११

विण० आयो थो मुट्ठी भींच,
हाथ पसारी ने जावसी ।वि०।।१२

विण० खांडी हांडी दे लार,
गाडो भरिया लाकडा ।वि०।।१३

विण० हांडी तो रेहसी मशान,
बाली ने लोग पाछा वल्या ।वि०।।१४

विण० भाई बंधव री जोड,
बाल त्रिया विल विल करे ।वि०। १५

विण० उभा मेल्या महल,
माता पिता झूरे घणा ।वि०।।१६

विण० साधु है चोकीदार,
हेलो देई जगावियो ।वि०।।१७

विण० श्री सीमन्धर स्वाम,
उपदेश तो इसडो दियो ।वि०।।१८

विण० इण अवसर में ते दूत,
कागद जाय हाथे दियो ।वि०।।१९

विण० समयसुन्दर कहे एम,
ममता मोह करो मति ।वि०।।२०

विण० कीजो कछु करतूत,
शिव रमणी वेगी वरो ।वि०।।२१

दोहा

हिव कागद मालम हुवो, श्री श्री श्री जी हजूर ।

करुणासागर बांच ने, आण दया भरपूर ।।१

हुकम हुवो दरबार रो, धर्मसि जी परधान।

सम्यक्त्व सेनापति प्रमुख, अनन्त लिया राजान ।।२

ढाल छब्बीसवीं—राग—खडका की

प्रबल प्रताप कर कोप धर्मसी चढ्यो ।टेर।

धूंस नगारां री प्रवल बाजी ।

सज्झाय नोवतां घोर करडो पडे,

जाण अम्बरतल रह्यो गाजी ।।१

उदधि कल्लोल दल पसरियो चिऊं दिसे,

शब्द सुणाय नहीं हा कहावे ।

दान ने शील तप भाव यह रूपणी,

फौज चतुरगिणी भली फावे ।।२

निश्चय व्यवहार नीशान कीधा खडा,

पंच स्वाध्याय सईदान घूरंता ।

समिती ना सिन्धुडा ने गुप्ति सुरणाइयाँ,

चर्चा नगारां री ठोर पडंता ।।३

अंग उपांग गजराज उतंग ज्यु,

करत गुललाट लीधा अनन्ता ।

खूब तुरंग मतंग बले हींसता,

सात उपनय मन पवन पन्था ।।४

सहस दस आठ रथ ठाठ साथे लीया,

विविध क्रिया तणो लोगपालो ।

प्रबल सेनापति सजी मोह मारण भजी,
रखे हिव मोह दे जाय टालो ॥५
आण सन्मुख भये मोह की फौज से,
भिडन के मते सब सुर गाढे।
सुणियो जब मोह तब द्रोह अधिको कियो,
सुभट हलकार रहे आप ठाढे ॥६
क्षमा खडग तप त्रिशूल अति जगमगे,
भाव भाला भला शेल झलके।
दया कटारी ने ढाल सिद्धान्त री,
बजर टोप नववाड झल्लके ॥७
शौर शिशो शुभ योग तीने भला,
गूढार्थ प्रश्न जंझार गोला।
भावना बारे तो तोपखाना भला,
गडगडाट सुणता करे कान बोला ॥८
दसे ही दसार दस यतिधर्म बंकडा,
कोण मोहराय नो लोग भोलो।
हाक सुण थर हरे धूजता गुड पडे,
देख प्रताप पड जाय भोला ॥९
जीव राजा सुण्यो बहुत खुशी भयो,
छोड देहलपुरी ममत्त सगली।
विरतपुर आवता आण आडा फिरिया,
राग ने द्वेष ये दो विकली ॥१०

दसमो गुणठाण तज करीय कजियो घणो,

राग ने द्वेष त्यां दोनु लुटिया।

फतेह हुई चेतनराय जोरे चढचो,

बारमें गुणठाण खपक श्रेण चढिया ॥१

दोहा

धर्मराय ने जीव नृप, मिल्या एकट्ठा आय।
हिव केवलगढ लेण कु चेतन रहयो उमाय ॥१
किधा अराबा सामुहा, किधा खडा निशाण।
रण भेरी ने रण तुरचा, तत्खण बाजी आण ॥२

ढाल सत्ताइसवीं—राग - काफी

बांके गढ फौज चढी है, ।टेर। बाजे नगारां री ठौड ।
सम्यक्त्व सहस्स किरण रवि उदयो, मिटचो मिथ्यातम घोर ॥बां०॥
सम्वर कोट, निर्जरा मोरचा, लिधा निज निज ठौड ।
मोहराय ले लियो सांकडे, चेतन दल अति जोर ॥बां०॥
सम रस प्याला पियारे अमल का, चेतन चढते तोर ।
शील संतोष खुली कसबोई, मावत नाय मरोर ।बां०॥
पकड लिया माहि छांने रहया ते, तेवीस सबला चोर ।
तत्व विचार सामग्री युद्ध री, बांध लाई चिहुं कोर ॥बां०॥
पाखण्ड तीन सो त्रेसट उपर, प्रश्न उत्तर के हैं शोर ।
सले पोस सिपाई करडे, देखत गिर जाय दौर ॥बां०॥
आई शुभ दशा शुक्ल तीजे पाये, ऊंचा ग्रह बहु जोर ।
कर चेतन पग काठा रोप्या, कुण है मोह न भोर ॥बां०॥

दोहा

मोह राय इम सांभलियो, बांका दोय वजीर।
राग द्वेष मारचा गया, लाग्यो ज्ञान को तोर ॥१
हुई रातो हिव मोहनृप, चढचो सबल ले साथ।
कुण चेतन और धर्मसी, देखावूं तसु हाथ ॥२

ढाल अट्ठाइसवीं—राग……

धणी बिना चढचो हो धाडायत चेतन उपरे ।टेर।
सेना ले चार कषाय।
क्रोध हाथीडा हो मान रा घुडला हींसता,
माया रथ भणकाय। ध० ॥१
पायदल अनन्ता हो लोभ रे लारे वर्गणा,
परनिन्दा ना निशान।
ईर्षा अमर्ष ना हो सिन्धुडा बोलावता,
जिण रो तो नहीं परमाण ॥२
तेवीस विषय सईदाण धूम पाडता,
नाटक तृष्णा ना धोकार।
अविरत क्रिया रा हो अराबो गडडाटा करे,
इसा लिया अनन्ता लार ॥३
अयजोडी ढालां हो मोह राजा लीधी हाथ में,
कुबुद्धां री हाथे कवाण।
कुड रा गिलोला हो दृष्टान्त खोटा एहवा,
मृषावाद रा बाण ॥४

रोष रो खडग हो त्रिशूलो हाथे तोतरो,
कुडा आल कटार।
चुगली चाडी हो भाला भलके सेलडा,
वरिणयो सबल झूंजार ॥५
अशाता अविनय हो चामर चारे दिश ढूले,
अहंकार गज असवार।
तीन सो त्रेसट हो पाखण्ड वाजा वाजता,
तिरण रो तो छे नहीं पार ॥६
प्रवेश कीधो हो चेतन दल माहि ने,
पड न सके जिरण री ठीक।
पर निन्दा रा हो हलकारा दौडे चउंदिसे,
अडिया आरण नजीक ॥७

दोहा

आरण अडचो अरिगयाँ अरणी, लागी झडाझड जोर।
केवलगढ के गोरवे, मोह भयो महाभोर ॥१
मोह बारण चाल्यो जबे, पडियो पाछो जाय।
क्षपक चक्र जव समरियो, ततक्षरण चेतनराय ॥२

ढाल उनतीसवीं—राग—अलगी रहनी

तीन लोक नो कंटक हतो रे, करतो अधिक अकाजा।
क्षपक चक्र करी शिर छेदियो, मार लियो मोहराजा ॥१
पडियो अरडड ॥ टेर ॥
आठे कर्म तरणो थो राजा, दल जिम बादल पूरा।

पर्वत टूंक ज्यों दिया उडाई, पौरष चढ्या रण शूरा ॥२
किया अमलडा ॥ टेर ॥

सोलह कषाय ने नव नोकषाय, दर्शन मोह तिहूं त्यागी।
धणिया बिना उड जाय ज्यों पूणी, फोजा सगली भागी ॥३
जाणे हुडडडड ॥ टेर ॥

बाज पड्यो जिम चीडकलिया में, उडी जाय ज्यूं सडडड।
मारचा मोह थया दल रीता, भागी जाय ज्यूं भडडड।४
चाले ज्यूं सणणणण ॥टेर ॥

त्याग वैराग ने उज्वल भावना, वाण आकाशे उडंता।
को को को छूटे समता हवाया, मोटा शब्द करंता ॥५
चडडड चूं ॥ टेर ॥

देवी देव मिल्या लख कोडां, देख राड अति करडी।
अचरज मन में अधिको पाया, जीतां री रीत पाये गडडी ॥६
घडडड भडडड ॥ टेर ॥

घातिककर्म चिहूं मर खपिया, आय गयो अवसान।
खोल दरवाजा माहे धसिया, पायो गढ केवलज्ञान ॥७
झलके झललल ॥ टेर ॥

जय जयकार हुवो जगत् में, जीत जगत् सहु लीधा।
अन्तर्मुहुर्त्त में चेतन नृप ने जीत नगरा दीधा ॥८
धी धी धी धी धीगडदां धीगडदां, धीगडदां, धीकट धीकट।
झीं झीं झीं झीं धीं धीं धीनिक ॥ टेर ॥

दोहा

झगडा में तो इण परे, जीत्यो चेतन राय।

केवल महोच्छव सुर करे, ते सुण जो चित्त लाय ।।१

ढाल तीसवीं—राग—धन्या नी

केवल ओच्छव देवी देवता कीधो,
भलो मार्‍यो मोह नगारे धूंसो दीधो ।
हिव भई खुशाली बाटी दया वधाई,
समता राणी ने सोहली चढी सवाई ।।१

जिण शासण खाला वाला ज्ञान रा चाल्या,
समता करुणा रसपुर दया ना हाल्या ।
लूटी कूटी हणी दूर मोह ने काढ्यो,
तीन लोक में तिलक जीत को चाढ्यो ।।२

क्षायक सखी सुमत बिहुं चेतन, राणी,
विलसी समझाया हलुकर्मी भव्य प्राणी ।
धन सीमन्धर जी स्वाम काम भलो कीधो,
चेतन ने मोक्ष नगर पहुँचाय दीधो ।।३

जिन राज सीमन्धर तीन लोक रे माई,
धर्मसी प्रधाने अखण्ड आण वर्ताई ।
दया रणसिंघो ज्ञानी पुरुष बजावे,
हलुकर्मी जीव सुणी चित्त आनन्द पावे ।।४

हिव दियो नगारो धीकडदां धीकडदां,
धौं धौं कट धौंकट झणणण झिगडदाँ ।
धूनिकट धी धी धी धी सइदाणा बाजे,
कवि नर कहे सीमन्धर जिनजी की,
यों विध नोवत बाजे ।।५

दोहा

कर्म अने चेतन तणो, थयो भाव संग्राम।
इम सुण ने उत्तम नरां, राखो शुभ परिणाम ॥१

सुमत कुमत बोले नहीं, लगी जीव री लार।
वीर बखाणी ओपमा, अनुयोग द्वार मझार ॥२

ढाल इकत्तीसवीं—राग—मोत्यां सु मुंगी हो मारु जी गोरडी

वारु जी, एम सुणी ने हो भवियण चेत जो,
वारु जी नीठ २ पायो नर नी खान।
वारु जी पांचे शरीरां में मोटो कह्यो,
वारु जी, औदारिक वर प्रधान ॥१

मोत्यां सुं मुंगी हो नर नी देहडी,
वारु जी, रत्न चिन्तामणि सार।
वारु जी, मोती तो मिलसी बीजे भव वली,
वारु जी, देही न मिलसी दूजी वार ॥टेर॥

भवियां, हिवडा विरहो छे अरिहंत देव रो,
भवियां वर्ष चौरासी हजार।
भवियां, ज्ञान लब्धाधिक दीसे नहीं,
भवियां, एक सूत्र नो छे आधार ।मो०॥२

भवियां, आज भरत में सूरज आथम्यो,
भवियां, हुवो यह घोर अन्धार।

भवियां, सिद्धान्त दीवलो हो काली रात में,
भवियां धर्म आज्ञा रो झवकार ।।मो०।।३
भवियां, फौज तो झूजे हो धणिया आगले,
भवियां, धणी मूआं सु जावे भाग ।
भवियां, धणी विना हो वैरी जीततां,
भवियां, जोधा पावे रे सौभाग ।।मो०।।४
भवियां, इम मुनि जूझे हो पंचम काल में,
भवियां, कर रह्या कर्मों सु राड ।
भवियां, खूंटी तो रोपी हो हाडा उपरे,
भवियां, कस देह रो रह्या काढ ।।मो०।।५
भवियां, ढीला केवे रे आरो पांचमो,
भवियां, संजम शुद्ध पले नांय ।
भवियां, इक्कवीस सहस्त्र वर्ष लग चालसी,
भवियां, दोष क्यों काढो आरा मांय ।मो०।।६
भवियां, इसडी जाणी ने उत्तम मानवी,
भवियां, कीजो थे व्रत पच्चक्खाण ।
भवियां, सम्बन्ध सुणी ने आरम्भ टाल जो,
भवियां, पाल जो जिनवर आण ।।मो०।।७
भवियां, संवत् उगणीसे हो साल ज बावन्ने,
भवियां, माह वदी तेरस सूरजवार ।
भवियां देश मेवाड़ हो ग्राम सायरे,
भवियां, नेम भणे छे अणगार ।।मो०।।८

भवियां, इगतीस ढाले हो चरित्र यह कियो,
भवियां, इण में छे न्यारी न्यारी जोड ।
भवियां, नाम कर्म तो मति जाण जो,
भवियां, कीधी एकट्ठी धर कोड ।·मो०॥६

कलश

मैंने चेतन चरित्र गायो, आयो अच्छत्तो कोय ए ।
केवली साखे नेम भाखे, मिच्छामि दुक्कडं मोय ए ॥१
संतानिया पूज्य अमरसिंह ना, गुरु मम पुनम चन्द है ।
तास पूज्य प्रशाद मेरे, रहे सदा आनन्द है ॥२

इति चेतन चरित्र सम्पूर्ण ।

परिशिष्ट

नेमवाणी

नेमवाणी के अन्तर्गत आये हुए
चरित्र प्रसंगों, और कथाओं का संक्षिप्त
कथा-सार

१ गजसुकुमारमुनि

*

गजसुकुमार वासुदेव श्रीकृष्ण के लघुभ्राता थे। बड़े ही मेधावी, तथा रूपसम्पन्न। इनके पिता का नाम वसुदेव और माता का नाम देवकी था। सबसे लघु पुत्र होने से माता देवकी का सबसे अधिक प्यार इन्हीं को मिला था।

यौवन की चौखट पर पैर रखने के पूर्व ही श्रीकृष्ण इनके विवाह के लिए रूपवती बालाओं को देखने लगे।

भगवान् श्री नेमिनाथ द्वारिका के बाहर पधारे, श्रीकृष्ण के साथ गजसुकुमार भी वन्दन के लिए चले, मार्ग में सोमिल ब्राह्मण की कन्या सोमा के तेजस्वी रूप को देखकर कृष्ण उसे गजसुकुमार के लिए कुँआरे अन्तःपुर में भिजवा देते हैं, और स्वयं भाई के साथ समवसरण में पहुँचे। भगवान् के त्याग-वैराग्यपूर्ण उपदेश को सुनकर गजसुकुमार के मन में वैराग्य भावना जाग्रत हुई, माता, पिता और भाई के सामने हृदय की बात रखी, ज्योंही यह बात सुनी कि माता मूर्छित हो गई, पिता

बेहोश हो गये और भाई का चेहरा मुर्झा गया। अनेक प्रयत्न किये, पर उनका वैराग्य न मिटा। अन्त में भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा लेते ही भगवान् से निवेदन किया —प्रभो! मुझे ऐसा सीधा रास्ता बता दीजिये, जिससे मेरी आत्मा का शीघ्र ही उद्धार हो जाए।

भगवान् ने उनको १२ वीं भिक्षुपड़िमा साधने का मार्ग बताया। उसे साधने के लिए वह अभिनव साधक निर्जन श्मशान भूमि में गया और मन को एकाग्र करके ध्यान में अवस्थित हो गया।

इधर सोमा का पिता सोमिल ब्राह्मण उधर से निकला, उसने मुनि को ध्यान मुद्रा में खड़ा देखकर विचारा–यही है मेरी पुत्री का पति! जो मेरी पुत्री को छोड़कर साधु बन गया। क्रोध से बेभान बनकर मुनि के सिर पर गीली मिट्टी की पाल बाँधकर उसके अन्दर जाज्वल्यमान अंगारे रखकर चल दिया। मुनि का मांस जलने लगा, चट-चटकर चमड़ी जलने लगी, सारे शरीर में भयंकर वेदना होने लगी, तथापि मन में तनिक मात्र भी अशान्ति नहीं। मुनि सोचने लगे 'यह तो मेरा परम उप-कारी है,' उस क्षमा के देवता के मन में तनिक मात्र भी उसके प्रति रोष और जोष नहीं आया। धन्य है उस क्षमामूर्ति को! कर्मों को नष्ट कर वे मुक्त बन गये।

—अन्तकृत्दशांग

*

राजा प्रदेशी सेयंविया नगरी का अधिपति था। वह बड़ा अधार्मिक, प्रचण्ड और क्रोधी था। वह सभी को कष्ट देता था। श्रमण-ब्राह्मण और गुरुजनों का भी अनादर करता था। उसकी रानी का नाम सूर्यकान्ता था और पुत्र का नाम सूर्यकान्त, जो उसके राज्य, राष्ट्रबल, वाहन, कोष, कोष्ठागार, पुर और अन्तःपुर की देखभाल करता था। उसके सारथी का नाम चित्त था।

एक बार चित्त सारथी को श्रावस्ती के राजा जितशत्रु को भेंटना (नजराना) देने के लिए श्रावस्ती भेजा, वहाँ चतुर्दशपूर्वधारी पार्श्वापत्य केशीकुमार श्रमण पधारे, उपदेश सुनकर चित्त सारथी प्रसन्न हुआ। मुनिराज को प्रार्थना की। मुनि भी विहार करते-करते सेयंविया पधारे और उद्यान में विराजे। दूसरे दिन घुमाने के बहाने से राजा प्रदेशी को सारथी उद्यान में लाता है, और केशीश्रमण से उनके प्रश्नोत्तर होते हैं, राजा जीव और शरीर को एक मानता था, पर केशीश्रमण के अकाट्य तर्कों से वह प्रतिबोध को प्राप्त होता है, तथा श्रमणोपासक बन जाता है।

श्रमणोपासक बनने के पश्चात् वह विषयों से उदासीन हो गया। रानी ने यह देखकर विष-प्रयोग के द्वारा राजा को मारकर पुत्र को राजगद्दी पर बैठाने का विचार किया। एक दिन उसने भोजन, पान और वस्त्राभूषणों में विष मिला दिया। भोजन

करते ही और वस्त्राभूषण धारण करते ही राजा के शरीर में तीव्र वेदना हुई, पर रानी के प्रति तनिक मात्र भी रोष न करता हुआ, पोषधशाला में संथारा कर आत्मभाव में स्थिर हो गया।

कथाकार का यह भी कहना है कि रानी की अधीरता इतनी अधिक बढ़ गई कि राजा जो पोषधशाला में ध्यानस्थ था, उसे टूंपा देकर खत्म कर दिया तो भी क्षमामूर्ति प्रदेशी के मन में क्रोध की रेखा भी नहीं चमकी।

— राजप्रश्नीय सूत्र के आधार से।

३ आर्य स्कन्दक

*

आर्य स्कंदक श्रावस्ती के निवासी थे। उनके पिता का नाम कनककेतु और माता का नाम मलयसुन्दरी था। उनकी एक बहिन थी जिसका पाणिग्रहण कांचीनगरी के पुरुषसिंह राजा के साथ किया गया था।

एक बार आचार्य विजयसेन के उपदेश को सुनकर स्कंदक ने दीक्षा ली। राजा ने अपने पुत्र की रक्षा के लिये गुप्त रूप से अनेक अनुचर नियुक्त किये। गुरु से आगमों का गम्भीर अध्ययन किया, फिर गुरु की आज्ञा से जिनकल्प को स्वीकार कर एकाकी विचरण करने लगे।

वे एक बार विहार करते हुए कांचीपुर पधारे, अनुचरों ने विचारा—यह तो इनके वाहन का नगर है, अतः यहाँ तो कोई भी उपसर्ग नहीं करेगा। एतदर्थ वे सभी बाहर ही ठहर गये। मुनि मध्याह्न में भिक्षा के लिए नगर में पधारे।

राजा और रानी महल के गवाक्ष में बैठे हुए थे। रानी ने मुनि को देखा, विचार आया—मेरा प्यारा भाई भी इसी प्रकार भीष्म-ग्रीष्म में भिक्षा के लिए परिभ्रमण करता होगा। भाई की स्मृति से नेत्रों से आंसू टपक पड़े। राजा ने देखा—मुनि और रानी का पहले कोई अनुचित सम्बन्ध रहा है। अनुचरों को आदेश दिया—नगर के बाहर लेजाकर मुनि के पैर से सिर तक की चमड़ी उतार दो। राजाज्ञा से वैसा ही किया गया। शरीर में भयंकर वेदना होने पर भी मुनि समभाव से विचलित नहीं हुए। क्षमा के दिव्य प्रभाव से कर्मदल को नष्ट कर केवली बन गये।

४ आर्य स्कंदक

*

आर्य स्कंदक श्रावस्ती के अधिपति जितशत्रु राजा के पुत्र थे। बड़े ही प्रतिभाशाली, तेजस्वी और धर्मनिष्ठ थे। उनकी एक बहिन पुरन्दरयशा कुम्भकार कटक के राजा दंडकी को ब्याही थी। दंडकी राजा स्वयं भी अधर्मी था और साथ ही उसका पुरोहित पालक भी उसी तरह था। एक बार पालक

श्रावस्ती आया। राजसभा में उसके द्वारा धर्म की निन्दा सुनते ही स्कंदक ने उसे फटकारा। निरुत्तर होकर वह चला गया।

बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रत के उपदेश को सुनकर स्कंदक ने पाँच सौ कुमारों के साथ दीक्षा ली। एक बार स्कंदक के मन में अपनी वहिन और बहनोई को धर्म-उपदेश देने की इच्छा हुई। भगवान् से निवेदन किया।

भगवान् ने कहा—"मारणांतिक उपसर्ग आयेगा। तुम्हारे अतिरिक्त पांच-सौ शिष्य सभी आराधक होंगे।"

"बहुत अच्छा भगवन्! मेरा न सही, पर इन सभी का तो उद्धार हो ही जायेगा।"

भवितव्यतावश पांच-सौ शिष्यों के साथ स्कंदक कुम्भकार कटक पहुंचे। उद्यान में ठहरे। ये समाचार ज्योंही पालक को ज्ञात हुए, उसका पुराना वैर उद्बुद्ध हो गया। अपमान का बदला लेने के लिए जिस उद्यान में मुनि ठहरे थे, वहाँ तीक्ष्ण और भयंकर शस्त्र भूमि में गड़वा दिये। राजा से पालक ने निवेदन किया—महाराज! स्कंदक पांच-सौ सुभटों के साथ राज्य हड़पने के लिए आया है। राजा को विश्वास नहीं हुआ, तो अंधेरी रात में लेजाकर वे सारे शस्त्र वताये। राजा को विश्वास हुआ। क्रुद्ध होकर राजा ने कहा—पकड़ो इन दुष्ट साधुओं को, जैसा भी तुम उचित समझो वह सव राज्य की रक्षा के लिये कर सकते हो।

पालक तो राजा का यही आदेश चाहता था, उसने उसी क्षण जल्लादों को बुलाया। चमचमाते हुए खंजर लेकर जल्लाद पहुँचे, साथ ही एक वड़ा कोल्हू (घाणी) भी।

पालक ने मूछों पर हाथ देते हुए कहा—स्कंदक! तैयार हो जाओ, उस दिन जो अपमान किया था आज उसी का फल तुम्हें चखाता हूँ। सभी को इसी कोल्हू में पिलवा देता हूँ।

आर्य स्कंदक ने उसे विविध तरह से समझाने का प्रयत्न किया, पर वह न माना। पकड़-पकड़कर वह साधुओं को कोल्हू में डालने लगा। इधर आर्य स्कंदक शिष्यों को आत्मा की अमरता, कषाय के दुष्परिणाम को समझाकर उन्हें धर्म में स्थिर करते रहे। धर्मवीर वे शिष्य मुस्कुराते हुए मृत्यु का आलिंगन करते रहे।

रक्त की नदी वह गई, मांस और हड्डियों के ढेर लग गये। बीभत्स दृश्य को देखकर एक क्षण तो आर्य स्कंदक चलित होने लगे, द्वितीय क्षण संभल गये। देखते ही देखते चारसौ-निन्यानवे शिष्यों को पील दिया। अब एक लघु, सुकुमार शिष्य का नम्बर था। उस पर आचार्य का अत्यधिक प्रेम था। आचार्य ने कहा—अरे पालक! इसको तो छोड़ दे, अति बुरा है। तेरा अपराध तो मैंने किया है, इस शिशु ने नहीं। पर वह कहाँ मानने वाला था। उसने तो चट से टांग पकड़कर उसे पील दिया।

यह दृश्य देख आचार्य के नेत्रों में खून उतर आया। धैर्य का बांध टूट गया। पांच-सौ शिष्यों को अन्तिम-आराधना कराने

वाले आचार्य अपनी आराधना करना भूल गये—"याद रखना पालक! मेरी तपस्या का फल हो तो मैं ऐसे अत्याचारी राजा, प्रजा और तुम्हारा विनाश करने वाला बनूँगा।"

क्रोध करने वाला आचार्य विराधक बन गया और क्षमा करने वाले पाँच-सौ शिष्य आराधक! यह है क्षमा का चमत्कार!

—उत्तराध्ययन अ. २—कमल संयमीटीक

—त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र ७।५

—भरतेश्वर बाहुबली वृत्ति

५ शालिभद्र

*

शालिभद्र का जीव पूर्व भव में संगम नामक ग्वाला था; वह बहुत ही गरीब था। लघुवय में ही पिता का निधन हो जाने से माता श्रीमंतो के घर पर झाड़ निकाल कर, पानी भर कर, और बर्तनों को मलकर आजीविका चलाती थी। एक दिन संगम ने अपने हमजोले साथियों को खीर खाते देखा, मन मचला, माता को कहा। आर्थिक स्थिति से संत्रस्त होने के कारण माता झुँझला उठी और मुँह पर एक तमाचा मार

दिया। पुत्र रो पड़ा, पड़ोसी की बहिने एकत्रित हुईं और उन्होंने खीर की सामग्री संजो दी।

मां ने खीर तैयार की, पुत्र को परोस कर वह पानी के लिए बाहर गई, पीछे से मासखमरण के तपस्वी मुनि पाररणे के लिए आये, संगम ने अत्यन्त उदार भावना से खीर का दान दिया, और खूब ही प्रसन्न हुआ।

माता आई। पुत्र को थाली में से खीर चाटते हुए देखा, "अरे, मेरा पुत्र कितना भूखा है! इतनी-इतनी खीर खा लेने पर भी इसे अभी तक सन्तोष नहीं हुआ।" उस भोली माँ को क्या पता था कि उसने तो सारी खीर मुनि को दे दी थी। दृष्टिदोष के कारण पेट में दर्द हुआ, उसी समय आयु पूर्णकर दान के प्रभाव से वह राजगृह नगर के इभ्यश्रेष्ठी गोभद्र के वहाँ उत्पन्न हुआ। शालिभद्र नाम रखा। युवावस्था आने पर बत्तीस श्रेष्ठी पुत्रियों के साथ उसका पारिणग्रहरण हुआ। गोभद्र सेठ जब देव बना, तब वह पुत्र के प्रेम से प्रतिदिन ३३ पेटियाँ स्वर्ग से भेजता। शालिभद्र की अपार ऋद्धि को देखकर मगध सम्राट् श्रेरिणक भी चकित हो गया था।

अन्त में भगवान महावीर के पास दीक्षा ले, संथारा कर सर्वार्थसिद्ध विमान में उत्पन्न हुए।

—भरतेश्वर बाहुबली वृत्ति।

*

राज प्रासाद सजा हुआ था। सहेलियों के साथ अंजना बैठी
ई मनोविनोद कर रही थी। एक सहेली ने कहा—अंजना का
ाणिग्रहण मेघनाद से होने वाला था, पर वह दीक्षा लेने वाला
, एतदर्थ पवनञ्जय के साथ पाणिग्रहण का निश्चय हुआ है।

अंजना के मुँह से 'दीक्षा लेने वाले को धन्य है' ये शब्द
िकल पड़े। गुप्तरूप से अंजना के रूप को देखने के लिए आये
ए पवनञ्जय के कानों में ये शब्द गिर पड़े, "अहो! अंजना तो
झे नहीं, उसे चाहती है।"

विवाह की तैयारियाँ हुईं, पर पवन को तो अंजना के नाम
ही घृणा हो गई। शादी कर महल के एक कोने में उसे छोड़
। अंजना पति के प्रेम की प्यासी बनकर अनुनय-विनय
रती, पर पवनञ्जय उसका तिरस्कार करता।

एक बार रावण का दूत आया, बोला वरुण से युद्ध करने
लिए आपको बुलाते हैं, राजा प्रह्लाद तैयार हुआ। किन्तु
वनञ्जय ने कहा--पिताजी! आप यहीं पर रहें। मैं युद्ध के
ाये जाऊँगा। युद्ध के लिए रवाना हुआ। कुछ दूरी पर जाकर
त्रि विश्राम लिया। वहाँ पर चकवे से बिछड़ी हुई चकवी को
ती देखकर पवन को भी अंजना की स्मृति आई और रात्रि
अंजना के पास आये। तीन दिन रहे, पुनः जाते समय अंजना

ने कहा—आप माता-पिता से मिललें। पर पवनञ्जय मिले नहीं, अपनी मुद्रिका देकर चल दिये।

अंजना गर्भवती हुई। पवनञ्जय की माता यह देखकर अत्यधिक रुष्ट हुई, व्यभिचारिणी कहकर अंजना और उसकी सहेली वसन्त तिलका को राजमहलों से निकाल दिया। ससुर-गृह से निष्कासित वह माता-पिता के वहाँ पर गई। भाइयों की मनोतियाँ की, पर किसी ने भी उसे व्यभिचारिणी समझ कर आश्रय नहीं दिया।

अंजना भयानक जंगलों में घूमती रही, सवा नौ माह पूर्ण होने पर एक गुफा में हनुमान को जन्म दिया। जंगल में बिलखती हुई अंजना को देखकर उसका मामा प्रतिसूर्य उसे विमान में बैठाकर अपने घर ले गया, पीछे से जब युद्ध में विजय पताका फहराकर पवनंजय लौटते हैं तो अंजना को न देखकर आकुल-व्याकुल हो जाते हैं, और सारे जंगलों को छानने के बाद अंजना प्राप्त होती है। कलंक मिट जाता है। सभी की जिह्वा पर अंजना का नाम चमकने लगता है।

—भरतेश्वर बाहुबली वृत्ति के आधार

७ धन्यकुमार

*

धन्यकुमार काकंदी नगरी के निवासी थे। इनकी माता का नाम भद्रा सार्थवाही था। भद्रा के पास अपरिमित धन एवं

भोगोपभोग की सामग्री थी। माता ने अपने प्यारे पुत्र का लालन-पालन बड़े ही प्रेम से किया। धन्यकुमार भोगों में इतने अधिक तल्लीन हो गये कि संसार में क्या हो रहा है, उसका उन्हें ध्यान ही नहीं था।

एक दिन श्रमण भगवान् महावीर पधारे, उपदेश सुनकर वैराग्य की भावना इतनी बलवती हुई कि सभी को परित्याग कर श्रमण बन गये।

श्रमण बनने के पश्चात् उन्होंने जो तप किया, वह इतना अधिक अद्भुत और अनुपम है कि कवि कुलगुरु कालिदास ने कुमार सम्भव महाकाव्य में जो पार्वती के तप का वर्णन किया है, वह भी फीका-फीका-सा लगता है। तप से शरीर इतना अधिक कृश हो गया कि उठते बैठते, चलते नसों में चट-चट की आवाज आती थी, तथा मांस और रक्त का कहीं नामोनिशान भी नहीं था।

अन्त में धन्यमुनि आयु पूर्ण कर सर्वार्थसिद्ध विमान में देवरूप में उत्पन्न हुए। वहाँ से मानव बन तपः साधना से सिद्ध-बुद्ध और मुक्त होंगे।

—अनुत्तरौपपातिकदशा, तृतीयवर्ग प्रथम अध्ययन के आधार पर

*

बात बहुत पुरानी है, एक क्षितिप्रतिष्ठ नगर था। बलराज
राज्य करता था। नगर श्रेष्ठी का नाम जिनदास था। राज
और प्रजा सभी आनन्द के सागर पर तैर रहे थे।

वर्षा का समय था, नदी में जोर से पूर आया हुआ था
राजा और प्रजा सभी उसे देखने के लिए पहुँचे। एक तैराक
नदी में डुबकी लगाई और एक तैरता हुआ फल आ रहा था, उ
लेकर राजा को भेंट किया। राजा ने ज्यों ही फल खाया, त्यों ह
उसकी मधुरता मन में बस गई। अनुचरों को आदेश दिया—ज
अन्वेषण करो, यह फल कहाँ से आया है? अनुचर तलाश क
हुए पहुँचे, जंगल में नदी के किनारे एक बगीचा है, उसमें वे फ
अत्यधिक लगे हुए थे। अनुचर ज्यों ही अन्दर प्रवेश करने ल
कि त्यों ही पास में खेती करने वाले किसानों ने कहा—अन्दर
जाइये, यह बगीचा तो एक यक्ष का है जो अन्दर प्रवेश कर
है वह उसे प्राणों से मुक्त कर देता है।

यह बात सुनते ही अनुचर का हृदय धड़कने लगा औ
सारा वृत्त आकर राजा से निवेदन किया। पर जिह्वालोलु
राजा कहाँ मानने वाला था। प्रतिदिन एक व्यक्ति को भेजने
आदेश हुआ। राजाज्ञा से एक व्यक्ति प्रतिदिन जाता और फ
को तोडकर नदी में डालता, इधर यक्ष उसे पकडकर वहीं समा
कर देता। प्रजा में हाहाकार मच गया। पर राजा को समझा
कौन; अनेक प्रयत्न किये। किन्तु राजा नहीं माना।

एक दिन जिनदास श्रेष्ठी की बारी आई। सेठ संथारा कर बगीचे में पहुंचा, यक्षातन में पहुँचते ही उसने उच्च स्वर से नवकार महामंत्र का उच्चारण किया और देव की आज्ञा लेकर फल तोडने के लिए ज्यों ही आगे बढ़ा, त्यों ही यक्ष ने विचारा, यह नवकार मंत्र मेरा पूर्व परिचित है, स्मृति आई। पूर्व भव में मैं साधु था। सम्यक्प्रकार से साधना न करने के कारण विराधक बना, धिक्कार है मुझे! आकर सेठ के चरणों में झुका। बोला—आप मेरे गुरु हैं और मैं आपका शिष्य हूं। सेठ ने उसे अच्छी तरह प्रतिबोध दिया। देवदर्शन खाली नहीं जाते हैं, अतः आज्ञा फरमावें, सेठ ने कहा—भविष्य में किसी को न मारना और प्रतिदिन एक फल लाकर मेरे घर देना, देव ने स्वीकार किया, और सेठ को सीधे ही उठाकर घर पर रख दिया।

समय हो जाने पर भी जब नदी में फल नहीं आया तब राजा के सेवकों ने प्रार्थना की। सेवकों को राजा ने सेठ के वहाँ भेजा, सेठ आया और फल भेंट किया। सभी जन चकित थे। सेठ ने नमस्कार महामंत्र का दिव्य प्रभाव बताया, सभी के मन में महामंत्र के प्रति श्रद्धा जागृत हुई।

—नमस्कार महामंत्र, गा० ३८।१०२४

९ चार बहुएँ

*

राजगृह में धन्ना सार्थवाह रहता था। बड़ा ही बुद्धिमान और लक्ष्मीसम्पन्न था। उसकी पत्नी भद्रा सुशील और गृहकार्य में

दक्ष थी। धनपाल, धनदेव, धनगोप, और धनरक्षित ये सेठ के चारपुत्र थे। उज्झिका, भोगवती, रक्षिका और रोहिणी ये चार पुत्रवधुएं थीं।

एक बार सार्थवाह के अन्तर्मानस में विचार उद्बुद्ध हुआ कि मेरे पीछे घर का कार्य कौन संभालने में समर्थ है, यह देखना चाहिए। अतः पुत्रवधुओं की परीक्षा करने हेतु एक मनोवैज्ञानिक उपाय निकाला।

एक विशाल प्रीतिभोज का आयोजन किया और परिजनों के सामने पुत्रवधुओं को बुलाकर धान (चावल) के पाँच-पाँच दाने देते हुए कहा– इन्हें संभाल कर रखना और जब मांगू तब मुझे पुनः लौटा देना।

पुत्र वधुओं ने दाने लिये, और अपने मन में विचारने लगी।

प्रथम उज्झिका ने सोचा–"अच्छा उत्सव कर दाने दिये ? यहाँ पर कहाँ दानों की कमी है ! कोष्ठागार धान के दानों से भरे पड़े हैं। संभालने की क्या आवश्यकता है, जब मांगेंगे तब नये दे देंगे।" उसने वे दाने फेंक दिये।

द्वितीय पुत्रवधू ने विचारा—इतने समारोह करके दाने दिये गये हैं, अवश्य ही ज्ञात होता है ये किसी सिद्ध पुरुष के दिये हुए चमत्कारी दाने हैं अतः उसने धान छीलकर दाने खा लिये।

तीसरी ने विचार किया – ये दाने ससुर जी ने संभालने के लिए कहा है, मालूम होता है इसमें, कुछ रहस्य है, अतः उसने एक बढिया वस्त्र खंड में बांधकर रत्नों की मंजूषा में रख दिया।

चतुर्थ पुत्रवधू नें गहराई से सोचा—मेरे श्वसुर बड़े ही बुद्धिमान हैं, पाँच दाने दिये गये हैं। इसके पीछे गंभीर रहस्य होना चाहिए। जब सेठ मांगे तब इसके पाँच करोड़ दाने दिये जाय तभी ठीक रहेगा, अतः उसनें वे पाँचों दानें पिता के घर भेज दिये और विशेष रूप से खेती करने का भी सन्देश दे दिया। चार वर्ष पूरे हुए, पाँचवाँ वर्ष प्रारम्भ हुआ, सेठ को पुरानी स्मृति आई। परीक्षा का परिणाम जानने की भावना जागृत हुई, पूर्ववत् ही प्रीतिभोज का आयोजन कर पुत्रवधुओं को बुलाकर दाने मांगे।

प्रथम पुत्रवधू अन्दर गई। पाँच और दाने लाकर सेठ के हाथ में थमा दिये। सेठ ने पूछा— सच बताओ क्या ये दाने वे ही हैं, जो मैंने दिये थे ?

उसने हाथ जोडकर कहा—नहीं वे दाने तो मैंने फेंक दिये थे।

अब द्वितीय पुत्र वधू भोगवती से दाने मांगे। उसने भी भंडार से लाकर दाने दिये। सेठ के पूछने पर कहा—वे तो मैंने खा लिये थे।

तृतीय रक्षिका ने रत्नमंजूषा खोलकर दाने ससुर के हाथ में दिये और बोली ये वे ही हैं।

अब चतुर्थ पुत्र वधू की वारी थी, उसने निवेदन किया— "तात ! दाने तैयार हैं, और उसके लाने के लिए अनेक गाडियाँ चाहिए।"

रोहणी की बात पर सभी को आश्चर्य हुआ। सार्थवाह के चेहरे पर प्रसन्नता की रेखा चमक उठी, उसने जिज्ञासा व्यक्त की—पाँच दाने के लिए गाड़ियों की क्या आवश्यकता है ?

उसने सारी खेती करवाने की बात बता दी।

सभी के मुंह पर रोहिणी की प्रशंसा थी। सार्थवाह ने परीक्षा परिणाम की घोषणा करते हुए कहा—रोहिणी को मैं गृहस्वामिनी के पद पर नियुक्त करता हूँ, यह वंश की कीर्ति को बढ़ायेगी।

द्वितीय रक्षिका को मैं चल-अचल संपत्ति के संरक्षण का कार्य सौंपता हूँ।

तृतीय भोगवती को खाद्य विभाग दिया जाता है और चतुर्थ बहू उज्भिका को गृह की सफाई का कार्य, क्योंकि यह बाहर फेंकने के कार्य में दक्ष है।

जिसमें जैसी योग्यता होती है वह वैसा कार्य करता है। रूपक का मूलार्थ स्पष्ट करते हुए भगवान महावीर ने कहा—पंच महाव्रत की तरह ये पाँच शालि के दाने हैं. साधक को रोहिणी की तरह इन दानों को वढ़ाना है।

—ज्ञातासूत्र अ० ७

१० नेमिनाथ का पराक्रम

*

भगवान् नेमिनाथ के जीवन का एक मधुर प्रसंग है। एक बार वे घूमते-घामते वासुदेव श्री कृष्ण की आयुधशाला में पहुँच

गये। वहाँ पर नाना प्रकार के शस्त्रास्त्रों का निरीक्षण करने लगे। करते-करते पंचानन शंख दिखलाई दिया। कौतूहल वश उसे लेकर ज्यों ही उन्होने बजाया तो श्रीकृष्ण के कानों में शब्द गिरा, शब्द सुनते ही कृष्ण विचारने लगे, यह शंख की आवाज कहाँ से आ रही है? मेरे अतिरिक्त शंख को बजाने की शक्ति किसी में नहीं है। अरे! मेरा प्रतिस्पर्धी कौन जन्मा है? ऐसा कौन शत्रु है जो शंखनाद कर रहा है?

अनुचरों ने बताया– आपका शत्रु नहीं, पर आपका ही भाई नेमिनाथ है।

श्रीकृष्ण चिन्तातुर हुए कि जब लघुवय में ही यह इतना अधिक शक्ति सम्पन्न है तो युवावस्था में कितना अधिक वलिष्ट होगा? परीक्षण की दृष्टि से श्री कृष्ण ने अपना हाथ लम्बा किया, नेमिनाथ ने अनायास ही उसे नीचे झुका दिया। जब नेमिनाथ ने हाथ ऊँचा किया तो श्री कृष्ण झूम गये पर हाथ को तनिक मात्र भी नीचा न कर सके, अपितु वे स्वयं ही हाथ पर लटक कर झूलने लगे।

नेमिनाथ के अतुलबल को देखकर श्री कृष्ण चकित थे। 'नेमिनाथ कहीं मेरा राज्य न हडप लेंवे एतदर्थ उनके बल को कम करना चाहिए।' बल को कम करने की भावना से अनेक मोह के प्रसंग उपस्थित किये गये। विविध प्रकार के व्यंग्य बाणों की वृष्टि की, पर नेमिनाथ पर कुछ भी असर नहीं हुआ। अन्त में गोपिकाओं ने मजाक-मजाक में विवाह की तैयारी की।

नेमिनाथ मौन रहे 'मौनं सम्मति लक्षणम्' समझ कर उन्होंने स्वीकृति समझ ली और उत्साह के साथ विवाह की तैयारी प्रारम्भ कर दी।

११ चोर को सद्बुद्धि

*

एक बार कविवर नेमिचन्द्र जी महाराज अपने शिष्यों के साथ मेवाड के पर्वतीय प्रदेश में परिभ्रमण कर रहे थे। उनके एक शिष्य दौलत मुनि थे, जिन्होंने बड़ी उम्र में दीक्षा ग्रहण की थी, बडे भद्र प्रकृति के सन्त थे। उनके पास एक खद्दर की मोटी चद्दर थी और और दूसरी कम्बल थी।

रात्रि प्रवचन को समाप्त कर जब कविवर नेमिचन्द्र जी महाराज ध्यानादि से निवृत्त होकर सोने की तैयारी करने लगे तब दौलत मुनि ने कहा—गुरुदेव सायंकाल तो प्रतिलेखना करते समय कंबल थी अब न जाने वह कहाँ चली गई? गुरुदेव ने कहा —मैंने तुम्हारे को प्रथम कहा था कि तुम्हारे पास दो साधन हैं, अतः एक किसी अन्य सन्त को दे दो, पर तुम्हारी ममता नहीं उतरी।

गुरु शिष्य की बात को सुनकर श्रावकों को भी ज्ञात हुआ, पर कम्बल न मिली।

जो कम्बल ले गया था उसके भाव भी रात्रि में वदल गये और उसने सूर्योदय के पूर्व ही छप्पर पर कम्बल डाल दी

सूर्योदय होने पर इधर उधर जब देखने लगे तब गुरुदेव ने कहा —पहले छप्पर तो देख लो ! छप्पर देखा तो कम्बल वहीं पडी थी। प्रस्तुत प्रसंग को कवि ने भजन के रूप में प्रस्तुत किया है।

१२ गणधर गौतम

*

गणधर गौतम भगवान् महावीर के प्रमुख शिष्य थे। इनके पिता का नाम वसुभूति और माता का नाम पृथिवी था। मगध देश में अवस्थित गोबर गांव के निवासी थे। इनका मूल नाम यद्यपि इन्द्रभूति था पर ये गोत्राभिधान गौतम के नाम से ही अधिक विश्रुत थे।

ये अपने युग के जाने-माने हुए वेदों के प्रकाण्ड पण्डित थे। एक बार ये मध्यम पावा के निवासी सोमिलार्य के वहाँ अपने पाँच सौ मेधावी छात्रों के साथ यज्ञ महोत्सव में गये हुए थे। उधर से भगवान महावीर ऋजुवालिका नदी के तट से विहार कर वहाँ पधारे।

सर्वज्ञ सर्वदर्शी भगवान् महावीर के दर्शन हेतु जनता को उमडती हुई देखकर इन्द्रभूति अपने पाँच सौ छात्रों के साथ वादी बनकर महावीर को पराजित करने के लिए समवशरण में पहुँचे, भगवान् ने उनके मानसिक संशय का निवारण किया, वेदों के गंभीर रहस्य को समझाया। समझते ही अपने शिष्यों के साथ प्रव्रज्या ग्रहण की और प्रथम गणधर बने।

गणधर गौतम का जीवन एक प्रेरणादायी जीवन है। उनके जीवन के कण-कण से सद्गुण प्रस्फुटित हो रहे हैं। विनय, विवेक और जिज्ञासा की त्रिवेणी उनके जीवन में प्रवाहित है। उनके जीवन के वे मधुर संस्मरण आज भी जन-जन के मन में प्रेरणा संचारित करते हैं।

भगवान् महावीर के प्रति उनके मन में अनन्य भक्ति थी। जनता के प्रतिनिधि बनकर वे समय समय पर भगवान् से जिज्ञासा प्रस्तुत करते और भगवान् उनका समाधान प्रदान करते।

पचास वर्ष की उम्र में दीक्षा ग्रहण की, तीस वर्ष तक छद्मस्थपर्याय में रहे। जिस रात्रि को भगवान् महावीर निर्वाण प्राप्त हुए, उसी रात्रि के अन्त में गौतम को केवलज्ञान की उपलब्धि हुई। बारह वर्ष तक केवली अवस्था में रहकर ६२ वर्ष की अवस्था में अपना गण गणधर सुधर्मा को देकर राजगृह के गुणशील चैत्य में मासिक अनशन पूर्वक परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।

—आवश्यक निर्युक्ति

— त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरित्र

१३ भगवान् शान्तिनाथ

*

भगवान् शान्तिनाथ सोलहवें तीर्थंकर हैं। उनके पूर्वभव की एक घटना इतनी अधिक लोकप्रिय रही है कि भारतीय संस्कृति

की तीनों धाराओं ने उसे भिन्न-भिन्न नामों से अपने ग्रन्थों में स्थान दिया है। वह घटना इस प्रकार है—

एक बार भगवान शान्तिनाथ का जीव राजा मेघरथ बना। वह एक समय अपने राज दरबार में बैठा हुआ था कि एक काँपता हुआ कबूतर आया, राजा की गोद में बैठ गया। कबूतर के पीछे बाज आया, उसने राजा से कहा—यह मेरा भोजन है, मुझे दीजिए!

राजा ने कहा—यह मेरी शरण में आ चुका है, इसकी रक्षा करना मेरा प्रथम कर्तव्य है।

बाज ने कहा—राजन्? मैं भूख से छटपटा रहा हूँ। मैं मांसाहारी हूँ, मांस के अतिरिक्त कुछ भी नहीं खाता।

शरणागत की रक्षा के लिए राजा ने अपना मांस देना प्रारंभ किया। अन्त में बाज अपने असली रूप में प्रकट होकर परीक्षा में उत्तीर्ण होने से राजा को आशीर्वचन देता हुआ चल दिया?[1]

प्रस्तुत घटना शिवि राजा के उपाख्यान के रूप में वैदिक ग्रन्थ महाभारत में प्राप्त होती है और बौद्ध वाङ्मय में जीमूतवाहन के रूप में चित्रित की गई है। यह घटना हमें बताती है कि जैन परम्परा केवल निवृत्ति रूप अहिंसा में ही नहीं, पर मरते हुए की रक्षा के रूप में—प्रवृत्ति रूप में भी धर्म मानती है।

(क) वसुदेव हिंडी—२१—लम्भक, (ख) त्रिषष्टि श० ५।४

भगवान् शान्तिनाथ की माता का नाम अचलादेवी और पिता का नाम विश्वसेन था। जब वे माता के गर्भ में आये तब सारे देशवासी मृगी की भयंकर व्याधि से संत्रस्त थे, भगवान् की प्रबल पुण्यवानी के प्रभाव से रोग-शोक नष्ट हो गये, एतदर्थ ही "सन्ती-सन्ती करे लोए" के रूप में उनका गुणानुवाद किया गया है।

युवावस्था प्राप्त होने पर षट्खण्ड के अधिपति बने, और अन्त में भोगों का परित्याग कर संयम ग्रहण कर तीर्थंकर बने।

भगवान् शान्तिनाथ का स्मरण आज भी जीवन में शान्ति प्रदान करने वाला माना जाता है।

१४ भगवान् सीमन्धर

*

भगवान् सीमन्धर स्वामी का विशेष परिचय प्राचीन ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं है।

जिस समय भरत क्षेत्र में सतरहवें तीर्थंकर कुन्थुनाथ का शासन समाप्त हो चुका था और अठारहवें तीर्थंकर अर का शासन प्रारम्भ होने वाला था, उस समय भगवान् सीमन्धर पूर्व महाविदेह के पुष्कलावती विजय की पुण्डरीकिनी नगरी में जन्म ग्रहण करते हैं। उनकी माता का नाम सत्यकी और पिता

का नाम श्रेयांस था। युवावस्था प्राप्त होने पर रुक्मिणी देवी के साथ उनका पाणिग्रहण होता है।

तीर्थंकर मुनिसुव्रत के शासन की अवधि पूर्ण होने पर और तीर्थंकर नमि के शासन के पूर्व वे दीक्षा ग्रहण करते हैं, और घातिकर्मों को नष्टकर केवलज्ञान प्राप्त करते हैं।

आगामी चौबीसी के आठवें उदय पेढाल तीर्थंकर के समय वे चौरासी लक्ष पूर्व का आयु समाप्त कर परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे।

—जैन तत्त्व प्रकाश—आचार्य अमोलक ऋषिजी

१५ भगवान् ऋषभदेव

*

भगवान् ऋषभदेव का व्यक्तित्व और कृतित्व इन्द्रधनुष की तरह मनमोहक है।

वे जैनागमों की दृष्टि से प्रथम तीर्थंकर हैं, और वैदिक दृष्टि से विष्णु के अवतार हैं। उनके पिता का नाम न[illegible]
माता का नाम मरुदेवी था। वे उस युग में आये थे [illegible]
मानव अकर्म भूमि से कर्मभूमि की ओर [illegible]
उन्होंने उस मानवसमाज का नेतृत्व कि[illegible]

समस्त समस्याओं का समाधान किया जो उस समय सामनें आ रही थी। असि, मषि, कृषि आदि कलाएँ सिखलाईं।

भगवान् ने अपने बड़े पुत्र भरत को वहत्तर कलाएँ, और उनसे छोटे पुत्र बाहुबली को प्राणी लक्षणों का ज्ञान कराया तथा ब्राह्मी और सुन्दरी को अठारह लिपि और गणित का क्रमशः परिज्ञान कराया।

अन्त में भरत को राज्य देकर स्वयं श्रमण बने, तीर्थंकर बनें। भरत के नाम से देश का नाम भारतवर्ष प्रसिद्ध हुआ।

भगवान् को श्रेयांस के द्वारा दिया गया इक्षुरस का दान, माता मरुदेवी की मुक्ति, भरत बाहुबली का युद्ध, ब्राह्मी सुन्दरी के द्वारा बाहुबली को प्रतिबोध, तथा सम्राट भरत का वैराग्य आदि घटनाएँ जैन साहित्य की बहुत प्रसिद्ध और लोकप्रिय घटनाएँ रही हैं।

भगवान का शरीर केशरिया रंग का होने से सन्त कवि ने प्रस्तुत नाम से पुकारा है, और उपालम्भ के रूप में अपने हृदय की भक्ति प्रदर्शित की है।

१६ भगवान् नेमिनाथ और राजीमती

*

भगवान् नेमिनाथ का जीवन अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। छान्दोग्योपनिषद् में घोरआंगिरस के रूप में कृष्ण के गुरु

का नाम बताया गया है जो अहिंसा प्रेमी और पशुपालन के समर्थक थे। धर्मानन्द कोसाम्बी आदि विज्ञों का यह मंतव्य है कि भगवान् नेमिनाथ का ही अपर नाम घोरआंगिरस था।

वसुदेव और समुद्रविजय दोनों सहोदर थे। वसुदेव के पुत्र कृष्ण और समुद्रविजय के पुत्र नेमिनाथ थे। श्री कृष्ण ने नेमिनाथ के प्रबल पराक्रम से प्रभावित हो, महाराजा उग्रसेन की पुत्री तथा कंस की बहिन राजोमती के साथ पाणिग्रहण का निश्चय किया। बड़े ही उत्साह के साथ विवाह की तैयारियाँ हुईं, बरात ले नेमिनाथ पहुँचे, पर बरातियों के भोजन के लिए पशु एकत्रित किए हुए थे, उनके करुण-क्रन्दन को श्रवण कर नेमिनाथ का दयालु हृदय द्रवित हो गया, वे बिना विवाह किये ही पुनः लौट गये।

जब राजीमती ने यह सुना तो उसे अत्यधिक दुःख हुआ। माता, पिता और सहेलियों के द्वारा यह समझाने पर कि तू इतनी अधिक चिन्तित क्यों होती है, वे चले गये तो क्या हुआ, उनसे भी अधिक सुन्दर वर तेरे को मिलेंगे, वे तो काले थे आदि। पर राजीमती को उनकी वे बातें तनिक मात्र भी अच्छी नहीं लगीं। उसने स्पष्ट कहा—विवाह का बाह्य आचार भले ही न हुआ हो, किन्तु वे मेरे हृदय मन्दिर में विराज चुके हैं। मैं जीवन-पर्यन्त उन्हीं की उपासिका बनकर रहूंगी। तन से भले ही दूर रहूँ, पर मन रूपी भंवरा तो उनके चरण कमलों पर ही मंडराता रहेगा। बारह मास तक भगवान नेमिनाथ वर्षीदान देते रहे, तब

तक राजुल उनकी प्रतीक्षा करती रही। नाना प्रकार के संकल्प-विकल्प उद्बुद्ध होते रहे, जिन्हें कवियों ने बारह मासा के रूप में चित्रित किया है।

भगवान् नेमिनाथ के द्वारा प्रव्रज्या ग्रहण करने पर राजीमती ने भी प्रव्रज्या ग्रहण की।

एक बार राजीमती अपनी साथिनी साध्वियों के साथ गिरनार जा रही थी, तेज वर्षा से वह तरबतर हो गई, बचने का अन्य उपाय न देखकर वह सन्निकटवर्ती एक गुफा में चली गई, वस्त्र उतार कर ज्यों ही सुखाने लगी त्यों ही गुफा में ध्यानस्थ नेमिनाथ के लघुभ्राता रथनेमि की दृष्टि राजीमती के नग्न शरीर पर गिरी, वह साधना से विचलित हो गया। भोगों की अभ्यर्थना करने पर राजीमती ने उसे अच्छी तरह फटकारकर समझाया। राजीमती ने स्वयं के चरित्र की रक्षा ही नहीं की, किन्तु रथनेमि को पतित होते हुए भी बचा लिया, पुनः साधना में स्थिर किया। उत्तराध्ययन के बावीसवें अध्ययन में प्रस्तुत प्रसंग का बड़े ही मार्मिक ढंग से वर्णन किया है।

जो स्थान श्री कृष्ण के चरित्र में राधा का है वही स्थान भगवान् नेमिनाथ के चरित्र में राजीमती का है। अन्तर यही है कि कृष्ण का जीवन भोग प्रधान प्रवृत्ति मार्ग की ओर है तो नेमिनाथ का त्याग प्रधान निवृत्ति मार्ग की ओर।

१७ मुनिसुव्रत स्वामी

*

मुनिसुव्रत स्वामी का जन्म राजगृह नगर में हुआ। इनके पिता का नाम सुमित्र और माता का नाम पद्मावती था। जब भगवान् माता के उदर में थे तब माता ने अनेक श्रेष्ठ व्रतों का आचरण किया था। जिससे गुणनिष्पन्न नाम मुनिसुव्रत रखा था।

युवावस्था आने पर राज्य ऋद्धि को छोड़कर संयम लिया, ग्यारह महीने तक छद्मस्थावस्था में रहे, केवल ज्ञान प्राप्त कर, तीर्थ प्रवर्तन कर अन्त में एक हजार श्रमणों के साथ समेतशिखर पर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।

—त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र

१८ भगवान् पार्श्वनाथ

*

भगवान् पार्श्वनाथ ऐतिहासिक पुरुष हैं। ईस्वी पूर्व ८५० में उनका जन्म वाराणसी के राजा अश्वसेन के यहाँ हुआ. उनकी माता का नाम वामा देवी था।

भगवान् पार्श्वनाथ के पूर्व अज्ञान तप का बाहुल्य था
साधना के नाम पर नाना प्रकार के कष्ट-सहन किये जा
थे, जैसे तीक्ष्ण कांटों के समान लोहे की नुकीली कीलों
लेटना, चारों ओर आग लगाकर बीच में बैठना, एक ही
पर खड़े होकर आतापना लेना आदि। इन विविध प्रकार
काय क्लेशों को देखकर श्रद्धालु जन नत मस्तक हो जाते थे

एक बार राजकुमार पार्श्वनाथ नगर के बाहर घूमने
लिए गये, कमठ नामक तापस पंचाग्नि तप तप रहा थ
भगवान् ने देखा – एक सर्प लकड़े में जल रहा है—यहाँ
स्मरण रखना चाहिए कि श्वेताम्बर आचार्य-कृत ग्रन्थों
केवल नाग का ही उल्लेख है, पर दिगम्बरीय ग्रंथों में ना
नागिन युगल का उल्लेख है। भगवान ने तापस को समझा
और उनके सम्बन्ध में कहा, पर वह न माना, अन्त में जब ल
को अलग कर देखा गया तो वह स्तंभित हो गया। भगवान्
जब अज्ञान तप के सम्बन्ध में उससे कहा तो वह क्रुद्ध हो ग
और बोला– धर्म के सम्बन्ध में तुम्हारे को कुछ भी कहने
अधिकार नहीं है तुम राजपुत्र हो, अतः राज्य व्यवस्था क
ही तुम्हारा काम है।

प्रस्तुत संवाद से स्पष्ट परिज्ञान होता है कि उस युग
अज्ञान तप का आधिक्य था। भगवान् पार्श्वनाथ ने उस
परिष्कार किया।

भगवान् तीस वर्ष तक गृहस्थाश्रम में रहे। संयम ग्रहण करने के पश्चात् कमठ तापस जो आयु पूर्ण कर देव बना था उसके मन में भगवान् को ध्यानस्थ देखकर वैर उद्बुद्ध हुआ, भयंकर जल वर्षा की, भगवान् के नासाग्र तक पानी आ गया तथापि भगवान् ध्यान से विचलित नहीं हुए, अन्त में जिस नाग-नागिन को नमस्कार महामंत्र सुनाया था जिसके प्रभाव से वे धरणेन्द्र पद्मावती बने थे, वे सेवा में आते हैं, तथा उपसर्ग का परिहार करते हैं।

१९ सम्राट् भरत

*

सम्राट् भरत को कौन नहीं जानता ? वे भगवान् ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र थे, बड़े ही प्रतिभाशाली ! उनके नाम से ही प्रस्तुत देश का नाम भारतवर्ष प्रसिद्ध हुआ है।

जिस दिन भगवान् ऋषभदेव को केवलज्ञान उपलब्ध हुआ उसी दिन भरत की आयुधशाला में चक्ररत्न उत्पन्न हुआ। चक्ररत्न की एक सहस्र देव सेवा करते हैं।

सम्राट् भरत षट्खण्ड पर विजय वैजयन्ती फहराने के लिए अयोध्या से प्रस्थित होते हैं। चक्ररत्न पथ-प्रदर्शन का कार्य करता है।

नवीन सीमा में प्रवेश करने के पूर्व वे तीन दिन की तपस्या करते हैं, और तप के प्रभाव से वे निर्विघ्न सफलता प्राप्त करते हैं। षट्खण्ड की साधना करते समय उन्होंने १३ तेले किये।

सर्व प्रथम जम्बूद्वीप के पूर्व में स्थित मगध, दक्षिण में स्थित वरदाम, पश्चिम में स्थित प्रभास, एवं सिन्धु देवी, वैताढ्य और तिमिस्र गुफा पर विजय प्राप्त की। उसके पश्चात् चर्म-रत्न के द्वारा महान् सिन्धु नदी को पार कर सिंहल, बर्बर, अंग, चिलात (किरात), यवनद्वीप, आरबक, रोमक और अलसंड नामक देशों में प्रवेश किया। यहाँ पर पिक्खुर, कालमुख, एवं जोणक नामक म्लेच्छों पर और वैताढ्य पर्वत के दक्षिण में रहने वाले म्लेच्छों पर विजय की। दक्षिण-पश्चिम से सिन्धु सागर तक के प्रदेश और अन्त में अत्यन्त सुन्दर कच्छ देश को जीता। उसके पश्चात् तिमिस्रगुफा में प्रवेश किया और अपने सेनानायक को उसके दक्षिणी द्वार को उद्घाटन की आज्ञा दी, और उसके बाद उन्मग्नजला निमग्नजला नामक सरिताओं को पार किया और आवाड़ नामक किरातों को पराजित किया, ये किरात उत्तरार्ध भरत के निवासी थे और धन संपन्न, घमंडी, शक्ति सम्पन्न एवं नर राक्षस के समान थे। उसके बाद भरत ने क्षुद्र हिमवंत पर्वत को जीतकर, ऋषभकूट पर्वत पर नाम लिखकर वैताढ्य पर्वत के उत्तर की ओर चले, जहाँ विद्याधर नमि विनमि ने सुभद्रा नामक स्त्री रत्न भेंट किया। उसके पश्चात् गंगा पर विजय प्राप्त कर और गंगा नदी के पश्चिमी

तट पर अवस्थित खण्डप्रपात गुफा को सेनापति से खुलवाई। सम्राट् भरत को यहाँ पर नवनिधियाँ उपलब्ध हुईं।

इस प्रकार चौदह रत्नों से विभूषित हो भरत ६० हजार वर्षों के पश्चात् वनिता लौटे। और खूब उत्साह के साथ राज्याभिषेक हुआ।

एक बार सम्राट् भरत आरिशा के भव्य भवन में पहुँचे, अंगुली से अँगूठी गिर जाने से वह असुन्दर प्रतीत हुई, अन्य आभूषण उतारे। बाह्य सौन्दर्य से आन्तरिक सौन्दर्य में पहुँचते ही केवलज्ञान की प्राप्ति हुई।

—जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति ३।४१।७१

२० मृगापुत्र

*

मृगापुत्र सुग्रीव नगर के निवासी थे। उनके पिता का नाम बलभद्र और माता का नाम मृगा था। माता के नाम से ही उनका नामकरण किया गया।

युवावस्था प्राप्त होने पर एक बार वे राजप्रासाद के उन्नत गवाक्ष में बैठे हुए नगरावलोकन कर रहे थे कि एक मुनि को नीचे जाते हुए देखा, जातिस्मरण ज्ञान हुआ, पूर्वभव में जो श्रमण पर्याय पालन की थी उसका परिज्ञान हुआ।

जाति स्मरण ज्ञान से मृगापुत्र को संसार के पदार्थों का असली स्वरूप समझने के कारण विरक्ति हो गई। माता-पिता के द्वारा नाना प्रकार के भोगों के प्रलोभन देने पर भी मृगापुत्र का मानस तनिक भी विचलित नहीं हुआ, अपितु अपने अकाट्य तर्कों से भोगों का खण्डन किया और संयम-साधना का मण्डन किया। उनका प्रस्तुत सम्वाद प्रत्येक साधक के लिए पठनीय और मननीय है।

अन्त में मृगापुत्र ने उत्कृष्ट संयम की साधना कर केवल ज्ञान को प्राप्त कर मुक्ति का वरण किया।

— उत्तराध्ययन अ० १९ के आधार से

२९ अर्जुनमाली

❀

अर्जुनमाली राजगृह नगर का निवासी था, उसकी पत्नी का नाम बन्धुमती था, वह सुन्दर और सुशील थी। उसका अपना निजी बगीचा था, उसमें मुद्गरपाणि यक्ष का यक्षायतन था। अपनी कुल परम्परा के अनुसार वह प्रतिदिन यक्ष की अर्चना करता था।

राजगृह में एक ललित नामक गोष्ठी थी, उसके छहों सदस्य जो बहुत ही उच्छृंखल थे, वे एक दिन बगीचे में पहुँच गये। उस समय बन्धुमती फूल चुन रही थी और अर्जुनमाली यक्ष

भगवान् ने उसे दीक्षा दी। बेले-बेले की तपस्या कर, जनता द्वारा दी गई अनेक ताड़ना, तर्जना एवं त्रास को समभावपूर्वक सहन कर मुक्त हुआ।

—अन्तकृत्दशांग अ-६-सूत्र ९९-१२१

२२ मेघकुमार

*

मेघकुमार सम्राट श्रेणिक का पुत्र था। उसकी बहुत ही कोमल प्रकृति थी। एक बार भगवान् महावीर के उपदेश को श्रवण कर उसने दीक्षा ग्रहण की। लघुमुनि होने के नाते उसकी शैया सबके अंत में लगाई गई। रात्रि भर मुनियों के आवागमन से उसे नींद नहीं आई। चिन्तन बदला—"इतने समय तक ये मुनि मेरा सत्कार करते थे, पर दीक्षित होते ही ये मेरे को पैरों से कुचल रहे हैं। प्रातः प्रभु की आज्ञा लेकर घर चला जाऊँगा।"

प्रातः होते ही वह भगवान् के पास पहुँचा। घट-घट के भाव जानने वाले भगवान् ने कहा- क्या मेघ! तू इतने से ही कष्ट से घबरा गया! जरा स्मरण कर, इस भव के पूर्व तृतीय भव में जब तू हाथी था, तब वन में भयंकर आग लगी थी, तेरा स्वनिर्मित मण्डप वनचरों से भर चुका था, तुम भी एक ओर खड़े हो गये थे। शरीर को खुजलाने के लिए ज्योंही तुमने पैर ऊँचा किया कि एक शशक तुम्हारे पैर के नीचे आकर बैठ गया। कहीं वह मर न जाये इसलिए तुम तीन पैरों पर ही खड़े रहे। लम्बे

समय तक तीन पैरों पर खड़े रहने के कारण तुम भूमि पर गिर पड़े। याद है यह घटना? एक शशक पर दया करने के कारण तुम वहाँ से मरकर राजपुत्र हुए। अब जरा-से कष्ट से तुम घबरा रहे हो।"

भगवान् की वाणी से मेघ अपनी साधना में स्थिर हो गये।

—ज्ञाताधर्म-कथा १।१

—त्रिषष्टि शलाकापुरुष-चरित्र १०।६।३६२-४०६।

२३ पाण्डव

*

युधिष्ठिर (धर्मराज) भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव, ये पाँचों भाई बड़े ही पराक्रमी थे। इनके पिता का नाम पांडुराजा था और माता का नाम कुन्ता था और पत्नी का नाम द्रौपदी था। ये हस्तिनापुर के अधिपति थे। परन्तु श्रीकृष्ण के एक बार अप्रसन्न हो जाने पर इन्होंने दक्षिण दिशा के समुद्र के किनारे पांडुमथुरा बसाई और वहाँ रहने लगे।

एक बार धर्मघोष अनगार वहां पर पधारे, उनके उपदेश को सुनकर वैराग्य हुआ, अपने ज्येष्ठ पुत्र पाण्डुसेन को राज्य देकर द्रौपदी सहित पाँचों ने दीक्षा ग्रहण की। उत्कृष्ट तप की आराधना करने लगे। गुरु की आज्ञा लेकर पाँचों पाण्डव भग-

वान नेमिनाथ के दर्शन के लिए प्रस्थित हुए। विहार करते हुए वे हस्तिकल्प नगर में आये। मासखमण के पारणे के लिए ज्योंही वे नगर में गये त्योंही सुना "कि भगवान नेमिनाथ एक महीने के संथारे से, गिरनार पर्वत पर पाँच सौ छत्तीस श्रमणों सहित मोक्ष पधारे हैं।" ये समाचार सुनते ही पाँचों अनगार विना पारणा किये ही शत्रुञ्जय पर्वत पर गये, दो मास के संथारे के पश्चात् केवलज्ञान केवलदर्शन प्राप्त कर मोक्ष गये।

—ज्ञातासूत्र, अ—१६

२४ अनाथी मुनि

*

अनाथी मुनि कौशम्बी के निवासी थे। इनके पिता का नाम धनसंचय था। एकबार इनके नेत्रों में असह्य वेदना हुई। विपुल दाह ज्वर से सारा शरीर जलने लगा। कटिभाग, हृदय और सिर में भी भयंकर दर्द उत्पन्न हो गया। वैद्यों ने चतुष्पाद चिकित्सा की, पर सफलता न मिली। माता का वात्सल्य, पिता का प्रेम, पत्नी का स्नेह, भाई और बन्धुओं का प्यार भी दर्द कम न कर सका।

चिन्तन बदला,—"यदि मैं इस दारुण वेदना से मुक्त हो जाऊँ तो प्रव्रज्या ग्रहण कर लूँगा।" इसी प्रकार चिन्तन करते-करते नींद आगई, पीड़ा मिट गई, अनुमति ले प्रव्रज्या ग्रहण की।

इन्होंने ही सम्राट् श्रेणिक को मण्डिकुक्ष उद्यान में प्रति-
ोध देकर जैनधर्मावलम्बी बनाया था।

—उत्तराध्ययन सूत्र अ०—२०

२५ अम्बड़ के शिष्य

*

अम्बड परिव्राजक भगवान् महावीर का परम भक्त था।
रिव्राजक की वेश-भूषा और आचार का पालन करने पर भी
ह श्रावकोचित व्रतों का भी पालन करता था। उसके ७००
शिष्य थे।

एक बार वे सात सौ शिष्य भीष्म-ग्रीष्म में कांपिल्यपुर
गर से पुरिमताल नगर की ओर प्रस्थित हुए। भयंकर निर्जन
टवी में पहुँचे, साथ में लाया हुआ पानी समाप्त हो गया।
नका यह नियम था "कि बिना दूसरे के दिये अदत्त वस्तु हम
ोई भी ग्रहण न करेंगे।" अटवी में चारों ओर जलदाता की
न्वेषणा की, पर कोई भी जलदाता नहीं मिला। इसलिए
न्होंने गंगा के किनारे संथारा संलेखना कर आयु पूर्ण की, पर
किसी ने भी अदत्त जल ग्रहण नहीं किया। प्रतिज्ञा पर पूर्ण
ढ़ रहे।

— औपपातिक सूत्र—अम्बड वर्णन

सगर चक्रवर्ती

*

सगर द्वितीय चक्रवर्ती हुए हैं। सम्राट् भरत की तरह इन्होंने भी षट्खण्ड की साधना की थी। इनके अनेक पुत्र थे। सबसे बड़े पुत्र का नाम जण्हुकुमार था। पिता की आज्ञा से वह अपने लघु भ्राताओं के साथ घूमने के लिए चला। अष्टापद पर्वत के चारों ओर अपने भाइयों के साथ खाई खोदने लगा। दण्डरत्न की सहायता से वह इतनी गहरी खाई खोद गया कि पृथ्वी के नीचे रहने वाले नागकुमार के भवनों को भी क्षति पहुँचने लगी। तो वे अपने राजा ज्वलनप्रभ के पास गये। ज्वलनप्रभ अत्यन्त क्रुद्ध हो सगर के पुत्रों के पास गया, किन्तु जण्हुकुमार के अनुनय विनय से वह शान्त होकर चला गया। जण्हुकुमार ने सोचा—जब खाई तैयार हो गई है, तब यह बिना पानी के कैसे अच्छी लगेगी? अतः दण्डरत्न के सहारे गंगा से उसमें नहर लाकर डाली। खाई जल से भरगई और वह जल नागोंके घरों में प्रवेश कर गया। ज्वलनप्रभ को इस समय अत्यधिक क्रोध आया। उसने सगर के पुत्रों के पास विषयुक्त बड़े-बड़े फणधारी सर्प भेजे, जिससे वे सभी वहीं पर जलकर भस्म हो गये।[1]

जब सगर चक्रवर्ती को पुत्रों के इस प्रकार निधन का वृत्त ज्ञात हुआ तब संसार की निस्सारता समझ दीक्षा ग्रहण कर आत्म-कल्याण किया।

—उत्तराध्ययन टीका अ. १९ पृ० २३३ : शान्तिसूरि
—वसुदेवहिंडी पृ० ३००।३०४

---

१ तुलना कीजिए महाभारत ३।१०५ से तथा रामायण १।५८ से

२७ उद्रायण राजा

*

श्रमण भगवान महावीर जिस समय अवनीतल को पावन कर रहे थे, उस समय सिन्धु नदी के सन्निकट सौवीर नामक देश का अधिपति उद्रायण राजा था। उसकी राजधानी वीतभय थी। वह भगवान महावीर का उपासक था। वैशाली के राजा चेटक की पुत्री प्रभावती उसकी पत्नी थी।

एक बार भगवान् वीतभय नगर में पधारे, राजा उद्रायण के मन में प्रभु के प्रवचन को श्रवण कर दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा हुई। राजा ने विचार किया – यदि पुत्र अभीचिकुमार को राज दूँगा तो वह राज-सत्ता के मोह में कहीं अपने जीवन को विकृत न बना दे, एतदर्थ अपने भाणेज केशीकुमार को राज्य दे, स्वयं प्रव्रजित हुए। पर, राजा ने यह बात पुत्र को नहीं कही और न पुत्र ने ही राजा से इस सम्बन्ध में स्पष्टीकरण किया।

उद्रायण मुनि उग्र तप कर कर्मों को नष्ट कर मुक्त हुए। पर अभीचिकुमार के मन में वह शल्य बना रहा, वह उद्रायण के अतिरिक्त सभी से क्षमत क्षमापना करता। किन्तु एक उद्रायण को छोड़ने से अनन्त उद्रायण नाम के सिद्ध टल जाते, इस वैर-भाव से वह वहाँ से आयु पूर्णकर प्रथम नरक के पाथड़े में जहाँ असुरकुमार देव रहते है वहाँ उत्पन्न हुआ, उसे अपनी

भूल ज्ञात हुई, पश्चात्ताप करने से वह भविष्य में एक भव कर मुक्त बनेगा।

—भगवती सूत्र शतक १३, उद्दे० ६।

—उत्तराध्ययन—भावविजयगणि टीका अ० १८।६।३८०—१

२८ बलभद्र मुनि

*

बलभद्र, कृष्ण वासुदेव के ज्येष्ठ भ्राता थे। श्रीकृष्ण और बलभद्र में प्रगाढ़ स्नेह था। द्वारिका नगरी के विनाश हो जाने पर दोनों भाई घूमते हुए कौशाम्बी के वन में पहुँचे। श्रीकृष्ण को प्यास लगी। बलभद्र पानी लेने गये, उस समय कृष्ण पैर पर पैर रखकर सोए हुए थे, पैर में पद्म चमक रहा था, उसे जराकुँवर ने मृगनेत्र समझकर बाण फेंका, जिसके भयंकर जहर से श्रीकृष्ण मृत्यु को प्राप्त हुए।

बलभद्र पानी लेकर आये, किन्तु श्रीकृष्ण के न बोलने पर मनाने को अनेक प्रयत्न किये, पर वे सारे प्रयत्न जब व्यर्थ हो गये तो बलभद्र भाई के स्नेह से पागल हो गए, छह महीने तक भाई के मृत कलेवर को कंधे पर लेकर जंगल में घूमते रहे। देवों ने समझाने के लिए अनेक दृश्य दिखलाये. अन्त में विवेक जागृत हुआ, भाई का अग्नि-संस्कार कर स्वयं ने प्रव्रज्या ग्रहण की।

२९ राजा उद्रायण व चण्डप्रद्योत

*

वीतभय पाटण का अधिपति उद्रायण था। जो एक कुशल योद्धा था और अपनी आन बान का पक्का था। उसकी एक दासी थी जो रूप में अप्सरा से भी महान् थी।

उस समय उज्जयिनी का राजा प्रद्योत था। वह अपने प्रचण्ड स्वभाव के कारण चण्डप्रद्योत के नाम से विख्यात था।[1] उसने अनेक युद्ध लडे थे, जव कभी भी वह किसी के पास कोई सुन्दर वस्तु देखता तो उसे बिना प्राप्त किये उसे चैन नहीं पड़ता था। जब उसने दासी के रूप के बखाण सुने तो वह उसे उठाकर उज्जयिनी ले गया।

राजा उद्रायण ने उसे लौटाने का संदेश भिजवाया, पर जब उसे चण्डप्रद्योत ने सुनी अनसुनी कर दी तब उद्रायण ने अपने दस सामन्तों के साथ उस पर चढाई की। घमासान युद्ध हुआ। प्रद्योत हार गया, और उद्रायण की जीत हुई। एक पट्ट पर "दासीपति" लिखकर प्रद्योत के मस्तक पर लगाया गया। प्रद्योत को बन्दी बनाकर वीतभय की ओर प्रस्थित हुए।

मार्ग में पर्युषण-पर्व प्रारम्भ हुआ। राजा उद्रायण ने पौषध किया, रसोइये ने चण्ड प्रद्योत से पूछा - आपके लिए क्या भोजन बनाऊँ?

—महावग्ग ८।६।१९ पृ० २९५ में भी उसे चण्ड कहा गया है।

चण्ड प्रद्योत नें पूछा—क्या आज राजा उद्रायण भोजन नहीं करेंगे !

रसोइया—नहीं, महाराज को पर्युषण का पौषध है।

चण्ड प्रद्योत नें सोचा—कहीं मुझे जहर देकर मार न दें एतदर्थ उसनें कहा—मैं भी आज भोजन नहीं करूँगा। क्योंकि मेरे पिताजी भी श्रावक थे।

क्षमा याचना के अवसर पर प्रद्योत ने कहा—यह कैसी क्षमा याचना है ? उसी क्षण उद्रायण ने बंधनों से उसे मुक्त कर दिया। दासी का विवाह कर दिया तथा मस्तक पर दासीपति के पट्ट को हटाकर उसका मस्तक स्वर्ण पट्ट से विभूषित कर दिया।

यह है क्षमा का आदर्श, जिसके लिए युद्ध हुआ था तथा जो राजा की पकड़ की बात थी उसे भी उसने छोडने में संकोच अनुभव नहीं किया।

—उत्तराध्ययन टीका १८ पृ० २५२

—आवश्यक चूर्णि पृ० ४००

—भरतेश्वर बाहुबली वृत्ति, भाषान्तर पृ० १८२

३० सासु और जमाई

*

एक बुढ़िया थी, बहुत ही कंजूस। उसके एक लड़की थी उसका उसने विवाह कर दिया। पर कभी भी बुढ़िया अपने

जमाई को बुलाती नहीं थी। एक दिन वर्षों के पश्चात् किसी कार्यवश जमाई वहाँ पहुँच गया। सासु ने जमाई के लिए भोजन की तैयारी की, फीकी थूली वनाई। सासु ने विचार किया कि ऐसा उपाय करूँ जिससे मेरी शोभा भी वनी रहे और जमाई भी समझे कि सासु वड़ी उदार है, एतदर्थ घी के बर्तन की नाली में कपास ठूंस दिया। जमाई को थूली परोस दी और घी का बर्तन पास में ही रख स्वयं गुड़ लेने के लिए अन्दर के मकान में गई, सासु की चतुराई जमाई जान गया उसने एक शलाका डाल कर कपासिये को नाली में से बाहर निकाल दिया। सासु आई। उसे पूर्ण विश्वास था कि घी के बर्तन की नाली का मुंह बन्द कर रखा है अतः उसने मुंह फेर कर ज्यों ही घी परोसने लगी कि सम्पूर्ण घी जमाई की थाली में आ गया।

जब सासु ने देखा कि सारा घी चला गया है तो उसका दिल बैठ गया। घी को खाने की भावना से उसने जमाई को कहा—जमाई जी आपका और मेरा कब काम पड़ता है, क्या ही अच्छा हो हम दोनों साथ में ही बैठकर भोजन करें, क्योंकि न कभी आप होली के दिन आये, न कभी दिवाली के दिन ही आये और न कभी तीज आदि त्योहारों पर ही आये, इस प्रकार बातें बनाती हुई वह अपनी ओर घी को खींचती हुई खाने लगी।

जमाई सासु के हृदय की वात को समझ गया और उसने उसी समय अपना सारा हाथ थूली में डाला और बोला—

ये सारे त्यौहार इधर-उधर जा रहे हैं इसलिए इन सभी को मथ दूं, मथ कर थाली को हाथ में लेकर घी वाली वह सारी थूली पी गया, सासु मुंह लटकाये देखती रही।

प्रस्तुत लोक-कथा का सारांश है कि इस प्रकार यदि एक दूसरे के प्रति कपट रख कर ऊपर से मीठे बनकर क्षमा याचना करते रहे तो उससे कुछ भी लाभ नहीं।

३१ कुम्हार का मिच्छामिदुक्कडं

*

एक आचार्य एक बार विहार करते हुए किसी गाँव में पहुँचे और कुम्हार के पडौस में ठहरे। आचार्य का एक लघु शिष्य बड़ा चंचल प्रकृति का था। कुम्हार चाक पर से ज्यों ही पात्र उतार कर भूमि पर रखता त्यों ही वह शिष्य कङ्कर का निशाना लगाता और उसे तोड़ देता। कुम्हार ने कहा तो वह "मिच्छामिदुक्कड़ं" लेने लगा। अनेक बार मना करने पर भी न माना और मिच्छामिदुक्कडं का उच्चारण करता रहा। अन्त में कुम्हार को आवेश आ गया, उसने एक कङ्कर उठाया और उस लघु शिष्य के कान में रख कर दबाया। दर्द से वह चिल्ला उठा। कुम्हार भी उसकी तरह जोर-जोर से दबाता रहा और मिच्छामिदुक्कडं लेता रहा। अब शिष्य को अपनी भूल ज्ञात हुई।

जब तक मन में पापों के प्रतिपश्चात्ताप न हो वहाँ तक केवल वाणी का मिच्छामिदुक्कडं कुम्भार का मिच्छामि दुक्कडं है।

—आवश्यक चूर्णि 'जिनदास महत्तर'

३२ शंख पोखली

*

भगवान् महावीर का श्रावस्ती में आगमन हुआ। शंख और पुष्कली भगवान् को वंदन करने गये। भगवान् के पावन प्रवचन पीयूष का पानकर वे सभी पुनः श्रावस्ती की ओर मुडे। शंख ने पुष्कली आदि साथियों से कहा—देवानुप्रियो! आज विविध अन्न पान, खाद्य और स्वाद्य तैयार करो। हम सभी सहभोजन कर आज का पक्षिक पोषध करेंगे।

शंख अपने घर पर आये, विचारों में परिवर्तन हुआ, कि 'आज भोजन कर पाक्षिक पौषध करना मेरे लिए श्रेयस्कर नहीं है, मेरे लिए श्रेयस्कर यही है पौषधशाला में जाऊं आहार का त्याग कर, मणि, सुवर्ण, माला विलेपन, आदि शारीरिक सत्कार वर्जन कर, अब्रह्मचर्य वर्जन, और सावद्य व्यापारों का वर्जन कर आत्म भाव में विहरण करूं।"

शंख ने इस चिन्तन के साथ उत्पला धर्मपत्नी की आज्ञा लेकर पौषध किया। उधर पुष्कली आदि प्रतीक्षा करते रहे,

प्रतीक्षा के क्षण बहुत ही लंबे होते हैं। राह देखते देखते उनकी पलकें भारी हो गईं। अन्य साथियों की प्रेरणा से पुष्कली शंख के यहाँ पर आये, उत्पला श्राविका को नमस्कार कर शंख के सम्बन्ध में पूछा। पौषधशाला में आकर शंख से कहा—भोजन तैयार है।

प्रत्युत्तर में शंख ने कहा—मैंने तो पाक्षिक पोषध कर लिया है, मैं संकल्प बद्ध हूँ और आप स्वतन्त्र हैं।

यह बात सुनकर पुष्कली आदि के मन में खिन्नता हुई। वे सभी शंख के इस व्यवहार की निन्दा करने लगे।

प्रातः होने पर शंख श्रावक पौषध सहित ही भगवान् के दर्शन के लिए पहुँचा, और उधर पुष्कली आदि श्रावक भी। भगवान् ने अन्य श्रावकों को सम्बोधित कर कहा—तुम शंख श्रावक की निन्दा गर्हा न करो। शंख श्रावक प्रियधर्मी और दृढ़धर्मी है।

यह सुनकर सभी श्रावकों ने शंख श्रावक से क्षमा याचना की।

— भगवती सूत्र श. १२। उद्दे. १

३३ गणधर गौतम की क्षमा

*

गणधर गौतम भिक्षा के लिए नगर में घूम रहे थे। भिक्षा लेकर लौटते समय नगर में उन्होंने सुना—श्रमण भगवान् महावीर

जब तक मन में पापों के प्रतिपश्चात्ताप न हो वहाँ तक केवल वाणी का मिच्छामिदुक्कडं कुम्भार का मिच्छामि दुक्कडं है।

—आवश्यक चूर्णि 'जिनदास महत्तर'

३२ शंख पोखली

*

भगवान् महावीर का श्रावस्ती में आगमन हुआ। शंख और पुष्कली भगवान् को वंदन करने गये। भगवान् के पावन प्रवचन पीयूष का पानकर वे सभी पुनः श्रावस्ती की ओर मुडे। शंख ने पुष्कली आदि साथियों से कहा—देवानुप्रियो! आज विविध अन्न पान, खाद्य और स्वाद्य तैयार करो। हम सभी सहभोजन कर आज का पक्षिक पोषध करेंगे।

शंख अपने घर पर आये, विचारों में परिवर्तन हुआ, कि 'आज भोजन कर पाक्षिक पौषध करना मेरे लिए श्रेयस्कर नहीं है, मेरे लिए श्रेयस्कर यही है पौषधशाला में जाऊं आहार का त्याग कर, मणि, सुवर्ण, माला विलेपन, आदि शारीरिक सत्कार वर्जन कर, अब्रह्मचर्य वर्जन, और सावद्य व्यापारों का वर्जन कर आत्म भाव में विहरण करूं।"

शंख ने इस चिन्तन के साथ उत्पला धर्मपत्नी की आज्ञा लेकर पौषध किया। उधर पुष्कली आदि प्रतीक्षा करते रहे,

प्रतीक्षा के क्षण बहुत ही लंबे होते हैं। राह देखते देखते उनकी पलकें भारी हो गईं। अन्य साथियों की प्रेरणा से पुष्कली शंख के यहाँ पर आये, उत्पला श्राविका को नमस्कार कर शंख के सम्बन्ध में पूछा। पौषधशाला में आकर शंख से कहा—भोजन तैयार है।

प्रत्युत्तर में शंख ने कहा—मैंने तो पाक्षिक पोषध कर लिया है, मैं संकल्प बद्ध हूँ और आप स्वतन्त्र हैं।

यह बात सुनकर पुष्कली आदि के मन में खिन्नता हुई। वे सभी शंख के इस व्यवहार की निन्दा करने लगे।

प्रातः होने पर शंख श्रावक पौषध सहित ही भगवान् के दर्शन के लिए पहुँचा, और उधर पुष्कली आदि श्रावक भी। भगवान् ने अन्य श्रावकों को सम्बोधित कर कहा—तुम शंख श्रावक की निन्दा गर्हा न करो। शंख श्रावक प्रियधर्मी और दृढ़धर्मी है।

यह सुनकर सभी श्रावकों ने शंख श्रावक से क्षमा याचना की।

— भगवती सूत्र श. १२। उद्दे. १

३३ गणधर गौतम की क्षमा

*

गणधर गौतम भिक्षा के लिए नगर में घूम रहे थे। भिक्षा लेकर लौटते समय नगर में उन्होंने सुना—श्रमण भगवान् महावीर

जब तक मन में पापों के प्रतिपश्चात्ताप न हो वहाँ तक केवल वाणी का मिच्छामिदुक्कडं कुम्भार का मिच्छामि दुक्कडं है।

—आवश्यक चूर्णि 'जिनदास महत्तर'

३२ शंख पोखली

*

भगवान् महावीर का श्रावस्ती में आगमन हुआ। शंख और पुष्कली भगवान् को वंदन करने गये। भगवान् के पावन प्रवचन पीयूष का पानकर वे सभी पुनः श्रावस्ती की ओर मुडे। शंख ने पुष्कली आदि साथियों से कहा—देवानुप्रियो ! आज विविध अन्न पान, खाद्य और स्वाद्य तैयार करो। हम सभी सहभोजन कर आज का पक्षिक पोषध करेंगे।

शंख अपने घर पर आये, विचारों में परिवर्तन हुआ, कि 'आज भोजन कर पाक्षिक पौषध करना मेरे लिए श्रेयस्कर नहीं है, मेरे लिए श्रेयस्कर यही है पौषधशाला में जाऊं आहार का त्याग कर, मणि, सुवर्ण, माला विलेपन, आदि शारीरिक सत्कार वर्जन कर, अब्रह्मचर्य वर्जन, और सावद्य व्यापारों का वर्जन कर आत्म भाव में विहरण करूं।"

शंख ने इस चिन्तन के साथ उत्पला धर्मपत्नी की आज्ञा लेकर पौषध किया। उधर पुष्कली आदि प्रतीक्षा करते रहे,

प्रतीक्षा के क्षण बहुत ही लंबे होते हैं। राह देखते देखते उनकी पलकें भारी हो गईं। अन्य साथियों की प्रेरणा से पुष्कली शंख के यहाँ पर आये, उत्पला श्राविका को नमस्कार कर शंख के सम्बन्ध में पूछा। पौषधशाला में आकर शंख से कहा—भोजन तैयार है।

प्रत्युत्तर में शंख ने कहा—मैंने तो पाक्षिक पोषध कर लिया है, मैं संकल्प बद्ध हूँ और आप स्वतन्त्र हैं।

यह बात सुनकर पुष्कली आदि के मन में खिन्नता हुई। वे सभी शंख के इस व्यवहार की निन्दा करने लगे।

प्रातः होने पर शंख श्रावक पौषध सहित ही भगवान् के दर्शन के लिए पहुँचा, और उधर पुष्कली आदि श्रावक भी। भगवान् ने अन्य श्रावकों को सम्बोधित कर कहा—तुम शंख श्रावक की निन्दा गर्हा न करो। शंख श्रावक प्रियधर्मी और दृढ़धर्मी है।

यह सुनकर सभी श्रावकों ने शंख श्रावक से क्षमा याचना की।

— भगवती सूत्र श. १२। उद्दे. १

३३ गणधर गौतम की क्षमा

*

गणधर गौतम भिक्षा के लिए नगर में घूम रहे थे। भिक्षा लेकर लौटते समय नगर में उन्होंने सुना—श्रमण भगवान् महावीर

का परम भक्त श्रमणोपासक आनन्द जीवन की अन्तिम साधना कर रहा है। गौतम आनन्द को दर्शन देने के लिए पहुँचे। आनन्द भगवान् गौतम के दर्शन कर आनन्द विभोर हो गया।

आनन्द ने निवेदन किया—प्रभो क्या गृहस्थ को अवधिज्ञान हो सकता है ?

गौतम—हाँ आनन्द ! हो सकता है।

आनन्द—प्रभो ! मुझे भी अवधिज्ञान हुआ है, मैं चारों दिशाओं में इतना देख सकता हूँ।

गौतम— आनन्द। गृहस्थ को अवधिज्ञान हो सकता है, पर वह इतना क्षेत्र नहीं देख सकता। अतः तुम आलोचना करो और प्रायश्चित्त लो।

आनन्द ने निवेदन किया—भगवन् ! क्या जिन प्रवचन में सत्य, तात्त्विक, तथ्य और सद्भूत विषयों की भी आलोचना होती है ?

गौतम - नहीं होती ! तो फिर भगवन् ! आपको ही आलोचना करना चाहिए।

गौतम सीधे ही भगवान् के पास आये, भगवान् ने आनन्द के कथन का समर्थन किया, और गौतम से कहा—तुम जाओ आनन्द से खमाओ। प्रभु की आज्ञा से गौतम उलटे पैरों लौटे। आनन्द से क्षमा याचना की।

—उपाशक दशांग—१।

धिक्कार है मुझे ! भात में घी नहीं था इन्होंने घी डाल दिया। मैं कैसा हूं जो एक उपवास नहीं कर सका। वह धर्म ध्यान से शुक्ल ध्यान में पहुंचा, क्षपक श्रेणी चढ़कर चारों कर्मों को नष्ट कर केवलज्ञानी बन गया।

बड़े-बड़े तपस्वी जिन्हें तप का अभिमान था वे देखते ही [illegible] उन्हें भी अपनी भूल ज्ञात हुई और पश्चात्ताप करने [illegible] ज्ञात हुआ कि बाह्य तप से भी आन्तरिक तप का [illegible]रा महत्व है। क्षमा का महत्व समझ में आया, भाव [illegible] होते [illegible]लज्ञान उत्पन्न हो गया।

—उपदेश प्रासाद स्तंभ ३।४१

तप का बड़ा घमंड था, अतः नित्य भोजी "कूरगडुक" का सदा उपहास किया करते थे। पर 'कूरगडुक' सदा यही सोचता—क्या करूं, मैं कैसा हूं, और ये कैसे महान् हैं?

एक दिन शासन देवी आई, उसने सर्व प्रथम एकान्त में बैठे हुए 'कूरगडुक' को नमस्कार किया! देवी के इस व्यवहार को देखकर सन्तों ने कहा—देवानुप्रिये! देवी होकर के भी तुम ऐसी भूल कर रही हो। उग्र तपस्वियों को छोड़कर नित्य-भोजी को वन्दन कर रही हो?

देवी ने कहा—मैं भ्रम में नहीं हूँ, मैंने एक घोरतपस्वो को नमस्कार किया है, देखिए, सातवें दिन ये केवलज्ञान प्राप्त करेंगे। सभी मुनि, आचार्य चकित थे, पर कूरगडुक तो सदा की भाँति शान्त था।

सातवें दिन बहुत बड़ा पर्व था। सभी छोटे-बड़े सन्तों के उपवास थे। पर 'कूरगडुक' भूख न सहन करने के कारण गुरु की आज्ञा से भिक्षा लेकर आया। साधु मर्यादा के कारण सभी को उसने ग्रहण करने की प्रार्थना की, पर सभी ने उस पर तीखे व्यंग बाण कसे और एक तपस्वी ने तो क्रोध में आकर कहा—अरे, तुझे शर्म नहीं आती, पर्व के दिन भी उपवास नहीं कर सका, और हमें लाकर भोजन दिखा रहा है? थू-थू अधम कहीं का चला जा यहाँ से! कहते-कहते मुंह से थूक उछलकर उस भात में गिर पड़ा।

कूरगडुक ने चिन्तन किया—धन्य है तपस्वीराज को!

धिक्कार है मुझे ! भात में घी नहीं था इन्होंने घी डाल दिया। मैं कैसा हूं जो एक उपवास नहीं कर सका। वह धर्म ध्यान से शुक्ल ध्यान में पहुंचा, क्षपक श्रेणी चढ़कर चारों कर्मों को नष्ट कर केवलज्ञानी बन गया।

वड़े-बड़े तपस्वी जिन्हें तप का अभिमान था वे देखते ही रह गये, उन्हें भी अपनी भूल ज्ञात हुई और पश्चात्ताप करने लगे, उन्हें ज्ञात हुआ कि बाह्य तप से भी आन्तरिक तप का कितना गहरा महत्व है। क्षमा का महत्व समझ में आया, भाव की विशुद्धि होते ही केवलज्ञान उत्पन्न हो गया।

—उपदेश प्रासाद स्तंभ ३।४१

३५ बाहुबली

*

वाहुबली भगवान् ऋषभदेव के पुत्र और सम्राट् भरत के लघुभ्राता थे। अतुलबली ! जिनके बल के सामने चक्रवर्ती भरत का बल भी फीका पड़ गया था।

बाहुवली को भरत के प्रतिज्ञा भंग करने पर रोष आया। और मदोन्मत्त गजराज की तरह मुष्टि उठाकर चक्रवर्ती की ओर लपके, पर दूसरे ही क्षण वे रुके, जो मुष्टि भरत पर लगाने की थी उसे अपने ही शिर पर लगाकर पंच मुष्टि लोच कर दिया। रणक्षेत्र विजेता वाहुबली आत्म-विजेता बन गये।

भगवान् ऋषभदेव के चरणों में पहुंचने के लिए कदम बढ़े, पर दूसरे ही क्षण भ्राताओं को नमन करने की बात स्मरण में आते ही उनके पाँव रुक गये, और ध्यान मुद्रा में वहीं पर खड़े हो गये। बिना केवलज्ञान लिये मैं भगवान् के चरणों में नहीं पहुचूँगा, इसी अभिमान के वश !

आंधी और तूफान आये, गर्मी और सर्दी आयी, वर्षा भी बरसी, पर बाहुबली न हिले न डुले, शरीर पर लताएं चढ़ गईं। मस्तक पर पक्षियों ने घोंसले बना दिये, पर वह मेरु पर्वत की तरह अचल और अडोल रहा। एक वर्ष का समय पूरा हो गया।

भगवान् ऋषभदेव ने देखा–बिना अभिमान का शल्य निकले केवलज्ञान नहीं होगा। प्रभु ने उद्बोधन के लिए ब्राह्मी और सुन्दरी को भेजा, भाई के अविचल ध्यान को देखकर ब्राह्मी और सुन्दरी का सिर झुक गया। फिर एक मधुर स्वर गूंज उठा—बन्धु ! हाथी से नीचे उतरो ! कब से गज पर आरूढ़ हो ? क्या कभी हाथी पर चढ़ने वाले को ज्ञान हुआ है ?

बाहुबली ने बहिनों के परिचित स्वर को सुनकर विचार किया, ये क्या कह रही हैं। श्रमणियाँ तो कभी झूठ नहीं बोलती, हाँ स्मरण आया, अभिमान के गज पर चढ़ा हूं। उस हाथी पर चढ़ने वाले को तो मुक्ति हो सकती है, पर अभिमान के हाथी पर चढ़ने वाले को नहीं। जन्म और देह की ज्येष्ठता नहीं, साधना की ज्येष्ठता ही वस्तुतः श्रेष्ठ है। ज्यों ही गुण

ज्येष्ठ भाइयों को नमन करने के लिए कदम उठा त्यों ही केवल ज्ञान से आत्मा जगमगा उठा।

—त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १।४-५
—कथा कोष प्रकरण कथा ६, जिनेश्वर सूरि

३६ महाशतक की क्षमा

*

महाशतक राजगृह के निवासी थे। रेवती आदि उनकी तेरह पत्नियाँ थी। भगवान् महावीर के उपदेश से महाशतक ने श्रावकव्रत ग्रहण किये।

एक दिन रेवती ने अपनी छः सपत्नियों को विषप्रयोग के द्वारा मार डाला। वह मांस लोलुपी थी, अतः पितृगृह से मांस मंगाकर उपभोग करती।

अपने ज्येष्ठ पुत्र को गृह कार्य संभलाकर महाशतक धर्म साधना करता। एक दिन काम विह्वला रेवती महाशतक के पास आई, भोगों की अभ्यर्थना करने लगी, तब अवधिज्ञानी महाशतक ने कहा—रेवती! तू सात दिनों के अन्दर अलसक (विषूचिका) रोग से संत्रस्त हो असमाधि में मृत्यु को प्राप्तकर रत्नप्रभा पृथ्वी में अच्युतनरक में उत्पन्न होगी।

यह सुन रेवती भय से कांपने लगी। भगवान् महावीर उस समय राजगृह पधारे। गौतम को कहा—जाकर महाशतक

से कहो—कि तुमने जो रेवती को सत्य कहा, वह कर्कश था, अतः ऐसा कथन तुम्हारे लिए योग्य नहीं एतदर्थ उसकी आलोचना कर प्रायश्चित ग्रहण करो।

महावीर के सन्देश को सुनकर उसी क्षण महाशतक ने रेवती को खमाया। पापों की आलोचना कर प्रायश्चित ग्रहण कर जीवन को विशुद्ध बनाया।

—उपाशकदशांग – अ. १०

३७ चन्दनबाला और मृगावती

*

एक बार श्रमण भगवान् महावीर कौशाम्बी पधारे, भगवान् के दर्शन हेतु सूर्य और चन्द्र ये दोनों अपने मूल रूप से आये विमान सहित।

चन्दनबाला और मृगावती प्रभृति साध्वी भी भगवान् के दर्शन हेतु समवसरण में पहुँची। चन्दनबाला तो समय होते ही चली गई और मृगावती को प्रकाश की अधिकता के कारण समय ज्ञात नहीं हो सका, वह समवसरण में ही बैठी रही। बहुत समय के पश्चात् जब वह स्थान पर पहुँची तब तक बहुत अंधेरा हो चुका था। सभी साध्वियां प्रतिक्रमण आदि क्रियाओं से निवृत हो चुकी थी। विलम्ब से पहुँचने के कारण चन्दनबाला ने उसे उपालम्भ दिया। उसे अपनी भूल ज्ञात

हुई। क्षमा मांगी। चन्दनबाला आदि को नींद आगई, पर मृगावती अपनी भूलों पर विचार करने लगी। अशुभ ध्यान को छोड़कर शुभ ध्यान में प्रवेश किया। घनघाती कर्मों को नष्ट कर केवलज्ञान केवलदर्शन प्राप्त कर लिया।

उस समय एक विषधर निकला। चारों ओर अंधकार था, तथापि मृगावती ने केवलज्ञान के प्रकाश से उसे देखा, वह चन्दनबाला के हाथ के पास आया, तब मृगावती ने चन्दनबाला का हाथ ऊपर उठाया। हाथ उठाते ही चन्दनबाला की नींद जागी, कारण पूछा—मृगावती ने सर्प की बात बताई। चन्दनबाला ने पूछा—किससे जाना ?

मृगावती—ज्ञान से।

क्या वह ज्ञान प्रतिपाति है या अप्रतिपाति ? चन्दनबाला नें जिज्ञासा प्रस्तुत की।

अप्रतिपाति है—मृगावती ने कहा—

यह सुनते ही चन्दनबाला ने मृगावती से क्षमायाचना की। उपालंभ देने के सम्बन्ध में मन में विचार करने लगी; परिणामों की विशुद्धता से उसी क्षण कर्मों को नष्ट किये, सर्वज्ञ सर्वदर्शी बन गई।

●

[त